भ्रम्म सास्त्र विरत्त [1]मंचति कबी बरदाय गुर सिद्धयौ ॥
केदाराय सु भट्ट किंन चरितं हिंदवान साषी बरं ॥
जै द्रुग्गा बरदान देवि मुषयौ तर्कं बरं भासितं ॥ छं० ॥ १०० ॥

दुर्गा केदार का अन्यान्य कलाएं करना और चन्द का उत्तर देना।

चौपाई ॥ कला बहुरि द्रुग्गा बहु किन्नी। पुच काटि सिर जू जू दिन्नी ॥
धर धावै सिर पढ़ै सु छंदं। इसौ दिष्षि अड्डौ भय चंदं ॥
छं० ॥ १०१ ॥

दूहा ॥ बर प्रसन्न द्रुग्गा कियौ। विविध चरित्र विचार ॥
ए सुजानि [2]नर बीर गति। बहु बंधाना भार ॥ छं० ॥ १०२ ॥

देवी का वचन कि मैं कविचंद के कंठ में सम्पूर्ण कलाओं से विराजती हूं।

अरिल्ल ॥ मात कहै सुनि चंदर भासं। एक दिना ठाढ़ी पित पासं ॥
पाप तात कौ संग्यौ पंठ। हुं तब छंडि [3]बसी तो कंठ ॥
छं० ॥ १०३ ॥

अनि कवि कंठ बसी परिमानं। कला पाव कै अड्डी जानं॥
तो में बसी सबै गुन लीनी। [4]दुती देह नह जानै भौनी॥छं०॥१०४॥

अन्तरिक्ष में शब्द होना कि कविचंद जीता।

झाई सी बोलिय घट मांही। चंद जीभ बोल्यौ गहराही ॥
षिझ्यौ सुन द्रुग्ग केदारं। अंतरिष्य बोल्यौ गुन हारं ॥छं०॥१०५॥

दुर्गा केदार का हार मान कर राजा को प्रणाम करना और राजा तथा सब सामंतों का दुर्गा केदार की प्रशंसा करना।

(१) ए. कृ. को.-मतृति। (२) ए. कृ. को.-वर।
(३) मो.-नसी। (४) मो..दुनी।

दूहा ॥ हारि बोलि उर सकल बर। गयौ पास प्रथिराज ॥
सकल सूर आचिज भयौ। विधि विधान विधि साज ॥ छं० ॥१०६॥

कवित्त ॥ विधि विधान विधि साज। हारि अंतरिष बुलिय बर ॥
कहिय अप्प प्रथिराज। कला केदार करिय गुर ॥
युति जंपै दनु देव। नाग जंपैति असुर नर ॥
सकल सूर सामंत। कित्ति जंपैति कित्ति कर ॥
सिर कट्टि पुच माया विभग। छंद बंध मुष उच्चरै ॥
सामंत सकल सेना सुबर। जै जै जै बानी करै ॥ छं० ॥ १०७ ॥

सरस्वती का ध्यान।

साटक ॥ सेतं चीर सरीर नीर सुचितं स्वेतं सुभं निर्मलं ॥
स्वेतं संति सुभाव स्वेत ससितं हंसा रसा आसनं ॥
बाला जा गुन दृद्धि मौर सु भ्रितं त्रिभे सुभं भासितं ॥
लंबी जा चिहु राय चंद्र वदनी दुर्गं नमो निश्चितं ॥ छं० ॥१०८॥

सरस्वती देवी की स्तुति।

भुजंगी ॥ सधी सद्धियं बीर बीरं प्रमानं। हँसी देषि मातंग मातंग न्यायं ॥
करै मुक्ति कौ काज सब्बैति देवं। तहां मुक्ति कौ तत्त आवै सु भेवं ॥
छं० ॥ १०९ ॥

करै रिद्धि कौ काज सब्बै बिहंसं। तहां सिद्ध आवै न सेवे वरंसं ॥
करै रिद्ध कौ पास गब्बै सछंडै। तहां रिद्धि आवै न पासै विषंडै ॥
छं० ॥ ११० ॥

इतं बात जानै न तो बाद जीतं। ननं सस्त्र बीरं मनं बीर रीतं ॥
जरी सस्त्र सों जंच जालंधरानी। सबै तेज मातंग तूही समानी ॥
छं० ॥ १११ ॥

कवित्त ॥ तू माया तूं मोह। मोह तत भेदन तूंही ॥
तूं जिह्वा मोयान। तूंब गुन में गुन भोंई ॥
तो बिन एक न होय। एक पच्छै कवि राजं ॥
मंच सुनै सह बद्ध। लष्य लष्यन सिरताजं ॥

तजि मोह बीर बंछै सु कबि। तत्त भेद नन अंग तिहि॥
मो समरि मं डोलै नहीं। उभय आस छंडै जु कहि॥छं०॥ ११२॥

देवी का वचन।

दूहा॥ सु कवि सों सरसति कहै। मो तो अंतर नाहि॥
सूर तेज कोइ हो कहै। ससि अस अम्रत छांह॥ छं०॥ ११३॥
लीलावती॥ हहं तूं हहं तूं नहं तूं नहं तूं। ननंहु ननंहु ननंहु तु नांही॥
भयं तो भयं तो महंतो महंतो। कथं तूं कथं तूं ननं हूं ननं हूं॥
॥ छं॥ ११४॥
गुनं तो गुनं तो हुं जंची हुं जंची। तु जंचं तु जंचं कयंती पढ़ंती॥
कथंती कथंती न्रतंती न्रतंती। भ्रमंती भ्रमंती नतंती नतंती॥
छं०॥ ११५॥
भ्रमे जेमवंती जमंती जमंती। .... ॥ छं०॥ ११६॥
कवित्त॥ पय दष्षन कर उंच। मुष्ष बोले तूं है बर॥
कहै सु बर प्रथिराज। बत्त जंपै सु क्रंम गुर॥
ब्रह्म विष्णु उप्पनौ। ब्रह्म देवी जुग जन्ना॥
सूर बंस न्रप आदि। चंद बंसी नर दुन्ना॥
रचि बालय ब्रन्नन तेज बन। किय जमुन्न जगि सुमन किय॥
उच्चर्‌यौ संत सत्ता सु गति। मति प्रमान जंपैति सिय॥छं०॥११७॥

दुर्गा केदार का कवि को पुनः प्रचारना।

दूहा॥ पाषंड न जित्या अमर। सिला दिष्ट बंध कीन॥
अब जानै बरदाय पन। उमया उत्तर दीन॥ छं०॥ ११८॥
जु कछु कहै कविचंद सो। [1]करै बनै कवि सोय॥
जु कछु बत्त तुमसों कहों। सो उतर द्यौ मोय॥ छं०॥ ११९॥
जो पाषान सु पुत्तरी। अस्तुति करै जु आय॥
जो उमया सेंमुष कहै। तो सांचो बरदाय॥ छं०॥ १२०॥

कविचन्द का वचन।

जासों तू पाषंड कह। सो रचि मोहि दिषाउ॥
हो नंषों बर मुंदरी। तूं कर कढ्ढि सु ताउ॥ छं०॥ १२१॥

(१) ए. कृ. को.: फरै बनें सब कोइ।

एक संधि वै बरनवों। इक चद द्व्नौं भट्ट ॥
दो बर साषि उमा कहै। अंतर मझ्झ सु घट्ट ॥ छं० ॥ १२२ ॥

घट के भीतर से लालो प्रगट होकर देवी का कविचन्द को आस्वासन देना।

कवित्त ॥ सुनि सैसब बिछुरत्त। बाल किय अमर अरुन द्रिग ॥
बाल जगावन काज। रह्यौ [1]पिलदार जानि ढिग ॥
छीनरु उन्नित बढ़ै। घटै करकादि मकर जिम ॥
कामसाल गति पद्धति। चिंति उतरादि सूर भ्रम ॥
इच्छइ जु अंछि बंके करन। संका [2]लज्ज बसंकरी ॥
ग्रह ग्रहन फिरत बल दिष्षिए। श्रवन कथा रसनन चरी ॥
छं० ॥ १२३ ॥

गज निसि अंकुस चंद। कन्न तारक्क विहीनी ॥
कै प्राची दिसि चिया। बिंद कै कंद्र हीनी ॥
कै कुंचिक शृंगार। काम द्रप्पत बर लोभै ॥
गाहनि काननि [3]ग्रनी। सिंघ नष गज सुष सोभै ॥
मनमथ्थ भुवन सोभै सुकवि। नष पच्छिम दिसि बधुअ सुष ॥
मनमथ्थ धजा मनमथ्थ रथ। चक्क एक एक हति रुष ॥
छं० ॥ १२४ ॥

रोला ॥ घट मंझै कविचंद। कवित उभया सुनि सुन्नी ॥
अति रिझ्झय बरदाय। सुरंग यासों सर धुन्नी ॥ छं० ॥ १२५ ॥
*चान्द्रायना ॥ विजै है मति राज। उकत्ति जो बहु धन्यौ।
मोहि चंद बरदाय। सु अंतर मति कन्यो ॥ छं० ॥ १२६ ॥
चौपाई ॥ सो विन अक्षर एक न होई। घट घट अंतर कव्विन जोई ॥
तुम बहु जुगति द्रुगति कवि आनौ। मो कविचंद न अंतर जानौ ॥
छं० ॥ १२७ ॥

(१) मो.-पिलवार। (२) ए. कृ. को.-लंक। (३) ए. कृ. को.-गनी।
* चारों मूल प्रतियों में रोला छन्द को चौपाई करके लिखा है इस चांद्रायन का नाम ही नहीं दिया है।

चन्द कृत देवी की स्तुति ।

भुजंगी ॥ तुंही ए तुंही ए तुंही तुं जुगंतं । तुंही देव देवा [1]सुरेतं समंतं ॥
मरालंति बालं अलिं सास ओरै । कियं कै सभुकं उगस्सं विढोरै ॥
छं० ॥ १२८ ॥

लिलाटं न चंदं विराजै कला की । प्रभातं तइंदं बंदै लोय जाकी ॥
रुरें रत्त सोभै बरन्ने सु चंदं । धसे गंग हेमं भुले माहि इंदं ॥
छं० ॥ १२९ ॥

पढ़ै तुंमरं ताहि पावै न पारं । दियो चंद कब्बी हयं जा हुंकारं ॥
छं० ॥ १३० ॥

पुनः दुर्गा केदार का अपनी कलाएँ प्रगट करना और कविचन्द का उन्हें खण्डन करना ।

पद्धरी ॥ केदार बत्त तब जंपि एह । दिष्षाउं तोहि बरसाय मेह ॥
प्रथमं सु पवन तब बज्जि जोर । गज्जीय गगन घन गरजि सोर ॥
छं० ॥ १३१ ॥

नभ छाइ स्याम बद्दल विसाल । भइ अंध धुंध जनु हुअ निसाल ॥
तरकंत तड़ित चिहुं ओर जोर । लग्गे सु करन कल मोर सोर ॥
छं० ॥ १३२ ॥

झम झमक बूंद बरसन्न लाग । इह चरित मंडि केदार बाग ॥
आचिज्ज हुअ [3]स[2] सभा एह । दिष्षय बसंत कविचंद तेह ॥
छं० ॥ १३३ ॥

आघात बात चलि फारि मेह । न्त्रिम्मलिय नभ्भ रबि तयन छेह ॥
हुअ अंब मौर फुल्लिगपलास । द्रुम सघन फुल्लि पंषिन हुलास ॥
छं० ॥ १३४ ॥

भमि भंग जुथ्थ गुंजार भार । कलयंठ कुहुकि द्रुम बैठि डार ॥
[5]सभ सकल मोहि रहि इन सु छंद । किन्नी अभूत बत्तह सु [4]चंद ॥
छं० ॥ १३५ ॥

(१) ए. कृ. को.-अधारं । (२) ए. कृ. को.-सभ सकल ।
(३) ए. कृ. को.-सम । (४) ए. कृ. को.-छंद ।

जे जेय विद्य देषी केदार। ते तेय चंद देषिय [1]विथार ॥
बैठक सु राज सिल एक तथ्य। दिष्षिय सु चंद उच्चरिय कथ्य ॥
छं० ॥ १३६ ॥

सुनि बत्त अहो द्रुग्गा केदार। प्रगटौ [2]सु विद्य जौ अग्र सार ॥
गुन पढ़ौ याहि अग्गें सु छंद। हुअ उपल गलित तो विद्यवंत ॥
छं० ॥ १३७ ॥

चिंत्तिय सु चिंत्त बरदाय देव। मन बच्च क्रम्म आचिंति तेव ॥
लगि पढ़न चंद देवी चरित्त। वर बानि ग्यान सद्यौ सु मंत ॥
छं० ॥ १३८ ॥

कुहलाय उपल हलहलिय अंग। झलमलगि जानि पारद सुरंग॥
भिद्यौ सु वज्र गिरि पंक जानि। मुद्रकिय नंषि कवि मध्य थान ॥
छं० ॥ १३९ ॥

डुब्बी स मध्य मुद्रिक अभिंदु। भयौ बज्र वान [3]सरिवरि कबिंद ॥
कविचंद कहै बर बदौं तोहि। अप्पै जौ काढ़ि मुद्रिय सु मोहि ॥
छं० ॥ १४० ॥

लग्यौ जु पढ़न केदार बानि। बर भास छंद अन्नेक आनि ॥
भेदै न उपल कछु अंग ताहि। थक्यौ अनंत करि करि उपाय ॥
छं० ॥ १४१ ॥

फिरि लग्यौ पढ़न कविचंद मंत। किल किलकि मध्य देवी हसंत॥
अन्नेक बीज मंत्रह उचार। पढ़ै सु बानि कविचंद सार ॥
छं० ॥ १४२ ॥

फिरि भयौ गरित गिरिवर सु अंग। कढ्ढिग सु चंद मुद्रीय नंग ॥
*लग्यौ सु पाय केदार तब्ब। सम तोहि दिषि न त्रिभुवन्न कब्ब ॥
छं० ॥ १४३ ॥

कविचंद प्रसंसिय ताम भट्ट। बर विमल तुंही बानी सु घट्ट ॥छं०॥१४४॥

कवित्त ॥ लज्जि बीर केदार। बाद मंड्यौ मरनं चित ॥
सुबर [4]कट्ट पुत्तरी। देहि उत्तर सजीव हित ॥

(१) ए. कृ. को.-चिथार। (२) ए.-जु। (३) ए. कृ. को.-सवरी।
(४) ए. कृ. को.-कष्ट।
* ये अन्तिम दो पंक्तियां मो-प्रति में नहीं हैं।

तब चंद बंदि आराधि। घट्ट जल बंधि उड़ायौ॥
गंग हेत बरदाइ। बरनि नौ रस्स पढ़ायौ॥
द्रुग्गा केदार घट भंजि कै। कर अंतर भ्रमंत करि॥
थिरयौ न सुजल अंतर रह्यौ। सो ओपम कविचंद हरि॥छं०॥१४५॥

दूहा॥ नीर भ्रमं तजि पिष्षियै। घट पष्षै कविचंद॥
मानौ [१]किरनि पतंग की। षेलत पारस मंडि॥ छं०॥ १४६॥

चौपाई॥ एह चरित्त चंद कवि दिष्षिय। भला भला ऐसा तुम अष्षिय॥
चंद सूर दोऊ करि सष्षिय। बाद विवाद परस पर रष्षिय॥
छं०॥ १४७॥

कवित्त॥ पढ़त मंच बरदाय। चल्यौ पाषान सुरंग कल॥
घट बद्दै रिति कलिय। दिद्ध आसीस हय सु बल॥
बर सुंदरि कढ़ि नंषि। और आरंभ सु किन्नौ॥
जंच मंच बहु जुगति। मंगि फिर बोल सु दिन्नौ॥
ठठुक्यौ सु दुर्गा केदार बर। द्वेव विष्ट नंषे सुमन॥
जीत्यौ न कोय हार्‍यौ न को। सुनिय कथ्य प्रथिराज उन॥
छं०॥ १४८॥

अन्त में दोनों का बाद बराबर होना।

दूहा॥ बाद बिबादन बीर [२]कबि। सत्ति सुभाव सुधीर॥
द्रुग्ग मत्ति तौ संचरी। जौ चंद बयट्ठौ नीर॥ छं०॥ १४९॥

दोनों कवियों की प्रशंसा।

नीसानी॥ पुब्ब राह पढ़मष्षरां हिंदू तुरकाना।
दोई राज सु दीन दो गोरी चहुआना॥
दोई सास्त्र विचार दो कौरान पुराना।
इल उप्पर त्यों भट्ट दो ज्यों राति विहाना॥ छं०॥ १५०॥
इक्कै पुच विवड कर इक नीर पषानां।
दोई राजन मंनिया सामंत सवानां॥ छं०॥ १५१॥

(१) ए. कृ. को.-विराति। (२) मो.-कोइ।

पृथ्वीराज का दुर्गा केदार को पांच दिन मेहमान रख कर बहुत सा धन द्रव्य देकर बिदा करना।

कवित्त॥ बाद बीर संबाद। [1]रहै मन मझ्झ मनोरथ॥
[2]कोप छाह सिंधु तरँग। लग्गौ कि बान पथ॥
संझ परत प्रथिराज। रहै ऐसै मन धारिय॥
बहुत बाद उचार। चंद जीतौ गुन चारिय॥
न्रप दीन भट्ट दिष्यौ बदन। सो दिन सरसत्तिय बिरस॥
अप्पयौ दान उचित सु क्रति। सु कवि दिष्षि तायें सरस॥
छं०॥ १५२॥

रष्षि पंच दिन राज। चंद आदर बहु दिन्नौ॥
भोजन भाव भगत्ति। प्रीति महिमान सु किन्नौ॥
गैंवर सज्जिय तीस। तुंग साकति सिंगारिय॥
तरल तुरँग सजि बेग। सत्त दिय परिकर सारिय॥
कोटेक द्रव्य दीनौ न्रपति। अवर गिनै को विविध वरि॥
सामंत सब्ब दिनो सु दुत। कवि सु प्रसंसित कित्ति करि॥
छं०॥ १५३॥

दूहा॥ हैवर सत गज तीस सुभ। मोती माल सु रंग॥
लाल माल उभ्भय करुन। दै राजन रस रंग॥ छं०॥ १५४॥

स्लोक॥ यावच्चंद्रो दिवानाथ। यावत् गंगा तरंगयोः॥
तावत् [3]पुच प्रपौचस्य। दुर्गा ग्रामं [4]विलोकयेत्॥ छं०॥ १५५॥

कवित्त॥ बर समोधि न्रप भट्ट। रोस छिम्माय प्रमोध्यौ॥
तापच्छैं कविचंद। भट्ट गुन करि गुन सोध्यौ॥
प्रसन बीर प्रथिराज। लच्छि चतुरंग सु अप्पी॥
इंद्रप्रस्थ वै थान। ग्राम दस अघटह अप्पी॥

(१) ए. कृ. को.-रहेन।
(२) ए. कृ. को.-कूय छांह।
(३) ए. कृ. को.-पौत्रस्य।
(४) ए. कृ. को.-विलोकयत्।

*

आजन्म जन्म दारिद्र कपि। भट्ट भारह सरद करिय॥
आदर अदब पहुंचाय करि। सब प्रसंस परसाद किय॥
छं०॥ १५६॥

दुर्गा केदार कवि का राजा को आशीर्वाद देकर विदा होना।

प्रथीराज चहुआन। दान गुन जान पग्ग धर॥
अवलोकत से दून। पंच से देइ बाच बर॥
जानि समप्पै सहस। सहस वत्तह जौ दिज्जै॥
बर विद्या रंजवै। तास दारिद्र न छिज्जै॥
सोमेस सुअन सब जान गुन। दानह अंकन वालियौ॥
केदार कहै सब कुसल कल। कवि लहु सुत परि पालियौ॥
छं०॥ १५७॥

दूहा॥ चल्यौ भट्ट केदार जब। दिय प्रथिराज असीस॥
करि सुभाव सामंत सब। उठि रुचि नायौ सीस॥ छं०॥ १५८॥

कवि की उक्ति।

पिथ्थ बलिय चहुआन पें। बामान ह्वै कवि आय॥
[1]लिये दान केदार कह। फुनि ब्रह्मंड नमाय॥ छं०॥ १५९॥

कवि का शहाबुद्दीन से रास्ते में मिलना।

चल्यौ भट्ट गज्जन पुरह। मझ्झ रह मिल्यौ सहाब॥
लिये सथ्थ घन सेन बर। हय गय [2]तथ्थ तहाव॥ छं०॥ १६०॥

गजनी के गुप्तचर का धम्मायन के पत्र समेत सब समाचार शाह को देना।

* इस छन्द में "चल्लावनि सामंत सूर सब सेना थप्पी" यह पंक्ति चारों प्रतियों में अधिक है। कहीं कहीं कवि ने इसी कवित्त छन्द को ८ पंक्ति का मान कर "डोढ़े" के नाम से लिखा है परन्तु यहां पर न तो इसके जोड़ की दूसरी पंक्ति है न इसका पाठक्रम समयोचित है इस लिये हमने इस पंक्ति को मूल छन्द से बिलकुल निकाल कर अलग पाठान्तर में लिखा है।

(१) ए. कृ. को.-पाये। (२) मो.-सथ्थ।

कवित्त ॥ सोइ ग्राम सोइ ठाम। मान अप्पौ चहुआनं ॥
आदर सादर समुह। भट्ट गोरी सुरतानं ॥
ताहि सथ्थ बर दूत। रहै ऐसें परिमानं ॥
जल महि ज्यों गति जोक। भेद कोई नन जानं ॥
मुक्कयो बाद बद्दे सु कवि। गए पास सुरतान चर ॥
आघात साहि गोरी सुबर। आषेटक चहुआन धर ॥ छं०॥१६१॥
अई सथ्थ चहुआन। राज आषेटक षिल्लै ॥
हय हथ्थी बर साज। सबै जुग्गिनिपुर मिल्लै ॥
अप्पानो अपजोग। पुच्छि तत्तार प्रमानं ॥
कही सु दूतय बत्त। तत्त जंगली निधानं ॥
निय भट्ट बाद हार्‍यौ सु 'निय। कछु कछु तत जंपे सगुर ॥
छम्मान बोर कग्गद लिष। करो साहि सो सत्ति धुर ॥छं०॥१६२॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई करना।

सुनिय बत्त साहाब। बंचि कग्गर ततार बर ॥
अति आनंदिय चित्त। करिय अति धंष राज धर ॥
कियौ निसानन घाव। धाक दस दिसि धर फट्टिय ॥
मिले षान अगिवान। चढ़न साहाब सु रट्टिय ॥
दस कोस साहि बर उत्तरिय। सरित तट्ट मुक्काम किय ॥
रग रत्त पीत डेरा बने। हय गय मीर गँभीर जिय ॥छं०॥१६३॥

तत्तार खां का फौज में हुक्म सुनाना।

दूहा॥ बोलि परिग्गह स्हूर सब। पुच्छे सकल जिहान ॥
षां पुरसान सु बोलि बर। बर बंध्यौ चहुआन ॥ छं० ॥१६४॥
कवित्त ॥ कहै षान पुरसान। साहि गोरीं परिमानं ॥
बर संभरि चहुआन। दूत भेज्यौ बनि दानं ॥
लहुति लोह लोहार। पग्ग पुरसान षटक्कै ॥
सुनत दूत बर बेन। साह सज्यौति सटक्कै ॥

चहुआन सेन सायर मथन। गहन मान पुब्बा कळ्यौ ॥
चतुरंग सज्जि बाजिच सुर। करि गोरी आतुर चळ्यौ ॥छं०॥१६५॥

यवन सरदारों का शाह के सम्मुख प्रतिज्ञा करना।

षा षुरसान ततार। साहि सम्हें कर जोरिय ॥
आन दीन सु विहान। एन चहुआन विछोरिय ॥
हसहि मीर कहि धीर। मीर रोजा रंजानहि ॥
पंच निवाज विकाज। 'जाइ गोरी गुम्मानहि ॥
इन बेर साहि सुरतान बर। करै दीन बत्ता सु गुर ॥
भर सूर सधै बंधै न्टपति। कै जीवत गड्डै सुधर ॥ छं० ॥ १६६ ॥

दूहा ॥ छय मुसाफ सुरतान अग। उंच उंच बंधि तेग ॥
सुबर साहि साहाब सुनि। करै दीन उच वेग ॥ छं० ॥ १६७ ॥
सौगँध मानि साहाब षरि। ढिल्लीवै चहुआन ॥
राति दीह सल्लै सुबर। पुब्ब बैर सुरतान ॥ छं० ॥ १६८ ॥

शहाबुद्दीन की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ साहि आलम असंभ। उप्पज्यौ जानि सायरन अंभ ॥
जल थल थलं न 'जल होत दीस। उन्नयौ मेछ बर बैर रीस॥
छं० ॥ १६९ ॥
बज्जहि निसान धुंनित विसाल। हालंत नेज सुरतान हाल ॥
बारुनि बहंत मदगंध बुंद। मानो कि कूट चलि सत रविंद
छं० ॥ १७० ॥
सज्यौति सेन सुरतान बीर। बढ़ि तेज तुंग जानै गंभीर ॥
सम्हौ सु भट्ट मिलि आय राज। अति क्रूर तेज आहत्त साज॥
छं० ॥ १७१ ॥
सुरतान कहै हो दिल्लि राज। आयौ सु दौरि निय सुनि अवाज ॥
तब दूत कहै साहाब बाचि। आपौ सु भट्ट चहुआन जाचि ॥
छं० ॥ १७२ ॥

(१) ए. जोइ। (२) ए. कृ.-को.-मिल।

चहुआन सत्त हय दीय उच्च। सामंत अवर समदिय सरुच ॥
गज तीस अप्पि ग्रामह दुसष्य। अप्पिय सु हेम राजन विलष्य ॥
छं० ॥ १७३ ॥

[1]अनि द्रव्य कोट दीनौ सु भाइ। सामंत सब्ब रुचि सीस नाइ ॥
संभरिय बत्त सुरतान बीर। धारेव उअर मझ्झे गँभीर ॥
छं० ॥ १७४ ॥

अग्गें सु बंधि निसुरत्ति षान। दस पंच हथ्थ उत सुव्हिहान ॥
पारस्स साहि लक्करिय लाल। मानो कि सुभ्भि परवाल माल ॥
छं० ॥ १७५ ॥

दूहा ॥ सुबर साहि बंचिय निजरि। बर चल्लिय अगिवान ॥
यों पहुंच्यौ असपत्ति गनि। देस दिसा चहुआन ॥ छं० ॥ १७६ ॥

शहाबुद्दीन का सोनिंगपुर में डेरा डालना और वहां पर दुर्गा केदार का उससे मिलना और दूतों का भी आकर समाचार देना।

उतरि साह सोनंग पुर। दिसि दष्षिन बर थान ॥
किय डेरा केदार तब। मीर महुब्बति षान ॥ छं० ॥ १७७ ॥

अरिल्ल ॥ निमां [2]साम बज्जिय नौबत्तिय। किय निमाज उमरावन तत्तिय ॥
सज्जि महल साहाब बयट्ठौ। आयौ महल [3]उम्मरां जिट्ठौ ॥
छं० ॥ १७८ ॥

आय महल दुग्गां केदारह। दीन असीस बिविधि विचारह ॥
मिलि सहाब सादर सम्मानिय। पुच्छिय कुसल विविध कल बानिय ॥
छं० ॥ १७९ ॥

दूहा ॥ पुच्छि कुसल आसन्न दिय। सम द्रुग्गा केदार ॥
तन बिभूत जट सिंग रुग। आए दूत सुच्यार ॥ छं० ॥ १८० ॥

दिय दुवाह तिन चरच बस। काइम साहि सहाब ॥

(१) ए. कृ. कों.-"अति द्रव्य कोर दीनौ सु भाइ"।
(२) मो.-साव। (३) मो.-उमराव।

[1]अग्र बोलि गोरी गरुअ। तब अति दिष्यौ [2]आब ॥ छं० ॥ १८१ ॥

शहाबुद्दीन का कवि से पृथ्वीराज का समाचार पूछना और कवि का यथा विधि सब हाल कह सुनाना।

गाथा ॥ आयस दिय लिय अग्गं। पुच्छिय षबरि विवरि चहुआनं ॥
अरु सामंत सु धीरं। पुछियं प्रीति रीति साहावं ॥ छं० ॥ १८२ ॥

अरिल्ल ॥ बषत बड़े सुरतान मानि मन। बंधौ गास पंग प्रथि मंतन ॥
हनिय अप्प कैमास मंच बर। भए चलचित सामंत सूर भर ॥
छं० ॥ १८३ ॥

भरि बेरी चामंड सु बीरं। चमकि चित्त सामंत सधीरं ॥
भयौ पीन चहुआन मंचि दुष। गय पिपास निद्रारु षुधा सुष ॥
छं० ॥ १८४ ॥

चढ़ि आषेटक तुच्छ सेन सजि। सथ्थ सूर सामंत चिंति रजि ॥
क्रीड़त देस मद्धि पंचानह। कंपै असि अरि मत्त पयानह ॥
छं० ॥ १८५ ॥

भरि भंगान पुंडि मौना धर। गोरा भरा भज्जियं तज्जिर ॥
सहस तीस सब सेन समथ्थह। आए भए रोज दस तथ्थह ॥
छं० ॥ १८६ ॥

रोज तीस मुकाम यथ्थौ यह। उतर्यौ आनि मद्धि जलपंथह ॥
बषत समथ साहि साहाब सुनि। चढ़ि अरि गंजि मंजि मद्दरनि रन॥
छं० ॥ १८७ ॥

सुलतान का मुसाहिबों से सलाह करके सेना सहित आगे कूच करना।

दूहा ॥ सुनिय बत्त साहाब चर। दिय निरिघाव निसान ॥
अप्प षान मौरं वरा। कह्यो सजन सब्बान ॥ छं० ॥ १८८ ॥
कह्यौ षान षुरसान सम। षा तत्तार निसुरत्ति ॥
कह्यौ सुचर सुनियै सबै। जुरन याह घर घत्ति ॥ छं० ॥ १८९ ॥

(१) ए. कृ. को.-अग वोले। (२) ए.-आव।

अरिल्ल ॥ कीय बत्त षुरसान ततारह । आयस आन दीन सेला रह ॥
गय अंदर सयनह सुरतानह । कूच कूच भय सेन सवानह ॥
छं० ॥ १९० ॥

दुर्गा केदार के पिता का दुर्गा केदार को समझाना और धिक्कारना।

दूहा ॥ अप्प अप्पयह उम्मरा । आए सज्जित सब्ब ॥
चमकि चंड केदार मन । आयौ तात [1]सु तब्ब ॥ छं० ॥ १९१ ॥
सुनिय बत्त कबि बिबिध बर । पति आषेटक साज ॥
सोमेसर सुअ जुद्द थिर । सलिल [2]लज्ज सिंधु पाज ॥ छं० ॥ १९२ ॥
द्रुग्ग मत्ति सुत सौं कहिय । तुम जानहु चहुआन ॥
पहिली भट अपराध बहु । माधव कियौ विनान ॥ छं० ॥ १९३ ॥

कवित्त ॥ बल मोगर मेवात । राज सुत्तौ परिमानं ॥
माधौ पच्छैं भट्ट । राज बैसास न आनं ॥
करौ बत्त न्नप हित्त । कपट दिष्षौ सुरतानं ॥
जाहु पास प्रथिराज । षबरि अप्पौ सु निदानं ॥
धनि ध्रम्म बंध संभरि न्नपति । निगम मोह संम्हौ मिलिय ॥
उज्जेंन राज श्रीफल उदित । दे कग्गद संम्हौ चलिय ॥
छं० ॥ १९४ ॥

दुर्गा केदार के भाई का पृथ्वीराज के पास रवाना होना।

दूहा ॥ लघु बंधव कविदास तिन । दरक चढ़ाइय सु बेग ॥
जाहु सु पानी पंथ तुम । करहि नरह उद्देग ॥ छं० ॥ १९५ ॥

कवि का पृथ्वीराज प्रति संदेसा।

कुंडलिया ॥ दिष्ष फौज सुरतान की । बंधव मोकलि भट्ट ॥
तुम उप्पर गोरी सुबर । है गै सज्जे थट्ट ॥
है गै सज्जे थट्ट । सज्जि आयौ सुरतानं ॥
तिरि भर जल गंभीर । भीर सज्जे बहु पानं ॥

(१) मो.-सुन ।　　(२) मो.-लाज ।

तीस लष्य में साहि। [1]थट्ट तारे दस दष्षे ॥
तिन में पंच सु लष्य। लष्य में लष्य सु दिष्षे ॥ छं० ॥ १९६ ॥

कवित्त ॥ सौर फिरस्ते टारि। दब्ब मार्‍यौ सिंधु तट्टं ॥
सिंधु विहथ्थं बीच। साइ पुल बंधन घट्टं ॥
छुय मुसाफ तत्तार। मरन केवल विचारे ॥
सज्जि साथ चहुआन। काल्हि उत्तरिहैं पारे ॥
उथ्परे डेर मुक्काम तजि। सेन काज [2]पुंटिय बजे ॥
नीसान हवाई मुंदरी। गज घंटानन डर सजे ॥ छं० ॥ १९७ ॥

दूहा ॥ जाय राज प्रथिराज पहि। विवरि षवरि सुरतान ॥
कहियो [3]बेगौ सेन सजि। आयौ पंथ चंपान ॥ छं० ॥ १९८ ॥

कविदास की होशयारी और फुर्ती का वर्णन।

कवित्त ॥ चल्यौ चंड कविदास। दमकि उठ्यौ दा सेरक ॥
मनुं वामन किय इक्क। क्रम्म चयलोक मने सक ॥
[4]कुसा तिष्य कर कढ्ढि। अग्र द्रिय वक्र निरष्षैं ॥
मनों कुलटानि कटाच्छ। मध्य गुर जन सम लष्षैं ॥
संचर्‍यौ एम संमीर बर। प्रोथ बात रोक्यौ प्रबल ॥
अध धर्‍यौ चक्र कर जेम हरि। मनुं जंबूर स छुट्टि कल ॥
छं० ॥ १९९ ॥

दास कवि का पानीपत पहुंचना और पृथ्वीराज से निज अभिप्राय सूचक शब्द कहना।

दूहा ॥ चल्यौ चंड कविदास तब। पहर एक निसि जंत ॥
अनल बेग हक्क्यौ दरक। आयौ पानी पंथ ॥ छं० ॥ २०० ॥

कवित्त ॥ उत्तम न्त्रिम्मल सु द्रह। पुलिन बर पंसु झीन सम ॥
करत राज जल केलि। सुमन कसमीर अगर जम ॥

(१) मो.-हथ्थ। (२) ए. कृ. को.-पुंटिय।
(३) ए. कृ. को.-बेगी। (४) ए.-कसा।

सथ्थ सूर सामंत। मत्त पेलत हड्डूअ ॥
.... । .... ॥
दिन सेष घरी सत्तरु दुअह। [1]हक्कि दरक मन वेग तहां ॥
कविदास आय तव जंपि न्नप। करौ सिलह सामंत सह ॥
छं० ॥ २०१ ॥

*दूहा ॥ मो दिष्षैं न्नप दिष्षियौ। गोरी साहि नरिंद ॥
हसम हयग्गह सज्जि कै। दल वद्दल वर इंद ॥ छं० ॥ २०२ ॥
साहबदी सुरतान अब। तुम पर साज्यौ सेन ॥
[2]मों देष्षैं देषौ न्नपति। घरी एक अप नेन ॥ छं० ॥ २०३ ॥

कवि के बचन सुनकर राजा का सामंतों को सचेत करना और कन्ह का उसी समय युद्ध के लिये प्रबन्ध करना।

वृत्तभ्रमरावली ॥ सुनियं तव राजन चंड तनं [3]वयनं।
तव जग्गिय वीरह धीर तनं नयनं ॥
तव सद्दिय सव्वह एक किए अयनं।
सब सामंत सूरह सीस सजे गयनं ॥ छं० ॥ २०४ ॥
पहु आवरि वीरह अप्प तनं तयनं।
मुष रत्तह व्यंबह श्रोन समं नयनं ॥
भिरि मुच्छह भौंहह भौंह समं षयनं।
सब आवध सज्जिय श्वत्तह जे हयनं ॥ छं० ॥ २०५ ॥

कवित्त ॥ तव सज्जि सेन प्रथिराज। मंत सब सामँत पुच्छिय ॥
हय अरोहि धुज जुरहि। काय [4]पथ होइ सुमत्तिय ॥
कहिय कन्ह चौहान। सु थल या अग्गें वेहर ॥
पुट्ठि सुने दिसि बाम। पूर जल किन्न सु केहरि ॥
मंडियैं जुद्ध हय छंडि सब। इक्क भाग रष्यौ चक्यौ ॥
मंनी सु बत्त सामंत न्नप। भल भल सब सेना पक्यौ ॥ छं० ॥ २०६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-हक्कि। *यह दोहा मो.-प्रति में नहीं है।
(२) ए. कृ. को.-मैं। (३) ए. कृ. को.-वनयं। (४) ए. कृ. को.-पथ।

चहुआन सेना की सजाई और व्यूह रचना।

भुजंगी ॥ सथं सज्जियं व्यूह प्रथिराज राजं। सुरं बीर रस उंच वाजिच वाजं॥
भरं मंडलं मंडियं मंडि अग्गी। [1]रसं सूर सामंत सा सूर मग्गी॥
छं० ॥ २०७ ॥

भरं सहस बा बीस हय छंडि बीरं। तिनं रच्चियं व्यूह जल जात धीरं॥
नरं कन्ह चौहान गोयंद राजं। भरं जैत पर सिंघ बलिभद्र साजं॥
छं० ॥ २०८ ॥

बडं गुज्जरं दून हड्डा हमीरं। रचे अट्ठ सामंत वा पच भीरं॥
बरं बग्गरी देव पज्जून राजं। सुतं नाहरं सिंह परिहार साजं॥
छं० ॥ २०९ ॥

भए च्यार सामंत सो कर्णि कारं। बियं सब्ब धीरं परागं सु ढारं॥
भयो नारि पम्मारि जैतं समथ्थं। भयौ मध्य मेही प्रथीराज तथ्थं॥
छं० ॥ २१० ॥

भरं मध्य उद्दिग्ग बाई पगारं। तिनं मद्धि अट्ठो सु जामानि सारं॥
सजे मध्य चंदेल भौंहा सु धीरं। तिनं मद्ध लोहान सा बिंझ बीरं॥
छं० ॥ २११ ॥

चढ़े रष्षिनं दष्षिनं रा पहारं। सहस्सं च अट्ठं चढ़े सूर सारं॥
छं० ॥ २१२ ॥

शहाबुद्दीन का आ पहुंचना।

दूहा ॥ सज्जि सेन साहाब सुर। आयौ आतुर हंकि॥
दिष्षि रेन डंबर डहसि। भर चहुआन असंषि॥ छं० ॥ २१३ ॥
गंभीरां सुरतान दल। [2]अति उतंग वरजोर॥
मिले पुब्ब पच्छिमहु तें। चाहुआन चित घोर॥ छं० ॥ २१४ ॥

यवन सेना की व्यूह रचना।

कवित्त ॥ अनिय बंधि पतिसाह। जुद्ध जीपन चहुआनं॥
षां मुस्तफा दलेल। पुट्ठि रष्षे गिरवानं॥

(१) मो.-रसे। (२) ए. कृ. को.-आति।

सजे सेन चतुरंग । दंद दंती बनि घट्टा ॥
सुबर बीर सुरतान । बान [1]उन्नरि जल छुट्टा ॥
चहुआन सुन्यौ आचंभ चर । सिंधु उतरि संम्हौ मिल्यौ ॥
दोउ दीन आय आवरि सुभर । षग्ग कढ्ढि पग्गह षुल्यौ ॥
छं० ॥ २१५ ॥

यवन सेना का युद्धोत्साह और आतंक वर्णन ।

हनूफाल ॥ आयो सु सज्जि सहाब । [2]उल्लथ्यौ सायर आब ॥
द्वै लष्ष सारध एक । प्रति रची फौज विमेक ॥ छं० ॥ २१६ ॥
जति अनंत बज्जै बज्ज । गिरधरनि अंबर गज्जि ॥
भर सिलह बंधिय बीर । तजि आस जीवन धीर ॥ छं० ॥ २१७ ॥
सजि कसे आवध सब्ब । बर लज्ज देषिय [3]ग्रब्ब ॥
मद गज्ज अट्ठो अट्ठ । बर बेग राह सु घट्ठ ॥ छं० ॥ २१८ ॥
करि दौरि आयौ साहि । पंचास कोस [4]पहाहि ॥
बिच राज जोजन एक । विश्राम सज्जिय सेक ॥ छं० ॥ २१९ ॥
तहां सिलह है गै भार । परसंसि पीर भुझार ॥
उन्नमिय नेज उतंग । गनि आइ हवन रंग ॥ छं० ॥ २२० ॥
षुर षेह उड्डिय रेन । आकास मुंदिय तेन ॥
गहगही सह सु गाह । रन गहर पष्षर पाह ॥ छं० ॥ २२१ ॥
बानैति बानै साज । रस बीर धरिय सु गाज ॥
भय निजरि दूनिय सेन । भर भीर चिंतिय तेन ॥ छं० । २२२ ॥
बज्जंत रन रनतूर । निज ध्रम्म संभरि सूर ॥
जब देषि हिंदु उतारि । उच्चर्यौ षान ततार ॥ छं० ॥ २२३ ।

तत्तार का खां आधी फौज के साथ पसर करना, बादशाह का पुष्टि में रहना ।

दूहा ॥ कहि ततार साहाब सों । किय दल हिंदु उतार ॥
हम उत्तरियै मीर सब । तुंम रहौ पुट्ठि साधार ॥ छं० ॥ २२४ ॥

(१) मो.-उच्चरि । (२) ए. कृ. को.-उद्धर्यो ।
(३) ए. कृ. को.-पब्ब । (४) ए. कृ. को.-पहाड़ ।

कवित्त ॥ लष्य एक है छंडि । कियौ तत्तार उतारह ॥
अद्व लष्य दल चढ्यौ । रह्यौ सुरतान सुभारह ॥
मीर मसंद मसंद । अग्ग सज्जे भर सुभ्भरं ॥
कुल अरेह असीख । बोलि पित पिच नाम नर ॥
अग्गै सु भार हयनारि धरि । बानग्गौर बानैत तँह ॥
सजि सेन गरट चलि मंद गति । लग्गे बज्जन बीर रह ॥
छं० ॥ २२५ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर साम्हना होना।

दूहा ॥ बज्जे बज्जन लाग दल । उभै हंकि अगि बीर ॥
विकसे सूर सपूर बढ़ि । कंपि कलच अधीर ॥ छं० ॥ २२६ ॥

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं का घोर घमासान युद्ध वर्णन।

गीतामालची ॥ छुट्टियं हयनारि दुअ दल गोम व्योमह गज्जियं ॥
उड्डियं आतस झार झारह धोम धुंधर सज्जियं ॥
छुट्टियं बान कमान पानह छाह आयस रज्जियं ॥
निरषंत अच्छरि सूर सुब्बर सज्जि पारथ मज्जियं ॥ छं० ॥ २२७ ॥
सज्जे वि सुभ्भर देवि ईसर आय गंध्रव किन्नरं ॥
नारह नद्दह मंडि मद्दह द्रष्षि नंचि अचंभरं ॥
हिंदू स जंपिय राम रामह सांइ अग्या सद्दयं ॥
असुरेव जंपिय दीन दीनय [1]पीर मीर महम्मयं ॥ छं० ॥ २२८ ॥
मिलि फौज दूनह एक मेकह झार धारह बज्जियं ॥
हक्के दुसाइय अप्प अप्पह वाहि आवध गज्जियं ॥
तन तेग [2]तुट्टय सौस लुट्टय कमध नच्चय केभरं ॥
बहि श्रोन पूरह कल कल्लह किलकि जोगिनि जे सुरं ॥ छं० ॥ २२९ ॥
नच्चंत बीर बितालि तालिय घरहरंत सु सद्दयं ॥
नच्चंत ईसुर रज्जि भौसुर डमकि डौंरुअ नद्दयं ॥
रस रूक बाहै भाक धाहै झाक आवध ओझरं ॥

(१) मो.-पाठ नीर। (२) ए. कृ. को.-तुट्टहि, लुट्टहि।

असि पदापेलय सेल [1]मेलय सूर तुट्टहि सुभ्भरं ॥ छं० ॥ २३० ॥
परि सीस हक्कहि धर हहक्कहि अंत पाइ अलुभ्भरं ॥
उठि उट्टि कक्कसि केम उक्कसि सांइ सुथ्थल [2]जुभ्भरं ॥
एकेक चंपहि पीठ नंषहि धरनि धर परिपूरयं ॥
हकियं सु बेगं अलिय महमद करिय द्रग्ग करूरयं ॥ छं० ॥ २३१ ॥
सम चले गज्जह देषि रज्जह औह हनि हनि जंपियं ॥
आवंत दून मसंद राजह देषि चच्चर चंपियं ॥
हनि संग जरह प्रान पूरह दो कलेवर गोइयं ॥
बिह्वि राजह परे गाजह संगि एक परोइयं ॥ छं० ॥ २३२ ॥
रस रुद्र बीर भयाम मच्चिय काल नच्चिय नोदयं ॥
हक्कीय राज दुअप्प सुभ्भर बीर बीरह मोदयं ॥
हँकि सूर मंत गयन्न लग्गिय बाह चंपिय आवधं ॥
ढिलि असुर सयंन पिंड पंचह चंपि जंपिय मावधं ॥ छं० ॥ २३३ ॥
जामेक जुड अरुड लग्गिय बीर जंपिय बीरयं ॥
सिद्धीय सिद्धय संत रासह ग्रभ्र लोनह सीरयं ॥
.... ॥
.... ॥ छं० ॥ २३४ ॥

बरनी युद्ध वर्णन ।

कवित्त ॥ हय गय हय हय अरथ । रथ्थ नर नर सों लग्गा ॥
हय सों हय पायल सु । पाय करि सों करि भग्गा ॥
ईस आन बर चवै । सूर सूरन हक्कारिय ॥
मार धार झिल्लै । प्रहार बीरा रस धारिय ॥
घरि एक भयानक रुद्र हुअ । सीस माल गंठी सु कर ॥
कविचंद दंद दुअ दल भयौ । मुगति मग्ग षुल्ले बिदर ॥छं०॥२३५॥

लोहाना का फुर्तीलापन ।

साटक ॥ सीतं [3]गोप सरेत भीतय बरं नर जोति दिष्षी गुरं ॥
रंभं रंभ सुरथ्थयं च अम्रतं आलंब वाहं बरं ॥

(१) ए. कृ. को.-सेलहि । (२) ए. कृ. को.-जुध्थरं । (३) ए. कृ. को.-तोप ।

दिष्टी दिष्टि विभारथोवि सरसा भारथ्थ बिय बुड्डयं ॥
गोरी सा सुरतान रुक्कति तयं आजानबाहं बरं ॥ छं० ॥ २३६ ॥

लोहाना और पहाड़राय का शाह पर आक्रमण करना और यवन सेना का उन्हें रोकना।

दूहा ॥ लोहानो आजान वर। लोहा लंगरि राव ॥
कढ़ि लंबी तेग वर। साह सनंमुष धाव ॥ छं० ॥ २३७ ॥
सज्जि [1]सेन तूंअर सुभर। [2]वड्डिय हय चढ़ि षेत ॥
समुह साहि दिष्यौ सु द्रग। बंध्यौ बंधन नेत ॥ छं० ॥ २३८ ॥

नराच ॥ सु दिट्ठि दिष्षि फौजयं, पहार साहि सम्मयं।
चल्यौ सु राव सूर मंत, दिष्षि सम्म रम्मयं ॥
बचे सु राम बीर बीचि, साजि गाज उट्टए।
कढ़े सु सस्त्र सारि झारि, मीर सीस तुट्टए ॥ छं० ॥ २३९ ॥
मिल्यौ दु फौज हक्कि धक्कि, अन्य अन्य आवधं।
जयं सु अप्प बंछि बंधि, वीर संधि सावधं ॥
तुटे सु षग्ग भग्ग भार, दंत उड्डि दामिनी।
बरंत सूर मीर धीर, काम [3]बंछि कामिनी ॥ छं० ॥ २४० ॥
बरंति सूर अच्छरी, सु देह रोहि रथ्थयं।
ग्रहंत अग्नि एक पंति, उड्ड जात तथ्थयं ॥
मच्यो करार धार मार, सार सार धारयं।
परंत एक तुट्टि तेग, उड्डि झार मारयं ॥ छं० ॥ २४१ ॥
करें किलक्क बीर हक्क, सद्दि कंठ पूरयं।
रमंत रासि भीर भासि, नंदि नंचि नूरयं ॥
तुटंत सीस रोम रीस हक्कयं धरप्परं।
.... ॥ छं० ॥ २४२ ॥
नचै कमंध तुट्टि रंध [4]भिम्भि रंत संभरं।
अलुझ्झि कंठ कंठ एक तुट्टि तेग दुभ्भरं ॥

(१) ए.-फौज। (२) ए. कृ. को.-कड्डिय।
(३) ए. कृ. को.-बंधि, बंदि। (४) ए. कृ. को.-भर।

वहंत सार बार पार ता हरंत अंतरं।
ग्रहंत दंत दंत एक कंठ कंठ मंतरं ॥ छं० ॥ २४३ ॥
झटा सु हाक झाक धाक साल सेल संमुहं।
कांत घाव जंम [1]डाव घाव.घाव रंमहं ॥
हुअंत षंड षंड घाउ सुन्नरं बगत्तरं ॥
परंत बाजि षंड भाजि सुंडरं सु पष्परं ॥ छं० ॥ २४४ ॥
झरंत मत्त सुंड दंत षंड षंड चिक्करं।
ठिले सु मीर एक धीर नट्ठि षेत निक्करं ॥
चली सु फौज लष्षि साहि रोहि गज्ज सज्जियं ॥
हकारि मीर बक्कारि षग्ग धारि गज्जयं ॥ छं० ॥ २४५ ॥

क्षत्रिय वीरों का तेज और शाह के वीरों का धैर्य्य से युद्ध करना।

कवित्त ॥ बीर बीर घुट्टए। बीर बीरह आहट्टे ॥
सार धार बज्जे प्रहार। मद ज्यों दुअ जुट्टे ॥
रन हकारें राव। सिंघ पर एन सु छुट्टे ॥
वर उतंग भर सुभर। अप्प पर अनत न छुट्टे ॥
बर बीर साहि दिष्षौ निजरि। सां पुरसं कुल चाढ़ि सहु ॥
जाने कि काल जीहा उक्कसि। उट्ठिग बाह [2]पगार बहु ॥
छं० ॥ २४६ ॥

दूहा ॥ हय गय रथ्थ अरथ्थ हुअ। नर सौं नर नर लग्ग ॥
सघन घाइ उर बज्जते। भय भींभर द्रग भग्ग ॥ छं० ॥ २४७ ॥
हुअ हकार गज्जिय सु भर। जुटे साहि तसील ॥
मानों मत्त गयद दो। जुटि अंकस बिन पील ॥ छं० ॥ २४८ ॥

उक्त दोनों वीरों का युद्ध और अन्य सामंतों का उनकी सहायता करना।

(१) ए. कृ. को.-दाव। (२) मो. पमार।

भुजंगी ॥ जुटे जोध जोधं अभंगं करालं। उठे मुष्ष नासा नयन्नं बरालं॥
मिले छोह कोहं असम्मान लग्गे। परे लोह लत्तं निघत्तं करग्गे॥
छं० ॥ २४९ ॥

दुअं दीन दीदेर ते लोह [1]छक्के। फिरै गेन देवी हकारंत हक्के॥
भए चाल बंधं [2]मसंदं मसंदं। करें हूक हक्कं सु आवृत सद्दं॥
छं० ॥ २५० ॥

ढरें संध बंधं बहैं षग्ग धारें। मनों चक्क पंकं कुलालं उतारें॥
लगे [3]सेंग अंगं कढ़ें बार पारं। बहै जानि जादक्क ओनं प्रनारं॥
छं० ॥ २५१ ॥

लगै गुर्ज सीसं दुअं हथ्थ जोरं। दधी भाजनं जानि हरि ग्वाल फोरं॥
मिले हथ्थ बथ्थं गहै सीस केसं। जरे जम्म दढ्ढं महा मल्ल भेसं॥
छं० ॥ २५२ ॥

करें छुस्सिका जुद्ध [4]कित्ते ति बीरं। दिषें भेज अंगं मनों मुंड चीरं॥
रुपे बीर सामंत डिग्गे न पग्गं। तुटै सीस धक्कै धरं हक्क अग्गं॥
छं० ॥ २५३ ॥

चले ओन षारं मची कीच भूमी। अभूतं सु कंकं महाबीर भूमी॥
जहा षान तत्तार रुपि राह रूपं। तहां चक्क रुपी प्रथीराज भूपं॥
छं० ॥ २५४ ॥

मिले मुष्ष गोयंद चहुआन कन्हं। जुरे जैत बलिभद्र परसंग नन्हं॥
परे मेच्छ व्यूहं सु पावै न जानं। करी पारसं कोपि चहुआन आनं॥
छं० ॥ २५५ ॥

गहों साहि गोरी हरों स्वामि चासं। बहै मध्थ लोहान ज्यों काल ग्रासं॥
मुर्यौ षान तत्तार अप्पार मारं। परे षेत अंगं अभंगं अपारं॥
छं० ॥ २५६ ॥

लिये जीति वाजिच हस्ती तुरंगं। तक्यौ तोमरं साहि सज्यौ कुरंगं॥

---

(१) ए. कृ. को.-छक्कं, हक्कं। (२) ए. कृ. को.-मसंदं।
(३) ए. कृ. को.-संग। (४) मो.-कित्ते सु।

* .... । .... ॥ छं० ॥ २५७ ॥

यवन सेना का पराजित होकर भागना।

कवित्त ॥ [1]लुथ्थि लुथ्थि आहुट्टि। लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
षां षुरसान ततार। षान रुस्तम बे जुट्टिय ॥
अवर सेन अध लष्ष। तेह घाइल भर भग्गिय ॥
सहस [2]सत्त परि षित्त। मुष्य सामंत विलग्गिय ॥
मत्तंति लोह छक्के गरुअ। हरुअत्तन करि गरुअ किय ॥
भग्गौ सु तूल सुरतान दल। क्रम्म क्रम्म उड्डं बरिय ॥छं० ॥ २५८ ॥

छः सामंतो का शाह को घेर लेना।

चढ़त गज्ज साहाब। दिट्ठ पाहार सु दिष्षिय ॥
रा जद्दव जामानि। राव भौंहा भर लष्षिय ॥
लोहानौं आजान। बाह उहिग पग्गारह ॥
विंझराज चालुक्क। देषि पट सामंत सारह ॥
दौरे सु सज्जि असिवर सुमुष। गहो गहो जंपेव सुर ॥
आए मसंद अड्डे दुदस। मुझ्झ अलुझ्झिय साह पर ॥
छं० ॥ २५६ ॥

उत्तह बीस मसंद। इत्त सामंत सत्त पट ॥
बज्जै सार करार। झार उड्डंत रूक झट ॥
[3]पमरन श्रोन प्रवाह। गाहि रन बीर समथ्थं ॥
परे मसंद मसंद। धरनि सामंत सु हथ्थं ॥
चंप्यौ सु गज्ज गोरी गरुअ। रा भौंहा हय सीस गय ॥
घऱ्यौ सु सब्ब सामंत मिलि। लोहानौं गज रोह हय ॥छं०॥२६०॥

लोहाना का शाह के हाथी को मार गिराना।

दूहा ॥ हक्कि तुरी लोहान तब। हन्यौ कंध गज षग्ग ॥
ढरिग सीस पुंतार सम। धरिनि दंत दोय लग्ग ॥ छं० ॥ २६१ ॥

*मालूम होता है यहां के कुछ छन्द खण्डित हो गए हैं।

(१) मो.-लोथि। (२) ए. कृ. को. मित्त। (३) ए. कृ. को.-पमरत।

शाह का पकड़ा जाना।

कवित्त ॥ ढरत कंध गज साहि। गह्यौ पाहार षंचि कर ॥
कसिय बाह तूंवर सतेन। हय डारि कंध पर ॥
गह्यौ देषि सुरतान। सेन भग्गे सब आसुर ॥
परी लूटि हय गय समूह। बर भरे दरक [१]जर ॥
परे मीर सत्तह सहस। सहस अड हय [२]पंचि गय ॥
दिन अस्त माहि साहाब गहि। दियौ हथ्थ अप्पन सु रय ॥
छं० ॥ २६२ ॥

मृत वीरों की गणना।

दूहा ॥ सय षत्तिय परि हिंदु रन। सत्त एक हय थान ॥
सामंता सब तन कुसल। जय लद्धी चहुआन ॥ छं० ॥ २६३ ॥

लोहाना की प्रशंसा, शाही साज सामान की लूट होना।

कवित्त ॥ लोह हद्द मंडीय। मोहि विसमै द्रिग ल्लिन्निय ॥
अहत कंट मंडयौ। होम पासंग सु किन्निय ॥
सकति अग्ग दुभझरी। किन्न पूजा कज बद्धिय ॥
सुजस पवन छुट्टयौ। किन्ति चाव दिसि फुट्टिय ॥
आवद्ध रतन लोहान बर। लोहा लंगर धाइयां ॥
आजान बाह बहु भूप बल। गहन तेग उच्चाइयां ॥ छं० ॥ २६४ ॥
गह्यौ साहि सुरतान। जोध हय गय तहं भग्गे ॥
जमदड्ढां जम दड्ढ। असम असिवर नर लग्गे ॥
चामर छत्र रषत्त। तषत्त लुट्टे सुरतानी ॥
बंधि साह सु विहान। सुकर दीनौ चहुआनी ॥
बर बंध गए ढिल्ली तपत। जै बज्जा बज्जे सघन ॥
सोमेस सुअन संभरि धनी। रबि समान तप मान [३]धन ॥
छं० ॥ २६५ ॥

(१) ए.-जारन। (२) ए. कृ. को.-पंचि। (३) ए. कृ. को.-सम।

पृथ्वीराज का सकुशल दिल्ली जाना और शाह से दंड लेकर उसे छोड़ देना।

गह्यिय साहि आलम्म। गए प्रथिराज अप्प ग्रह॥
पोस मास पंचमिय। सेत गुरवार क्रत्ति कह॥
जोग सकल गहि साह। सज्जि दिल्ली संपत्तौ॥
अति मंगल तोरन। उछाह नीसान घुरत्तौ॥
दिन तीस रष्पि गोरी गरुअ। अति आदर आसन्न बर॥
करि दंड सहस अट्ठह सु हय। गय सु सत्त लिय मुक्कि कर॥
छं०॥ २६६॥

दंड वितरण।

दूहा॥ अर्द्ध दंड [1]प्रथिराज पहु। दीनौ राव पहार॥
अवर पंच सामंत अध। दीनौ प्रयुक पयार॥ छं०॥ २६७॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके दुर्ग्गा केदार संवादे पातिसाह ग्रहनं नाम अट्ठावनवों प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ५८॥

(१) मो.-पतिसाह।

अथ दिल्ली वर्णनं लिष्यते ।

(उनसठवां समय ।)

पृथ्वीराज की राजसी ।

दूहा ॥ साष साष भट भाष षट । । दर सम वर पुर इंद ॥
तपै सूर सामंत इछ । दिल्लिय चंद कविंद ॥ छं० ॥ १ ॥

दिल्ली के राज्य दरबार की शोभा ।

अति अति रूप अनंत वर । जरि जराव बहु भंति ॥
सभा सिंगारिय सकल भर । मनु सुरपति ओपंति ॥ छं० ॥ २ ॥
मधुरिति छच विराज महि । सिंघासन बहु साज ॥
जनु [1]कि मेर उतकंठ महि । सामंत रिढि सकाज ॥ छं० ॥ ३ ॥
कवित्त ॥ षट सुभाष षट हंन । बहुत बज्जन तहं बज्जत ॥
रंग राषि षट भंति । करिय सें अट्ठह गज्जत ॥
वपु सुमेर गति सर्प्प । छके षट रिति मद मत्तह ॥
मनहु काम प्रतिबिंब । । लयौ अवतार [2]दिल्लि यह ॥
चल चलत राइ चिहुं चक्क के । आयस रन डंडक गहन ॥
चहुआन भान सम भान तप । रहन वास उडपति धरन ॥
छं० ॥ ४ ॥

निगमबोध के बाग की शोभा वर्णन ।

नराच ॥ सुधं निगंम बोधयं, जमंन तट्ट सोधयं ।
तहां सु बाग अच्छयं, बने सु गुल्ल अच्छयं ॥ छं० ॥ ५ ॥
समीर तासु बासयं, फलं सु फूल रासयं ।
बिरध्य बेलि डंबरं, सुरंग पान अंमरं ॥ छं० ॥ ६ ॥
जु केसरं कुमंकुमं, मधुप्प वास तं भ्रमं ।

(१) मो.-जनु किरन्न । (२) ए. तिनह ।

अनार दाष पल्लवं, सु छच पत्ति ढिल्लवं ॥ छं० ॥ ७ ॥
श्री षंड थंड [1]वासयं, गुलाब फूल रासयं।
जु चंपकं कदंबयं, षजूरि भूरि अंबयं ॥ छं० ॥ ८ ॥
सु अंननाम जीरयं, सतूतयं जँभीरयं।
अषोट सेव दामयं, अवाल बेलि स्यामयं ॥ छं० ॥ ९ ॥
जु श्रीफलं नरंगयं, सबद्द स्वाद ह्वीतयं।
चवंत मोर वायकं मनो सँगीत गायकं ॥ छं० ॥ १० ॥
उपम्म बग्ग राजयं, मनों कि इंद्र साजयं।
...., ... ॥ छं० ॥ ११ ॥

दूहा ॥ उड़ि सु वास गुल्लाल अति। उड़ि अबीर असमान ॥
मनहु भान अंबर सुरत। बजी तंति सुरगान ॥ छं० ॥ १२ ॥

दरबार की शोभा और मुख्य दरबारियों के नाम।

* वेलीविद्रुम ॥ बजि तंति तंचिय बज्जनं। सुरगान [2]सज्जिय सुरगनं ॥
गुल्लाल लज्जिय अंगनं। आरक्त रंगि परंगनं ॥ छं० ॥ १३ ॥
चहुआन ओपिय छचयं। बंधान बंधिय सचुअं ॥
सामंत दरगह [3]सज्जयं। करतार कोन सु कज्जयं ॥ छं० ॥ १४ ॥
ढरि चमर दुअ भुज ढिल्लयं। मधु उपम मधुवन मिल्लयं ॥
गोयंद निद्दुर सलष्षयं। धुर धरन गह्यि नष्षयं ॥ छं० ॥ १५ ॥
बनि इंद देव सु वन्नयं। सोमेस बंधव कन्हयं ॥
चष पटिय चष्षन थट्टयं। दस लष्ष मीर दवट्टयं ॥ छं० ॥ १६ ॥
रिषि आप आप विधुत्तयं। थिर रहै रिद्धि न युत्तयं ॥
गुरराम पिट्ठ विराजयं। जनु वेद ब्रह्म सु साजयं ॥ छं० ॥ १७ ॥

(१) ए.-वासयं।

* इस छन्द को मो. प्रति में दण्डमालची करके लिखा है। वास्तव में कौन छन्द ठीक है इसके लिये हमने प्रचलित हिन्दी पिंगलों की छानबीन की परन्तु कुछ भी पता न चला अस्तु हमने ए. कृ. को. तीनों प्रतियों के पाठ को मान कर मो. प्रति के पाठ को पाठान्तर में दिया है।

(२) ए. कृ. को.-सज्जि कि सरगनं। (३) ए. सज्जियं।

मुष अग्ग चंद [1]सु भष्षनं। रज रीति हद्द सु रष्षनं॥
पुंडीर चंद सु पाहरं। नर नाथ दानव नाहरं॥ छं०॥ १८॥

बनि अन्यो अन्य सु ठौरयं। सुनि तंति सुरगन सोरयं॥
पिठ्ठै स दिठ्ठय पासनं। रषि अंब सेत हुतासनं॥ छं०॥ १९॥

चामंड लष्ष सु लष्षनं। रजि हिंदु राज सु रष्षनं॥
रनधीर सामँत सुभ्भयं। भिरि भंजि मीर सु द्रभ्भयं॥ छं०॥२०॥

मुष अग्ग बाजन ठट्टयं। पहु दीप मभ्भझल कट्टयं॥
दोसत्त जुर रा दुष्षनं। चिहु चक्क चारु सु [2]पिष्षनं॥ छं०॥ २१॥

घुरि चंब सुर तहं बज्जनं। गहि छंड गोरिय गज्जनं॥
रचि महुल मधुरिति मधुरयं। भ्रम छंडि मंडि सु पिष्षयं॥
छं०॥ २२॥

दिल्ली नगर की शोभा वर्णन।

चोटक॥ घुरि घुम्मिय चंब निसान घुरं। पुर है प्रथिराज कि इंद्रपुरं॥
प्रथमं दिल्लियं किलयं कहनं। ग्रह पौरि प्रसाद घना मतनं॥
छं०॥ २३॥

✓ धन भूप अनेक अनेक भती। जिन बंधिय बंधन छत्रपती॥
जिन अश्व चढ़ै [3]घरि अस्सि लषं। बल श्री प्रथु मत्त अनेक भषं॥
छं०॥ २४॥

दह पोरि सु सोभत पिष्ष वरं। नरनाह निसंकित दाम नरं॥
/भर हट्ट सु [4]लष्षनयं भरयं। धरि बस्त अमोल नयं नरयं॥
छं०॥ २५॥

तिहि बीच महल्ल मतष्षनयं। लष कोटि धजी सु कवी गनयं॥
नर सागर तारँग [5]सुद्ध परें। परि राति सुरायन बादुपरें॥
छं०॥ २६॥

---

(१) मो. सु भूषन। (२) ए. कृ. को.-चष्षनं। (३) ए. कृ. को.-घटि।
(४) ए. कृ. को.-सुष्पनयं। (५) ए.-सद्ध।

मचि कीच ओगालन हट्ट मझें। दिषि देव कैलासन दाव दझें॥
[1]रजितार वितारन भंति नवी। परिजानि हुतासन लत्त छवी॥
छं० ॥ २७ ॥

मनु सावक पावक मद्द किय। बिन तार अतारन मारि लिय॥
इन रूप टगं मग चाहनयं। मनों सूर सबै ग्रह राहनयं॥
छं० ॥ २८ ॥

तिन तट्ट कलिंदय तट्ट सजं। धर मझझन तार अनेक सजं॥
तिन अग्ग सुभंत सु बग्गनयं। लषि लष्षि चौरासिय उड्डनयं॥
छं० ॥ २९ ॥

पचि लल्लिय नील्लिय मानकयं। रतनं जतनं मनि तेज कयं॥
सुभ दिल्लिय हट्ट सु नैर मझैं। करि दंत मिलंत गिरंत सझैं॥
छं० ॥ ३० ॥

इय सामँत दामित रूप कला। बर बीर उठै घरि सत्त कला॥
जिन सामँत सामँत सुद्धरयं। घटि बढ्ढि मँडे गिर दुम्भरयं॥
छं० ॥ ३१ ॥

कवित्त ॥ परिहारह बन बीर। आय हय जोरि सु उभ्भिय॥
भोजन सद्द प्रमान। तहां [2]ग्रथु सामँत सुभ्भिय॥
सभा विसरजिय सूर। आय बैठक बैठारिय॥
बहुत मंस पकवान। अबुकि प्रथमी आधारिय॥
षट ब्रन्न दरग्गह सोम सुअ। केसर अगर कपूर उर॥
सामंत नाथ चरचिय सबन। सिव दड्ढी ढुंढा सहर॥
छं० ॥ ३२ ॥

राजसी परिकर और सजावट का वर्णन।

तोटक ॥ इह इंद्र पुरं किधों दिल्ल पुरं। इम उप्पिय मंदिर सोम [3]सुरं॥
इह मेर किधों इंद्र चापनयं। बहु भंति जरे मनि पट्टिनयं॥
छं० ॥ ३३ ॥

(१) ए. कृ. को.-रचिता विरलारन। (२) ए.-प्रिथा, ए. कृ. को.-प्रिथ।
(३) मो.-सुअ।

सुर मध्य विराजत सूर समं। सु मनों सुर उप्पर भान भ्रमं ॥
घन मद्धि तड़िक्त कला विकलं। पुर धाम सुभट्ट सषा प्रबलं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

✓सुभ रूप तहां गनिका गमयं। भ्रमि मानव सिद्ध सुरं भ्रमयं ॥
गहि तंचिय जंचिय डक्क बजै। जनु मार किधों कुरु कोक सभै ॥
छं० ॥ ३५ ॥

उड़ि बीर अबीर न भारनयं। जनु मेर सुधा गिर धारनयं ॥
लघ एक लियै रजनी सजनं। ग्रह रूप अनूपम काम मनं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

भरि द्रव्य रमै सब बीर मनं। रमि जूप बदै रमनी गमनं ॥
सब हारि निहारि कोपीन सभै। जब लिख्यि नारि अपारि दभै ॥
छं० ॥ ३७ ॥

इनं मान अमान सु रूप रमै। मनु सिद्धि करामति क्रम्म क्रमै ॥
बनि पंति सुकंत निसान लयं। मुष दिट्ठिय ढिल्लिय मालनयं ॥
छं० ॥ ३८ ॥

मनु रूप अनूप सितं विकनं। भर भीर बढ़ी नह दिठ्ठ नयं ॥
[1]घन घोरत सोर अमोघ नयं। मनु वाल सजोवन प्रौढ बनं ॥
छं० ॥ ३९ ॥

सु जहां चहुआन सु भोन सजै। सु मनों ससि कोरन कोर मभै ॥
✓ग्रह दिष्यिय दासि अवासनयं। तिन सोभ सुकाम करी [2]तनयं ॥
छं० ॥ ४० ॥

बहु रूप रवंन रवंन भती। मुष अम्रत सम्रत प्रान पती ॥
मुर अट्ठ सषी अँग रष्यि कला। मनु सेस बधू प्रभु की अवला ॥
छं० ॥ ४१ ॥

तिन धाम कलस्सन कोर बनी। जनु अंबर डंबर भान घनी ॥

(१) ए. कृ. को.-घन सोर अमोर। (२) ए. कृ. को.-नटयं, नठयं।

सित सत्त कलस्स सु [1]मुंदरयं। तिन मभ्झ सषी बहु सुंदरयं॥
छं० ॥ ४२ ॥

गज राजत राज सु छत्रपती। प्रथिराज कैमास इन्यौ सु मती॥
चहुआन बधू दसयं भनयं। भिरि लिछ्छि मंडोवर दंपतियं॥
छं० ॥ ४३ ॥

सुभ इंछिनियं कनयं [2]सुनयं। रिति छत्र कला सुर संपतयं॥
तिय पिथ्यह व्याह पुंडीर कियं। मनु अंबर मद्धि तड़ित्त बियं॥
छं० ॥ ४४ ॥

भनि नाम चंद्रावति चंद सुती। सुष भाग सुहागन चंद सुती॥
घर दाहुर दाहिम पुचि दयं। तिन पेट रयन्न कुमार भयं॥
छं० ॥ ४५ ॥

ससि वृत्त सु भंतिय क्रष्ण करी। मनु आनिय पीय सु कंध धरी॥
तिन रूप [3]रूपं मनि लिझ रजं। चहुआन सु आनिय देव सजं॥
छं० ॥ ४६ ॥

बरि लिन्निय षग्ग इंद्रावतियं। जनु मुष्य सरस्वति गावतियं॥
कुल भान सती सुत हाहुलियं। जनु किस्न रुकंमनयं मिलयं॥
छं० ॥ ४७ ॥

ग्रह पान सुती सु पजून घरं। मनु चित्र कि पुत्तरि आनि धरं॥
रिनथंभ हंसावति काम कला। तिन दीपति छिप्पत चंद कला॥
छं० ॥ ४८ ॥

सुर अच्छर मच्छर मान वती। किय अप्प [4]जँजोग संजोग सती॥
वह रूप अनूप सरूप मती। नह दिष्षिय नागिनि इंद्र सुती॥
छं० ॥ ४९ ॥

मनु काम [5]धनुंक करी चढ़यं। किधौं षंभ द्रुमं सु हिमं [6]चढ़यं॥
मुर कोटि चिपंड नयन्न सुजं। तट तास सुबास जमुंन [7]सजं॥
छं० ॥ ५० ॥

---

(१) मो.-सन्दरयं। (२) ए.कृ.को.-सुभयं। (३) ए.कृ.को.-रपंमनि। (४) ए.कृ.को..संजोग।
(५) ए. कृ. को.-धनंक। (६) ए.-बढ़यं। (७) ए. कृ.-सज्ञं।

तिन तट्ट अनेक [1]गयंद सढं । पग नट्ट गिरं पवनंति बढं ॥
बहु रूप अनूप सरूप भती । दिषि जानि कला सुर देव पती ॥
छं० ॥ ५१ ॥

गज षंभ छुटंत उमद्द मदं । मनु गाजत गज्ज अषाढ़ भदं ॥
कि मनों षद्द उट्ठिय कंठ लयं कि बढ़े मनु उप्पर बद्दरयं ॥
छं० ॥ ५२ ॥

बहु रंग सुरंग सु वस्त्र दिपै । तिन भेर [2]सिषंन सुभान छिपै ॥
तिन मध्य रयंन कुमार नयं । सुत सूर गयंन विदारनयं ॥
छं० ॥ ५३ ॥

दिनप्रत्ति रमें तट कूलनयं । सुर पेषि सुराथह भूलनयं ॥
तट रेष रिषी सर पालनयं । क्रित नाम सुधारन कालनयं ॥
छं० ॥ ५४ ॥

राजकुमार रेनसी का ढुंढा की गुफा पर जाकर उसका दर्शन करना, ढुंढा की संक्षेप में पूर्व कथा ।

[3]सत तीन बरष्ष असी अगलं । जब ढूंढ़ ढँढोरिय भू सगरं ॥
तिन सिद्ध गुफा अवतार लियं । मुनि जानि ब्रह्मा समयं दिषयं ॥
छं० ॥ ५५ ॥

तिन ढिग्ग रयंन कुमार गयं । मुनि जानि कृपाल कृपाल भयं ॥
बजि तारिय भारिय सद्द बधं । प्रति जीव सु जोति गयंन सिधं ॥
छं० ॥ ५६ ॥

जट जूट विकट्ट भ्रकुट्ट भरं । मधि क्रन्न सुकी सुक मंडि घरं ॥
सुत चंद सु पानि जुगं जुरयं । सिधद्रिग्ग उघारि दिषं नरयं ॥
छं० ॥ ५७ ॥

तिन पुच्छिय बत्त मही रिषयं । तुम बीसल पुत्त नरं [4]भषयं ॥
अब किल्लिय दुल्लिय बास कियं । प्रथमं अजमेर कुबेर दियं ॥
छं० ॥ ५८ ॥

(१) ए.-मयंद । (२) ए. कृ. को.-सषंन ।
(३) मो.-सित दोय बरष्ष असी अलगं । (४) मो.भषनं ।

दूहा ॥ जब उतपंन सु कुंड मझि। दिय रिषि नें बर नाम ॥
जाहु सु पहिलैं [1]अजय बन। जुग्गिनि वास सु ठाम ॥ छं० ॥ ५९ ॥

कवित्त ॥ पुर जोगिनि सुर थान। [2]जुग्गइने ताथे तारिय ॥
सतजुग संकर सधर। परत प्रथिराज सु पालिय ॥
द्वापर पंडव राव। सप्त कौरव संघारिय ॥
कलिजुग पति चहुआन। जिन सु गोरी घर ढारिय ॥
घर जारि पंग [3]पारन रवरि। फिरि दिल्ली चिहुं चक्क धर ॥
मेवात पत्ति इक छच महि। [4]निव भमेव आवट्टि नर ॥छं०॥६०॥

रेनु कुमार की सवारी और उसके साथी सामंत कुमारों का वर्णन।

दूहा ॥ सुभट सीष दिय भर सबन। रिषि प्रमान करि भीर ॥
बिन तारी करतार बर। तट बहि जमना तीर ॥ छं० ॥ ६१ ॥
घुरि निसान सद्दह धमकि। चढ़ि गज रेन कुमार ॥
मनों इंद्र ऐराप धरि। करिय असुर संघार ॥ छं० ॥ ६२ ॥

पद्धरी ॥ अरोहि गज्ज रेनं कुमार। चढ़ि चले सुतन सामंत सार ॥
सुत कन्ह मन्नि ईसरह दास। दिय देस रहन षट्ट सु वास ॥
छं० ॥ ६३ ॥
सुत निडर बीर चंद्रह [5]जु सेन। पल मारि भारि कर बध्घ ऐन ॥
सम जैत सुअन करनह सु जाव। जिन लिये सब सिर सिद्ध दाव ॥
छं० ॥ ६४ ॥
गोयंद सुतन सामंत सींह। जिन स्वामि काम नहि लोपि लीह ॥
कैमास सुअन परताप आप। जिन रष्पि भ्रम्म घर वट्ट बाप ॥
छं० ॥ ६५ ॥
पुंडीर धीर सुत चंद्रसेन। जिन चलै सहस द्वै उड्डि रेन ॥

(१) ए. कृ. को.-अज्ज। (२) ए. कृ को.-जुगह तेता ते तारिय।
(३) ए. कृ. को-पारी। (४) ए. कृ. को.-निहच मेव आवट्टि नर।
(५) ए. सु

परिहार पीय सुअ तेज पुंज । मनु दाष पक्क कै केलि कुंज ॥
छं० ॥ ६६ ॥

गुरराम सुअन हरिदेव रूप । मुष मिट्ठ दिट्ठ कलि परन भूप ॥
हम्मीर सुतन नाहर पहार । दस पंच बरष मद्धि बजिय सार ॥
छं० ॥ ६७ ॥

जग जेठ कुँअर चामंड जाव । जिन लिये कोट दस भंजि राव ॥
सुत महनसिंह जैसिंघ बीर । जिन रष्यि वंस पिचवट नीर ॥
छं० ॥ ६८ ॥

पंमार सिंघ सुअ राजसिंघ । जुरि जुद्ध रुद्ध उड़ि बाह जंघ ॥
रिनधीर सुतन गुज्जरह राम । दस देस लिद्ध ग्रह अप्प धाम ॥
छं० ॥ ६९ ॥

बरदाइ सुतन जल्हन कुमार । मुष बसै देवि अंबिका सार ॥
हरिसिंघ सुतन पातल नरिंद । गज दंत कढ़े जनु भील कंद ॥
छं० ॥ ७० ॥

विंझा[१] नरिंद सुत देवराज । सो जंग मंझ गज करत पाज ॥
अचलेस सुतन देवराज पट्ट । तन तरुन तेज गंगा सु घट्ट ॥
छं० ॥ ७१ ॥

तोंअर सुतन्न किरमाल कन्ह । जिन करी रिद्ध दुज दे अमंत ॥
पज्जून सुअन पाहाररराइ । चहुआन इला कलि करन न्याइ ॥
छं० ॥ ७२ ॥

नरसिंघ सुतन [१]हरदास हड्ड । गुर ग्रब्ब मान हम्मीर गड्ड ॥
षीची प्रसंग सुअ मल्हनास । वचि देव ध्रम्म बंकट्ट वास ॥
छं० ॥ ७३ ॥

सुत तेज डोड अचला सुमेर । दीपंत देह मानों कि मेर ॥
जंघार भीम [२]सुअ सिवहदास । कट्ठियाराइ सुत कब्बिलास ॥
छं० ॥ ७४ ॥

अततताइ सुतन आरेन रूप । भिरि भीम बद्ध मारंत भूप ॥
चंदेल माल प्रथिराज सूअ । भिरि जंग मझ्झ गज गहन भूअ ॥
छं० ॥ ७५ ॥

(१) मो.-सिवदास । (२) ए.-सुह ।

संग्राम सुअन सहसो समथ्थ। जुरि जुद्ध भान रोकै सुरथ्थ ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दूहा ॥ स्वामि दरग्गह चलि सुवन। मनहु प्रथीपुर इंद ॥
[1]कलि सोभन मोहन कवी। मनो सरद्दह चंद ॥छं०॥ ७७ ॥

बसंत उत्सव के दरबार की शोभा, राग रंग और उपस्थित दरबारियों का वर्णन।

पद्धरी ॥ रितराज राज आगंम जानि। पंचमि बसंत उच्छव सुठानि ॥
किय हुकुम सचिय सम बोलि तब्ब। प्रभु सेव साज मंगाय सब्ब ॥
छं० ॥ ७८ ॥

परजनन जुक्त तह मभ्भ आइ। पिल्लहि बसंत गोपालराइ ॥
परधान हुकुम सिर पर चढ़ाइ। सब बस्त रष्षि कन पहि कढ़ाइ ॥
छं० ॥ ७९ ॥

घनसार अगर सत कासमीर। म्रगमद जवाद बहु मोल चीर ॥
बहु बर्न पुप्फ को लहै पार। मन हरत मुनिन सुगंध तार ॥
छं० ॥ ८० ॥

चदंन अबीर गोरी गुलाल। अति चोल रंग जनु भूंड लाल ॥
मिष्ठान पान मेवा असंष। मन त्रिपति होत निरषंत अंषि ॥
छं० ॥ ८१ ॥

सुभ साल विसद अंगन अवास। बिच्छाय सु पट जाजिम नवास ॥
अंमोल मोल दुल्लीच भारि। पंचाइ पुंट सुलितानि धारि ॥
छं० ॥ ८२ ॥

छिरकाव छिरकि गुल्लाब पूरि। दिपियंत उड्डंति अब्बीर धूरि ॥
रहि उमड़ि घुमड़ि तहं धूप बास। तन बढ़त जोति सुब्बास रास ॥
छं० ॥ ८३ ॥

तहं धरिय सिंघासन मध्य आनि। नग जरित हेम बिसकर्म जानि ॥
बैठाय पाट गोपालराइ। घन घंट संष झल्लरि बजाइ ॥
छं० ॥ ८४ ॥

---

(१) ए.-कवल।

मिरदंग ताल अहं पौन धार । बीनादि जंच झिनकार सार ॥
नफेरि भेरि सहनाइ चंग । दुर बरी ढोल [1]आवझ उपंग ॥
छं० ॥ ८५ ॥

दम्माम सबद बज्जत विनोद । बंसी सरस्स सुर उपजि मोद ॥
[2]अनि अनि चरित्त नर नारि आनि । सक्कै न होइ तिन जाति जानि ॥
छं० ॥ ८६ ॥

धरि कनक दंड सिर चमर सेत । रष्यंत पवन विघ्न विघ्र हेत ॥
[3]विद्वान चतुर दस विद्य अच्छ । सम अग्ग सिंघासन बैठि पच्छ ॥
छं० ॥ ८७ ॥

बैठिय सु कन्ह चहुआन आनि । झलहलत क्रोध उर अगनि जानि ॥
गहिलोत राव गोयंद आय । जिन सुनत नाम अरिदल पुलाइ ॥
छं० ॥ ८८ ॥

निड्डुर नरिंद कमधज्ज पधारि । आदर [4]अनंत न्रप करि उचारि ॥
कूरंभ कहर बलिभद्र आय । जिहि सुनत नाम अरिनह दहाय ॥
छं० ॥ ८९ ॥

फुनि आय अप्प अब्बू नरेस । भय भीम रूप जमनेस भेस ॥
अततार आइ तहं सिव सरूप । बैठिय सु उट्ठि [5]भहराय भूप ॥
छं० ॥ ९० ॥

चावंड बिना भट सब्ब आय । अरि धरनि धरनि जे देत दाय ॥
पुंडीर आय तहं धीर चंद । अरि तिमिर तेज जिन फटति दंद ॥
छं० ॥ ९१ ॥

कूरंभ कहर पाल्हन्न देव । जिहि वियन काम बिन स्वामि सेव ॥
बय वृद्ध बाल सामंत सब्ब । अवधारि राज प्रथिराज तब्ब ॥
छं० ॥ ९२ ॥

फुनि आइ चंद [6]बरदाइ माइ । जिहि प्रसन जीह दुरगा सदाइ ॥
आयं सु न्रत्य नाटक अधीन । गंधरव राग विद्या प्रवीन ॥
छं० ॥ ९३ ॥

(१) मो.-आवझ्झ । (२) मो.-अनेक चरित । (३) मो.-पंडित ।
(४) ए. कृ. को. अनंत । (५) ए. भरराय । (६) ए. कृ. को.-वरदास ।

छह ग्राम मुरछना गुनं वास। सुर सपत ताल विद्या विलास॥
संगीति रीति अभ्यास बाल। उच्चारि राग रिझ्झिय भुवाल॥
छं० ॥ ८४ ॥

अन्नेक चरित श्रीकृष्ण कीन। ते सब्ब प्रगट कीने प्रवीन॥
तिन सुनत तवत तन पाप छीन। न्रप राइ रिझ्झि बहु दान दीन॥
छं० ॥ ८५ ॥

रस रह्यो रंग सभ उठ्ठि राज। सामंत सब्ब निज ग्रह समाज॥
अनसंक कंक बंकन पधोर। यों तपै पिथ्थ दिल्ली सजोर॥
छं० ॥ ८६ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके दिल्ली वर्णनं नाम उनसठवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५९ ॥

अथ जंगम कथा लिष्यते ।

(साठवां समय ।)

सुसज्जित सभा में पृथ्वीराज का विराजमान होना ।

चौपाई ॥ बैठौ राजन सभा विराजं । सामंत सूर समूहति साजं ॥
विस्तरि राग कला कृत भेदं । हरषित [1]हृदय असम सर षेदं ॥
छं० ॥ १ ॥

सज्जिय थान न्रपति कै पातुर । गुन रूपक विचरति स्रुत चातुर ॥
नाटिक कला संगीत आन रचि । अति [2]न्रत्यत करि विगति सु गति सचि॥
छं० ॥ २ ॥

चंद चारु माठा रूपक धरि । गीत प्रवीन प्रबंध कीन थरि ॥
उघट चिघट [3]अंग प्रमुष्य यह । निंदत चित्ररेष अच्छरि गह ॥
छं० ॥ ३ ॥

राजा को एक जंगम के आने की सूचना का मिलना ।

दूहा ॥ तत्त समै राजिंद बर । अपि सु षबरि अच्छत्त ॥
जंगम [4]एक सु आय कहि । कमधज पुर पति बत्त ॥ छं० ॥ ४ ॥
दिष्षि रहसि न्रप निरति रस । गुन अनेक कल भेद ॥
निरषि परषि प्रति अंग अलि । पातुर कला अषेद ॥ छं० ॥ ५ ॥

राजा का नृत्यकी को विदा करना ।

सत्त हेम है राज इक । दिय पातुर प्रति दान ॥
न्रत्ति विगति अवलोकि गुन । दई सीष यह मानि ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-हृदय, रिदय । (२) ए. कृ. को.-सु नृत्य ।
(३) ए. कृ. को.-अंड । (४) ए. कृ. को.-इक्कें ।
(५) ए.-व्रत्ति ।

पृथ्वीराज का जंगम से प्रश्न करना और जंगम का उत्तर देना।

पुनि जंगम प्रति उच्चरिय। कमधज्जन की कथ्थ ॥
बहुरि भिन्न करि उच्चरिय। सुनि सामंत सु नथ्थ ॥ छं० ॥ ७ ॥
चौपाई ॥ राज जग्य सज्ज्यौ कमधज्जं। देस देस हुंकारत सज्जं ॥
मिलि इक कोटि सूर भर हासं। नृप अदेस देस रचि तासं ॥
छं० ॥ ८ ॥
थपि दर द्वारपाल चहुआनं। लकुटिय कनक हथ्थ परिमानं ॥
आय पंग तट इष्य समाजं। आनि अप्प चहुआन सु लाजं ॥
छं० ॥ ९ ॥
इह सु कथा पहिली सुनि राजन। आय कही सो फौफनि साजन॥
लग्यौ राग श्रोतान रजानं। बुभ्झी बहुरि सु जंगम जानं ॥
छं० ॥ १० ॥

संयोगिता का स्वर्ण मूर्ति को जयमाल पहिराना।

कवित्त ॥ [1]आवलि पंग नरेस। देस मंड सुबेस बर ॥
बरन कज्ज चौसर। विचार संजोग दीन कर ॥
देवनाथ कवि अग्ग। बरनि नृप देस जाति गुन ॥
फुनि अष्पै संजोग। कनक विग्रह सु द्वार उन ॥
चहुआन राव सोमेस सुअ। प्रथीराज सुनि नाम बर ॥
गंध्रव्व [2]वचन विच्चारि उर। धरि चौसर प्रथिराज गर ॥ छं० ॥ ११ ॥

संयोगिता का दूसरी वार फिर से स्वर्ण मूर्ति को माला पहिराना।

दूहा ॥ देषि फेरि कहि नाथ पति। फुनि मुक्कलि कविराज ॥
बहुरि जाहु पंगानि अग। विबरै नृपति समाज ॥ छं० ॥ १२ ॥
कवित्त ॥ बहुरि नाम गुन जाति। देस पित प्रपित बिरद बर ॥
लै लै नाम पराम। देवजानी स देव कर ॥

(१) मो -आचलि। (२) मो. वयन।

फुनि चहुआन सु पास। जाय ठट्टे भए जामं॥
कछु कवि रहिय राज। कछुक जंपे गुन तामं॥
न्टप लज्ज पंग ग्रह भट्ट बर। तुच्छ संषेप सु उच्चर्‍यौ॥
संजोग समझ्झे उर रह। कंठ ग्रथ्थु चौसर धर्‍यौ॥

छं० ॥ १३ ॥

पुनः तीसरी वार भी संयोगिता का पृथ्वीराज की प्रतिमा पर जयमाल डालना।

दूहा ॥ दुसर राज इह देषि सुनि। तिय सु नाथ उर जाम॥
सपत हथ्थ सुर जा धरिय। प्रचरि नरेसनि ताम॥ छं० ॥ १४ ॥

कवित्त ॥ फुनि नरेस अदेस। नाथ फिरि आय मझ्झ दर॥
आदि वंस रचि नाम। चवत विक्रम्म क्रम्म बर॥
दई पानि कवि जानि। होत काह्ल कर मंडं॥
भूत भविष्यत वत्त। भव्वि जानी उर चंडं॥
उतकंठ लोकि प्रतिमा प्रतषि। दिष्षि देव देवाधि सचि॥
बरनी संजाग चहुआन बर। पहुप दाम ग्रीवा सु रचि॥

छं० ॥ १५ ॥

जयचन्द का कुपित होकर सभा से उठ जाना।

दूहा ॥ कोप कलमल पंग पहु। समय विरंचि विचारि॥
रोस सोस उर धारि तब। क्रम भति भई न चारि॥ छं० ॥ १६ ॥
उठ्ठि राज अंदरह दर। कियौ प्रवेस अपान॥
विमुष निमुष दिष्यौ न्टपति। देव क्रत्य परमान॥ छं० ॥ १७ ॥

पंगराज का दैवी घटना पर संतोष करना।

कवित्त ॥ दइय काल सुनि पंग। जग्गय विग्गर्‍यौ दच्छ पति॥
द्रुपद राय पंचाल। अग्गय विग्गर्‍यौ इष्ट रति॥
दइय काल दुजराज। जग्य विग्गर्‍यौ सु जानं॥
[1]न्घुष राइ [2]राज ह्व। गत्त जानी परमानं॥

(१) ए. कृ. को. नघुष। (२) ए.-राजरु।

श्रुति बर पुरान श्रोतास वल। विधि विचार मंडिय सकल ॥
चय काल काल सामंत कहि। दइय काल मानै अकल ॥
छं० ॥ १८ ॥

राजा जयचन्द का संयोगिता को गंगा किनारे निवास देना।

दूहा ॥ आदि कथा संजोग की। पहिलें सुनी नरेस ॥
अब इह जंगम आय कहि। विधि मिलवन संदेस ॥ छं० ॥ १९ ॥

कवित्त ॥ रचि अवास रा पंग। गंग दंगह उतंग तट ॥
दासि सहस सुंदरिय। प्रसँग काल ग्यान भाव पट ॥
व्रत उचार चहुआन। धरत कर करत अप्प पर ॥
पंच धेन पूजंत। बचन मन क्रम्म गवरि हर ॥
सुनि पुनि नरेस संदेस दिढ़। सोफी फुनि जंगल कहिय ॥
आरत्ति चरित चहुआन मन। दइय भेद चित्तह गहिय ॥
छं० ॥ २० ॥

दूहा ॥ पहिल ग्यान जंगम कहिय। दुतिय सो सोफी आनि ॥
तब प्रथिराज नरिंद ने। दैव काल पहिचान ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का अपने सामंतों से सब हाल कहना।

उठि राजन तब हुकम किय। बहुरि सूर सामंत ॥
परिहार केहरि कमल। काम नाम भर संत ॥ छं० ॥ २२ ॥
बुलिय स भूपति साधनह। दुतिय स ईसर दास ॥
बरन नेह विस्तार तन। आन रंग इतिहास ॥ छं० ॥ २३ ॥
गंग जमन जल उभय करि। करि अस्नान नरिंद ॥
क्रत हरि हर उर ध्यान प्रभु। उठ्यौ थान सुरिंद ॥ छं० ॥ २४ ॥
असन मार आराम सुष। सुष सयन्न क्रत राज ॥
उर सल्लै संजोग व्रत। संभरि नाथ समाज ॥ छं० ॥ २५ ॥
*तब परिहार सु हुकम दिय। गए सु भोजन साल ॥
व्यंजन रस रस सेष परि। सुनि सुनि कथा रसाल ॥ छं० ॥ २६ ॥

* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

पृथ्वीराज की संयोगिता प्रति चाह और कन्नौज को चलने का विचार ।

पद्धरी ॥ लग्गयौ सु राज श्रोतान राग । संजोग हूत संभरि समाग ॥
अति असम बान बेधे सरीर । नह धीर हसं [1]नह भाव धीर ॥
छं० ॥ २७ ॥
[2]रिति राज आनि रंगे सदंग । फुल्लेस विकढ नव कुसुम [3]चंग ॥
कलयंठ कंठ उपकंठ अंब । पाठंत विरहनी पति सितंब ॥ छं० ॥ २८ ॥
कुंजत उतंग गिरि तुंग सार । तालीस धार [4]उद्दार धार ॥
सति मान आनि सिंदन सु तात । संजोग सुषद विरहिन निपात ॥
छं० ॥ २९ ॥
उन श्रवन सान गाजंत जोर । मधु हूत समागध पठत घोर ॥
[5]साहीत सिषी चढ़ि सिषर टेरि । विज्जोग भगनि तिय उप्प वेर ॥
छं० ॥ ३० ॥
सासन सुरंम धरि चिविध पोन । वारह मत्त लघुमात गौन ॥
लगि दहन गहन मदनह सु भाम । रति नाथ नाथ विन सज्जि ताम ॥
छं० ॥ ३१ ॥
संवत्त संभ पंचास मेक । पष स्याम असित [6]उच्चार नेक ॥
पित नछिच जोग सुभ नवमि दीह । नृप मन विचार उर चलन कीय ॥
छं० ॥ ३२ ॥
दूहा ॥ लग्गि बान अनुराग उर । मनमथ प्रेरि बसंत ॥
सहै नृपति अप्पै न कहुं । षेदे रिदय असंत ॥ छं० ॥ ३३ ॥
कवित्त ॥ दंग सुरंग पलास । जंग जीते बसंत तपु ॥
मदन मानि मन मोद । लीन छेदे [7]प्रछेद बपु ॥
देस नरेस अदेस । देस आदेस काम कर ॥
नीर तीर नाराच । पंग बेधे अबेध पर ॥

(१) ए. कृ. को.-चित । (२) ए. कृ. को.-रति ।
(३) ए. कृ. को.-जंग । (४) ए.-उद्दास । (५) ए. कृ. को.-साहात ।
(६) ए. कृ. को.-उज्जार । (७) ए. कृ. को.-अछेद ।

कलमलत चित्त चहुआन तब। उर उपजै संजोग हत ॥
बरदाय बोलि तिहि काल कवि। मन अनंत मति पर उघ्यति ॥
छं० ॥ ३४ ॥

कविचन्द का दरबार में आना और राजा का अपने मन की बात कहना।

दूहा ॥ आय चंद बरदाय बर। दिय आदर न्रप ताम ॥
आनि बहुरि दीने सु तब। रष्षे तथ्थ सु काम ॥ छं० ॥ ३५ ॥
द्वारपाल कमधज्ज थपि। हम रष्षे दरबार ॥
अब जीवन बंछै कहा। कह्यौ सु कब्बि विचार ॥ छं० ॥ ३६ ॥
अरु दिढ़ हत्त पँगानि लिय। तुम जानो सब तंत ॥
चलन नयर कमधज्ज कौं। सु बर विचारहु मंत ॥ छं० ॥ ३७ ॥

कवि का कहना कि कन्नौज को जाने में कुशल नहीं है।

तब कवि [1]इम सु उच्चरिय। सुनि संभरी नरेस ॥
चलत न्रपति बरजिय न कहुं। विधि न्रम्मान सुदेस ॥ छं० ॥ ३८ ॥
पंग सु जानहु तुम न्रपति। चलि कीनी तुम देस ॥
गाम ठाम बाहर विचल। पारि जारि किय रेस ॥ छं० ॥ ३९ ॥

कवित्त ॥ [2]कोरि जोर कमधज्ज। सयन आयौ पर ढिल्ली ॥
जारि पारि बेहाल। पलक कीनी धर मिल्ली ॥
[3]गोपर मार उत्तंग। तोरि उच्छारि झारि भर ॥
ढंग जंग परजारि। [4]ठाम कीनौ अठाम नर ॥
कर सांप काल मुष को धरै। को जम पानि पसारि लय ॥
मोमेस नंद विचारि चलि। भवसि सोय [5]देवाधि भय ॥ छं० ॥ ४० ॥
कवन भुजा [6]बलवंत। गयन प्रस्थानन कीनौ ॥
पारावार अपार। कवन पलवन तन कीनौ ॥

(१) ए. कृ. को.-गम। (२) मो.-कार।
(३) ए. कृ. को.-गोपरि गिर। (४) ए. कृ. को.-ताम, छाम।
(५) ए. कृ. को.-देवास। (६) ए. कृ.-बलबंड।

हेम सैल करताल। धन्यौ सिष नष्य सुन्यौ नृप ॥
कवन धनंजय पानि। करै संभरि नरेस दप ॥
जम जोर हथ्थ को जोर रहि। जवन अरुन रन जित्तियै ॥
चल्लहु नरेस परदेस मन। द्वै विधान मन चिंतियै ॥ छं० ॥ ४१ ॥

पृथ्वीराज का फिर भी कन्नौज चलने के लिये आग्रह करना।

दूहा ॥ चलन नरिंद कविंद पिथ। पुर कनवज मत मंडि ॥
दइय सीष कविचंद कहु। बहुते आसन छंडि ॥ छं० ॥ ४२ ॥

रात्रि को दरबार बरखास्त होना, सब सामंतों का अपने अपने घर जाना, राजा का सयन।

जाम एक रजनी रहिय। तथ्थ सुबर कविचंद ॥
ताम काम परिहार कों। दई सीष उनमंद ॥ छं० ॥ ४३ ॥
तब सु चंद ग्रह अप्प गय। उठिय सु पिथ्थ नरिंद ॥
आभूषन वस वास धरि। ससि दुति तेज द्रुमंद ॥ छं० ॥ ४४ ॥

राजसी प्रभात वर्णन।

कवित्त ॥ आय राज दीवान। जानि नाकेस अमर गन ॥
उट्ठि [१]सुभर नृप करि। जुहार आरोहि सोह थन ॥
आय तब्ब बर बुद्धि। [२]बीन धर नमित क्रत्त पहु ॥
सुधरि तंत सुर सपत। कंठ कलरव कलंठ सहु ॥
जुग घटिय सु घट अनुराग मन। राग श्रोत श्रोता धरत ॥
पांवार तार [३]उब्भय [४]अभय। जर सभीत तारन परत ॥ छं० ॥ ४५ ॥
ताम समय बंदियन। आय बरदाय बीर बर ॥
दिष्षि सभा राजिंद। इंद निदंत नाक पर ॥
नथ्थि सुहर वाहनह। नथ्थि कालिंद्र वार भर ॥
नथ्थि बरुन वलिराइ। नथ्थि दनुनाथ लंकधर ॥
अनजीत निगमबोधह नयर। बयर साल [४]कड्ढन [५]महन ॥

(१) मो. सुभये। (२) मो.-"बीन धरन मिल ब्रत पहुं। (३) ए. कृ. को.-उभय। (४) ए. कड्ढन। (५) ए. मनह।

सोमेस नंद अनलह कुलह। अंच किति भंजन दहन ॥छं०॥४६॥

गाथा ॥ दिष्षि सुभट्टह दिवामं। राजत बीर धीर अरोहं ॥

निरषि ताम प्रतिसारं। आगम निगम जान सह कव्वी ॥छं०॥४७॥

कविचन्द का विचार।

कवि जानी करतारं। रचना [1]सचन सब्ब भर सुभरं ॥

कवन सु मेटन हारं। विधि लिषयं भाल अंकेन ॥ छं० ॥ ४८ ॥

दूहा ॥ गत सभांन भर थान उठि। आयति समय पुलिंद ॥

गहन मझि वाराह वर। निंदत कोहर किंद ॥ छं० ॥ ४९ ॥

तत कोहर इक भाल वर। षात अराम भिराम ॥

विहुरि न्रपत्ति नरेस किय। व्याधि स रष्षहु ताम ॥ छं० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज का कतिपय सामंतों सहित शिकार को जाना।

कवित्त ॥ उठि प्रातह चहुआन। [2]चढ़ि सु क्रम्मत नरेस पिथ ॥

सथ्थ सूर सामंत। मंत जान्यो अषेट पथ ॥

सुभट जाम जद्दों जुवान। बलिभद्र बीझ बर ॥

महनसीह सम पीप। बंधि लंगिय अभंग भर ॥

गुज्जरहराम आजानभुज। जैतराव भट्टी अचल ॥

हाहुलियराव मंडल्ल हर। मिले सुभट तहं क्रमत भल ॥छं०॥५१॥

बाराह का शिकार।

दूहा ॥ जाय संपते भर गहन। जोजन इक इक [3]कोह ॥

तहं सूकर सूतौ न्निमय। कोहर तथ्थ सु [4]षोह ॥ छं० ॥ ५२ ॥

धरि छत्तिय दिढ़ तुपक न्रप। हक्किय व्याधि वराह ॥

उट्ठि भयंकर षात तजि। तिच्छन संचरि ताह ॥ छं० ॥ ५३ ॥

वाराह का वर्णन और राजा का उसे मारना।

कवित्त ॥ कविय व्याधि वाराह। उट्ठि धायौ चंचल सम ॥

बदन भयंकर भूत। दंत दीरघ ससि बीय सम ॥

---

(१) मो.-सचनं। (२) मो.-"चाढ़ि संक्रम्भ नरेस पिथ"।

(३) मो.-ग्रेह। (४) मो.-षेह।

सनमुष क्रमत नरेस। दिष्षि छत्तिय धरि अंतिय ॥
सबद रोस संचार। सूर ओवंत [1]सु पंतिय ॥
संचष्षि उभय भ्रकुटिय सहय। लग्गिय गोरिय [2]परचरिय ॥
उच्छरत येत धुक्किय धरनि। भल जंप्पिय भर सारथिय ॥
छं० ॥ ५४ ॥

दूहा ॥ किय सिकार बर सूर पति। ग्रेह संपतौ आय ॥
चल्यौ प्रात प्रथिराज पहु। सिव सेवन सद भाय ॥ छं० ॥ ५५ ॥

शिकार करके राजा का शिवालय को जाना। शिव जी के शृंगार का वर्णन।

पद्धरी ॥ आश्रम्म ईस ईसान थान। पुर अलक असुर सुर वृंद मान ॥
जट विकट चकुट झलकंत गंग। तिन दरसि भरत पातिग पतंग ॥
छं० ॥ ५६ ॥

तट भाल चंद दुति दुतिय दीह। हरि सुजस रेष राजन अतीह ॥
तिन निकट नयन झलकंत अंग। सिर पंच [3]सोह रजिकय उदंग ॥
छं० ॥ ५७ ॥

आभा अनूप विभ्भूति बार। प्रगटे सुषीर दधि करि विहार ॥
झलकंत तरल तिच्छन सुरंग। [4]तम रहै मेर उपकंठ संग ॥
छं० ॥ ५८ ॥

रजि उरग हार उद्दार धार। रुचि सेत स्याम तन तिन प्रकार ॥
आरोपि उअर वर रुंडमाल। उडुपंति कंति हिम गिरिय [5]भाल ॥
छं० ॥ ५९ ॥

कटि तटि लपेटि लंकाल षाल। आवरिग अंग गज [6]तुज विसाल ॥
कर तरल तुंग तिरसूल सोह। त्रयलोक सोक संकत समोह ॥
छं० ॥ ६० ॥

डहडहत डमरू कर दच्छि पानि। क्रत उंच उंच भय भगति [7]भानि ॥

(१) ए. कृ. को.-सयत्तिय। (२) ए. कृ. को.-परचारिय।
(३) ए. कृ. को.-सीह। (४) ए. कृ. को.-तन।
(५) ए. कृ.-पषाल। (६) मो.-गज तुव। (७) ए. कृ. को.-सांनि।

अरधंग उमय सरवंग देव। नाटिक्क कोटि को लहत भेव ॥
छं० ॥ ६१ ॥

चवरंग विसाल [1]माली प्रमथ्य। अरोहि वृषभ मन [2]सुमन रथ्य॥
षट बदन बदन गज मदन अग्ग। गन जंत गज्ज अनेक बग्ग॥
छं० ॥ ६२ ॥

कैलास वास सिवरंग रोध। बर बसत आय थिर निगमबोध॥
आहुत्ति परसि क्रित प्रथियराज। उपवास व्याधि कारन सुभाज॥
छं० ॥ ६३ ॥

निसि जगत ईस तिय रथ परिथ्य। हरिहरि समेत कलि कलन कथ्य॥
अनेक विधी रिष गन प्रसंग। उर हरन करन क्रमि आय तंग॥
छं० ॥ ६४ ॥

दूहा ॥ राज दरसि हर सरस बर। उर उहित आनंद॥
कर कलंक तिरसूल कर। जै जै समर निकंद॥ छं० ॥ ६५ ॥

नमित दान शिव प्रमित सुष। बारह वार नरेस॥
हर हर हर उर ध्यान गुर। दिष्यन दरसन तेस॥ छं० ॥ ६६ ॥

स्रुति उचार संचय सु रिषि। उज्जल अरचि अचार॥
मन सु ब्रह्म तन माम सी। ते देषे हरद्दार॥ छं० ॥ ६७ ॥

पृथ्वीराज का स्नान करके शिवार्चन करना, पूजा की सामग्री और विधान वर्णन।

करि सनान संभरि स पहु। स च सुवास तन धार॥
अंदर शिव मंदिर परसि। आरोहन क्रत कार॥ छं० ॥ ६८ ॥

पद्धरी ॥ करि नमसकार संभरि नरेस। अवलोकि अंग उमया वरेस॥
रिषि रुष षटंग उचरंत चार। ओरहि राज दुज सम सुसार॥
छं० ॥ ६९ ॥

धरि ध्यान [3]उरध नाटेस राय। मधु दूब षीर दधि तंदुलाय॥
घट उभय सहस [4]सुर सुरिय अंब। चव सहस कलस जमना प्रसंब॥
छं० ॥ ७० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-मानी। (२) ए. समन।
(३) ए. कृ. को.-अरध। (४) मो. रसुरीय अंव।

दधि सहस एक घट सहस षीर। मधु पंच सत्त सुच्छव सहीर॥
घट सहस [1]रष्षि अहह प्रवान। घट कासमीर सय पंच थान॥
छं० ॥ ७१ ॥

रस उभय दून घट विसल वानि। अस्तूति चंद जंपै विधान॥
वरकुंभ सत्त गुल्लाव पंच। घट उभय नाग संभव सुरंच॥
छं० ॥ ७२ ॥

घठ उभय जष्षि कद्दम सु सत्त। घट उभय सात बहु विधि प्रव्रत्त॥
सिव सिर अवंत नृप अप्प हाथ। सद भाय अर्चि अलकेस नाथ॥
छं० ॥ ७३ ॥

तंदुल सु दूब मधु षीर नीर। दधि सार पंच तुछ मंडि सीर॥
सिव संषि सुघट पुज्जै चिअंब। सु प्रसन्न ईस [2]कारन तिअंब॥
छं० ॥ ७४ ॥

सतपत्र कमुद ससि सूर वंस। मंदार पहुप केतकि सुअंस॥
मालती पंच जाती अनेव। फल पहुप पत्र पल्लव सु भेव॥
छं० ॥ ७५ ॥

मालूर पंग श्रीषंड धूप। नैबेद ईस आराधि ऊप॥
आरोह नंत आगम प्रदोष। रचि सयन अयन राजन सु कोष॥
छं० ॥ ७६ ॥

प्रस थारि कथा ग्रहि संभरेस। अनेक दांन रिषि दिय नरेस॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७७ ॥

पूजन के पश्चात कविचन्द का राजा से दिल्ली चलने को कहना।

दूहा॥ पूजा [3]हर घन हित करी। धूप दीप सब साज॥
चंद भट्ट बोल्यौ तबै। चल्यौ सु ग्रह फिरि राज॥ छं०॥ ७८॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके जंगम सोफी कथा, सिव पूजा नाम साठवों प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥६०॥

(१) ए. कृ. को.-सरपि। (२) ए. कृ. को.-कारनीन। (३) ए. कृ. को. घन हर।

अथ कनवज्ज समयो लिष्यते।

(एकसठवां समय।)

[अथ षट् ऋतु वर्णन लिष्यते।]

पृथ्वीराज का कविचन्द से कन्नौज जाने की इच्छा प्रगट करना।

दूहा॥ सुक बरनन संजोग [1]गुन। उर लग्गे छुटि बान॥
षिन षिन सल्लै वार पर। न लहै बेद बिनान॥ छं०॥ १॥
भय श्रोतान नरिंद मन। पुच्छै फिरि कविरज्ज॥
दिष्षावै दलपंगुरौ। धर ग्रीषम कनवज्ज॥ छं०॥ २॥

कवि का कहना कि छद्म वेष में जाना उचित होगा।

कवित्त॥ दीसै बहु विध चरिय। सुश्रन नर दुश्रन भनिज्जै॥
बल कलियै अप्पान। कित्ति अप्पनी सुनिज्जै॥
छौंडिज्जै तिहि काज। दुष्ष सुष्षह भोगिज्जै॥
तुच्छ आव संसार। चित मनोरथ पोषिज्जै॥
दिष्षियै देस कनवज्ज वर। कही राज [2]कवि चंद कहि॥
[3]मुक्कही सूर छल संग्रहै। तौ पंग दरसन तत्त लहि॥ छं०॥ ३॥

यह सुनकर राजा का चुप हो जाना और सामंतों का कहना कि जाना उचित नहीं।

दूहा॥ सुनिय सुकवि इह चंद वच। ना बुल्ल्यौ सम राज॥
अंबुज को दोऊ कठिन। उदय अस्त रविराज॥ छं०॥ ४॥
स्लोक॥ गमनं न क्रियते राजन्। सूर सामंतमेवच॥
[4]प्रस्थानं च प्रयाणं च। राजा [5]मध्ये गतं तदा॥ छं०॥ ५॥

---

(१) मो.-सुन (२) ए. कृ. का.-कहि। (३) मो. मुक्काहि सूर रछ संग्रहे।
(४) ए. कृ. मो.- प्रच्छानं। (५) ए. कृ. को.- मध्य।

राजा का इंछिनी के पास जाकर कन्नौज जाने को पूछना ।

दूहा ॥ पुच्छि गयौ कविचंद को । इंछिनि महल नरिंद ॥
सुंदरि दिसि कनवज्ज कौ । चलै कहै धर इंद ॥ छं० ॥ ६ ॥

रानी इच्छनी का कहना कि वसंत ऋतु में न जाइए ।

इन रिति सुन चहुवान वर । चलन कहै जिन जीय ॥
हौं जानूं पहिलै चलै । प्रान प्रयान कि [1]पीय ॥ छं० ॥ ७ ॥
प्रान ज्वाव दूनौं चलै । आन अटक्कै घंट ॥
निकसन कौं झगरौ पर्यौ । रुक्यौ गद्‌ग्गद कंठ ॥ छं० ॥ ८ ॥

वसंत ऋतु का वर्णन ।

साटक ॥ स्यामंगं कलधूत नूत सिषरं, मधुरे मधू वेष्टिता ।
[2]वाते सीत सुगंध मंद सरसा, आलोल संचेष्टिता ॥
कंठी कंठ कुलाहले मुकलया, कामस्य उद्दीपने ।
रत्ते रत्त वसंत मत्त सरसा, संजोग भोगायते ॥ छं० ॥ ९ ॥

कवित्त ॥ मवरि अंब फुल्लिग । कदंब रयनी दिघ दीसं ॥
भवर भाव भुल्लै । भ्रमंत मकरंदव सीसं ॥
वहत [3]बात उज्जलति । मौर अति विरह अगनि किय ॥
कुहकुहंत कल कंठ । पत्र राषस रति अग्गिय ॥
पय लग्गि प्रान पति वीनवौं । नाह नेह मुझ चित धरहु ॥
दिन दिन अवद्धि जुब्बन घटय । कंत वसंत न [4]गम करहु ॥छं०॥१०॥
धुम्र चलिय बन पवन । भ्रमत मकरंद कंवल कलि ॥
भय सुगंध तहँ जाइ । करत गुंजार अलिय मिलि ॥
बल हीना [5]डगमगहि । भाग आवै भोगी जन ॥
उर धर लगै समूह । कंपि भौ सीत भयत नन ॥
लत परी ललित सब पहुप रति । तन सनेह जल पवित किय ॥
निझरै भंग अंवुज हरुअ । सीत सुगंध सुमंद लिय ॥ छं० ॥ ११ ॥

(१) को. कृ-पीउ । (२) ए. कृ. को.- वातो ।
(३) ए. कृ. को.- वात । (४) ए. कृ. को.- गमन । (५) मो. डत ।

साटक ॥ लैवंधं सुर यह्र डंक्कित मधू, उन्मत्त भ्रंगी धुनी ।
कंद्रप्पं सु मनो वसंत रमनं, प्रानो धनं पावनं ॥
कामं तेग मनं धनुष्य सज्जनं, भीतं वियोगी मुनी ।
विरह्निन्या तन ताप पत्त सरसा, संजोगिनी सोभनं ॥ छं० ॥ १२ ॥

कुंडलिया ॥ इहि रिति मुक्कि न बाल प्रिय । सुष [1]भारी मन लुट्टि ॥
कामिनि कंत समीप बिन । हुई षंड उर फुट्टि ॥
हुई षंड उर फुट्टि । रसन कुह कुह आरोहै ॥
चलन कहै जो पीय । गात वर [2]भग्गो सोहै ॥
नयन उमगि कन बीय । सोभ ओपम पाईं जिहि ॥
मनों षंजन बिय बाल । गहिय नंषत सुत्तिय [3]इहि ॥ छं० ॥ १३ ॥

ग्रीष्म ऋतु आने पर पृथ्वीराज का रानी पुंडीरनी के पास जाकर पूछना ।

दूहा ॥ इहि रिति रष्षिय इंछिनिय । भय ग्रीषम रितु चारु ॥
कांम रूप करि गय न्टपति । पुंडीरनी दुआर ॥ छं० ॥ १४ ॥
सुनि सुंदरि पहु पंग की । दिसि चालन की सज्ज ॥
बर उत्तम धर दिष्षियै । पिष्यन भर कनवज्ज ॥ छं० ॥ १५ ॥

रानी पुंडीरनी का मना करना ।

न्टप ग्रीषम ग्रिह सुष्यनर । ग्रेह मुक्कि नन राज ॥
गोमगांम छादिय अमर । पंथ न सुझ्झै आज ॥ छं० ॥ १६ ॥

कवित्त ॥ दीरघ [4]दिन निस हीन । छीन जल धरवैसंनर ॥
चक्रवाक चित मुदित । उदित रवि थकित [5]पंथ नर ॥
चलत पवन पावक । समान परमत सु ताप मन ॥
सुकत सरोवर मचत । कीच तलफंत मीन तन ॥
दीसंत दिगम्बर सम सुरत । तरु लतान गय पत्त झरि ॥
अकुलंदीह संपति बिपति । कंत गमन ग्रीषम न करि ॥ छं० ॥१७॥

---

(१) ए.- भासे ।　　(२) ए. भग्गै-ए.-भग्गी ।
(३) ए. .कृ को.-जिहि ।　　(४) ए. कृ. को.-दिस ।
(५) ए. कृ. को.-पस्पत ।

साटक ॥ दीहा दिग्घ सदंग कोप अनिला, आवर्त मित्ता करं।
रेनं सेन दिसान थान मिलनं, गोमग्ग आडंबरं॥
नीरे नीर अपीन छीन छपया, तपया तरून्या तनं।
मलया चंदन चंद मंद किरनं, ग्रीष्म च आषेवनं॥ छं०॥ १८॥

कवित्त॥ पवन त्रिविध गति मुक्कि। सेन भुअ पत्ति जूथ चलि॥
विरह [1]जाम बर कदन। मदन मैं मंत पील हलि॥
पथिक बधू भरै। आस आवन चंदाननि॥
जो चालै चहुआन तौ। मरै फुटि उर ब्रंननि॥
मन भुअन आन दैतो फिरै। प्रिय आगम गज्जै मयन॥
कंता न मुक्कि वर किति गर। कहूं सुनो सोनिय बयन॥छं०॥१९॥
षिन तरुनी तन तपै। बहै नित बाव रयन दिन॥
दिसि च्यारौं परजलै। नहिं कहौं सीत अरध षिन॥
जल जलंत पीवंत। रुहिर निसि वास निघट्टै॥
कठिन पंथ काया। कलेस दिन रयनि सघट्टै॥
त्रिय लहै तत्त अष्यर कहै। गुनिय न ग्रब्ब न मंडियै॥
सुनि कंत सुमति संपति विपति। ग्रीषम ग्रेह न छंडियै॥छं०॥२०॥

*गीतामालची॥ त्रिय ताप अंगति दंग दवरित दवरि छव रित भूषनं।
कुरु मेह षेहति ग्रेह लुंपिति स्वेद संवित अंगनं॥
नर रहित अनहित पंथ पंगति पंगयौ जित गोधनं।
रवि रत्त मत्तह अब्भ उद्दिक कोप कर्कस मोषनं॥ छं०॥ २१॥
जल बुट्टि उट्ठि समूह बल्लिय मनौं सावन आवनं।
हिंडोल लोलति बाल सुष सुर ग्राम सुर सुर गावनं॥
कुसमंग चीर गंभीर गंधित मुंद बुंद सुहावनं।
ढलकंत बेनिय तट्ठ येनिय चंद्र सेंनिय आननं॥ छं०॥ २२॥
ताटंक चंचल लजित अंचल मधुर मेषल रावनं।
रव रंग नूपुर हंस दो सुर कंज ज्यौं पुर पावनं॥
नष द्रप्प द्रप्पन देषि अप्पन कोपि कंपि सु नावनं।
दमकंद दामिनि दसन कामिनि जूथ जामिनि आननं॥छं०॥२३॥

(१) ए.कृ.को.-जातु। * आधुनिक हिन्दी पिंगलों में इस छन्द को प्रायः हरिगीतिका करके लिखा है।

तंबोल रत घनसार भारह बेलि विद्रुम छावनं।
अलि गुंज मालहि. देषि लालहि रंभ राज रिझावनं॥
.... ॥ छं० ॥ २४ ॥

वर्षा के आने पर राजा का इन्द्रावती के पास जा कर पूछना।

दूहा ॥ मानि रूप मानिनि वचन। रहि ग्रीषम वर नेह ॥
पावस आगम धर अगम। गय इंद्रावति ग्रेह ॥ छं० ॥ २५ ॥

इन्द्रावती का दुखी होकर उत्तर देना।

पीय वदन सो प्रिय परषि। हरष न भय सुनि गौन ॥
आसू मिसि असु उप्पटै। उत्तर [1]टेय सलोन ॥ छं० ॥ २६ ॥

वर्षा ऋतु वर्णन।

साटक ॥ अब्दे वद्दल मत्त मत्त विसया, दामिन्य दामायते।
दादूरं दर मोर सोर सरिसा, पप्पीह चीहायते ॥
[2]शृंगारीय वसुंधरा मलिलता, लीला समुद्रायते।
जामिन्या सम वासुरो विसरता, पावस्स पंथानते ॥ छं० ॥ २७ ॥

कवित्त ॥ मग सज्जल सुझझैन। दिसा धुंधरी सघन करि ॥
रति पहुवी कि चरित। लता तरु वींटि सुमन भरि ॥
आलिंगत धर अभ्भ। मान मानिन ललचावत ॥
बर भद्रव कद्रव मचंत। कद्रव विरुझावत ॥
चतुरंग सेन वै गढ दहन। घन सज्जिय न्रप चढ़िन तिन ॥
भरतार संग बंछै त्रिया। बिन भ्रतार [3]भत्तार बिन ॥ छं० ॥२८॥
घन गरजै घरहरै। पलक निस रेनि निघट्टै ॥
सजल सरोवर पिष्षि। हियौ तत छिन धन फट्टै ॥
जल बद्दल बरषंत। पेम पल्हरै निरंतर ॥
कोकिल सुर उच्चरै। अंग पहरंत पंच सर ॥

---

(१) ए. कृ. को. देति। (२) ए. कृ. को.-श्रृंगाराय।
(३) ए. कृ. को.-भरतार।

दादुरह मोर दामिनि दसय। अरि चवथ्य [1]चातक रटय॥
पावस प्रवेस वालम न चलि। विरह अगनि तनतप घटय॥छं०॥२९॥
घुमड़ि घोर घन गरजि। करत आडंबर [2]अंमर॥
पूरत जलधर धसत। धार पथ थकित दिगंबर॥
झझकित द्रिग सिसु म्रग। समान दमकत दामिनि द्रसि॥
विहरत चाचग चुवत। पीय दुपंत समं निसि॥
ग्रीषंम विरह द्रुम लता तन। परिरंभन क्रत सेन हरि॥
सज्जंत काम निसि पंचसर। पावस [3]पिय न प्रवास करि॥
छं०॥ ३०॥

चंद्रायना॥ विजय विहसि द्रिगपाल पायननि पंच किय॥
विरहनि [4]विस गढ़ दहन मघव धनु अग्र लिय॥
गरजि गहर जल भरित हरित छिति छच किय।
मनहु दिसान निसानति आनि अनंग दिय॥ छं०॥ ३१॥

गीतामालची॥ द्रिग भरित [5]धूमिल जुरति भूमिल कुमुद न्निम्मल सोभिलं॥
द्रुम अंग वल्लिय सीस हल्लिय कुरलि कंठह कोकिलं॥
कुसुमंज कुंज सरोर सुब्भर सलित दुब्भर सद्दयं।
नद रोर दद्दुर मोर नद्दुर बनसि बद्दर बद्दयं॥ छं०॥ ३२॥
झम झमकि विज्जल काम किज्जल श्रवति सज्जल कद्दयं।
पप्पीह चौहति जीह जंजरि मोर मंजरि मंद्दयं॥
जगमगति झिंगन निसि सुरंभन भय अभय निसि हद्दयं।
मिलि हंस हंसि सुवास संदरि उरसि आनन निद्दयं॥छं०॥३३॥
[6]उट सास आस सुवास वासुर [7]छलित कलि वपु सद्दयं।
* करत आडंबर अमर प्रस्त जलधर धार पयथ्थयं॥
संयोग भोग संयोग [8]गामिनि विलसिराजन भद्दयं॥छं०॥३४॥

(१) मो. चत्रिक, चातिक। (२) ए. कृ. को.-डमर।
(३) मो.-प्रिय। (४) ए. कृ. को. नव।
(५) ए. कृ. को.-भूमिल। (६) ए. कृ. को. उत।
(७) ए. कृ. को. कलिल। * यह पंक्ति मो० प्रति के सिवाय अन्य प्रतियों में नहीं है।
(८) मो. मानिनि।

साटक ॥ जे [1]बिज्जु भभ्भल फुट्टि तुट्टि तिमिरं, [2]पुन अंधनं दुस्सहं ।
बुंदं घोर तरं सहंत असहं, वरषा रसं संभरं ॥
बिरहीनं दिन दुष्ट दारुन भरं, भोगी सरं सोभनं ।
मा मुक्के पिय गोरियं च अबलं, प्रीतं तया तुच्छया ॥छं०॥३५॥

शरद् ऋतु के आरंभ में तैयारी करके राजा का हंसावती के पास जाकर पूछना ।

दूहा ॥ सुनि [3]स्रावन बरिषा सघन । सुष निवास न्रिप कीय ॥
बर पूरन पावस कियौ । राज पयान सु दीय ॥ छं० ॥ ३६ ॥
हंसावति सुंदरि सुग्रह । गयौ प्रीय प्रथिराज ॥
धर उत्तिम कनवज्ज दिसि । चलन कहत न्रप आज ॥छं०॥३७॥

हंसावती के वचन ।

दिष्षि वदन पिय पोमिनी । फुनि जंपै फिरि बाल ॥
सरद रयन्नौ चंद निसि । कित लभ्भै छुटि काल ॥ छं० ॥ ३८ ॥

शरद् वर्णन ।

साटक ॥ पित्ते पुत्त सनेह गेह [4]गुपता, जुगता न दिष्या दने ।
[5]राजा छचनि साज राज छितिया, निंदायि नीवासने ॥
कुसुमेषं तन चंद न्रिमल कला, दीपाय वरदायने ।
मा मुक्के प्रिय बाल नाल समया, सरदाय दर दायने ॥छं०॥३९॥
दूहा ॥ आयौ सरद स इंद्र रिति । चित पिय पिया संजोग ॥
दिन दिन मन केली चढ़े । रस जु लाज [6]अलि भोग ॥छं०॥४०॥
कवित्त ॥ पिष्षि रयनि न्रिमल्लिय । फूल फूलंत भ्रमर धर ॥
स्रवन सबद नहिं सुझै । हंस कुरलंत मान सर ॥
कवल कद्रव विगसंत । तिनह हिमकर परजारै ॥
तुमहि चलत परदेस । नहीं कोइ सरन उबारै ॥

(१) मो.-बिज्जुल । (२) मो.-पुनंधन ।
(३) को.-सावन । (४) ए. कृ. को.- भुगता ।
(५) ए. कृ. को. राजा छत्र निसान (६) ए. कृ. को.-अति ।

निग्रहन रतैं भरपंच सर। अरि अनंग अंगै वहै ॥
जौ कंत गवन सरदै कहै। तौ विरहिनि सिष ह्वै दहै ॥छं०॥४१॥
द्रप्पन सम आकास। स्रवत जल अम्रत हिमकर ॥
उज्जल जल सलिता सु। सिहि सुंदर सरोज सर ॥
प्रफुल्लित ललित लतानि। करत गुंजारव [1]भंमर ॥
उद्दति सित्त निसि नूर। अंगि अति उमगि अंग वर ॥
तलफंत प्रान निसि भवन तन। देषत दुति रिति मुष जरद ॥
नन करहु गवन नन भवन तजि। कंत दुसह दारुन सरद ॥छं०॥४२॥
माधुर्य ॥ लहु वरन षट विय सत्त, चामर बीय तीय पयो हरे।
माधुर्य छंदय चंद जंपय, नाग वाग समोहरे ॥
अति मरद सुभगति राज राजति सुमति काम उमद्दयं।
ग्रह दीप दीपति जूप जूपति भूप भूपति सद्दयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
नव नलिनि अलि मिल अलिन अलि मिलि अलिनि अलिव्रतमंडियं॥
चक चकी चकित चकोर चष्पित चच्छ छंडित चंदयं।
दुज अलस अलसनि कुसुम अच्छित कुसुम मुद्दित मुद्दयं ॥
भव भवन उच्छव तरु असोकहि देव दिव्य निनद्दयं ॥छं०॥४४॥
नौरता मंचहि न्रपति राजत बीर झंझरि बग्गयं।
महि महिल लच्छिर सुच्छित अच्छिर सकति पाठ सु दुग्गयं ॥
अट्ठार भारह पुषित अच्छित अधर अम्रत भामिनी।
रस तीय राजन लहय सोजन सरद दीपक जामिनी ॥छं०॥४५॥
कवित्त ॥ नव नलिनी अलि मिलहि। अलिन अलिमिलि व्रत मंडै ॥
तनु न्रम्मल [2]ग्रह चंद। चष्प [3]चकोरति छंडै ॥
दुज अलसित वर निगम। कुसुम अच्छित मुद्रावलि ॥
[4]पिय नेह ग्रेहरचैं। बाल छुट्टै अलकावलि ॥
करि स्नान धूत बसतर रचैं। कंज वदन चिचंग चरि ॥
आनूप जूप अंजन रचै। बिना कंत तिय गुन सुगरि ॥
छं० ॥ ४६ ॥

(१) मो.-संभर। (२) ए. कृ. को.- वह।
(३) ए. कृ.-चकोरन। (४) ए.कृ. मो.-पित्र ग्रेह नेह रचैं।

चंद रयनि झिगमगी। सरित आकास अभासित ॥
पिया बदन सो चंद। दोइ कुच चिकुर प्रगासित ॥
खंजन नयन अलोल। कीर नासा [1]भ्रमल मुति ॥
उज्जल वस्त्र अनूप। पुहप भाजन रचना भति ॥
नव मास न्निमल सुंदरि सरस। नवल नेह नित नित भलौ ॥
चित चतुर रीति बुज्झै न्नपति। सरद दरद करि मति चलौ ॥
छं० ॥ ४७ ॥

हेमंत ऋतु आने पर राजा का रानी कूरंभा के पास जाकर पूछना और उसका मना करना।

दूहा ॥ हिम आगम वित्तें सरद। गवन चित्त न्नप इंद ॥
पुछन कुरंभी महल गय। सरद ग्रेह वर चंद ॥ छं० ॥ ४८ ॥

रानी का वचन और हेमंत ऋतु का वर्णन।

साटक ॥ हिमं वासुर सीत दिघ्घ निसया, सीतं अनेतं वने।
सेजं सज्जर बालया बनितया, आनंम आलिंगने ॥
यों बाला तरुनी वियोग करनं, नलिनी दहन्ते हिमं।
मा मुक्के हिमवंत मन्त गमने, प्रमदा निरालम्बनं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

रोला ॥ कुच वर जंघ नितंब निसा बहुत धन बड्डी।
लंक छीन उर छीन छीन दिन सीत सुचड्डी ॥
गिरकंदर तप जुगति जागि जोगीसर मंनं।
ते लभ्भे कविचंद वाम कामी सर धंनं ॥ छं० ॥ ५० ॥

कवित्त ॥ देह धरें दोगत्ति। भोग जोगह तिन सेवा ॥
कै वन कै बनिता। अगनि तप कै कुच लेवा ॥
गिरि कंदर अब पीन। पियन अधरारस भारी ॥
जोगिनीद मद उमद। कै छगन बसन [2]सवारी ॥
अनुराग बीत कै राग मन। बचन तीय गिर भरन रति ॥
संसार विकट इन विधि तिरय। इही विधी सुर असुर अति ॥ छं० ॥ ५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-भ्रमल। (२) ए. कृ. को. सचारी।

रोमावलि वन जुथ्थ। बीच कुच कूट मार गज ॥
हिरदै[1] उजल विसाल। चित्त आराधि मंडि सज ॥
विरह करन क्रीलई। सिद्ध कामिनी डरप्पै ॥
तो चलंत चहुआन। दीन छंडै पै रुप्पै[2] ॥
हिमवंत कंत मुक्कै न चिय। पिया पम्म पोमिनि परषि ॥
ग्रहि कंठ कंठ जठन[3] अवनि। चलत तोहि[4] लगिवाय रुष ॥छं०॥५२॥

न चलि कंत सुभचिंत। धनी बहु[5] चिंत प्रगासौ ॥
गह गहि ऐसौ प्रेम। सौज आनंद उहासौ ॥
दीरघ निसि दिन तुच्छ। सीत संतावै अंगा ॥
अधर दसन घरहरै। प्रात परजरै अनंगा ॥
[6]जा ऐनि रैनि हर हर जपत। चक्क सह चक्की कियौ ॥
हिमवंत कंत सुग्रह ग्रहति। हहकरंत फुट्टै हियौ ॥ छं० ॥ ५३ ॥

चोटक ॥ गुरु पंच सुभै दस मत्तपयो। श्रिय नाग ह=यौ हरबाहनयो ॥
इति छंद विछंद विलास लहै। तत चोटक छंद सुचंद कहै ॥ छं० ॥५४॥
दिव दुग्ग[7] निसा दिन तुच्छ रवै। जरि सीत बनं बनवारि जवै ॥
चक चक्कि चकी जिम चित्त भवै। नितवांम प्रिया मुष[8] मोरि ठवै ॥
छं० ॥ ५५ ॥

बिरही जन रंजन हारि भियं। घनसार मृगंमद पुंज कियं ॥
पहुपंकति पुंजति कन्त जियं। परिरंभन रंभन रे रतियं ॥
करि विभ्रम निभ्रम लग्ग तियं। .... ॥
छिन भाजत लाजत लोचनयं। तन कम्पत जम्पत मोचनयं ॥
छं० ॥ ५६ ॥

नव कुंडल मंडल कन्न रमै। कच अभ्रपटी जनु बीज भ्रमै ॥
कुसमावलि तुट्टि लवंग लगं। बरनं रचि छुट्टति पंति बगं ॥ छं० ॥ ५७ ॥

---

(१) मो.-हिरेदे उज्जल जल बिसाल चित्त आविति मंड गज। (२) मो.-रुक्कै
(३) ए. कृ. को.-अवत। (४) ए. कृ. को.-चलन तोहि लग्गीय रुष।
(५) मो.-वत्त। (६) ए. कृ. को.-जय नह रैनि।
(७) ए. कृ. को.-कोलि जत्रै। (८) ए. कृ. को.-मृदंमद।

श्रम बुंदति मुत्ति झरं उरनं। झलनी जनु गिम्ह सिवं सरनं॥
कटि मंडल घंटि रमन्नि रवै। सुरमंजु[1] मंजीर अमीय अवै॥
छं०॥ ५८॥
रति ओज मनोज तरंग भरी। हिमवंत महा रितराज करी॥
॥ छं०॥ ५९॥

शिशिर ऋतु का आगम।

दूहा॥ संगम सुष सुत्तौ न्रपति। ग्रिह विन एक न होइ॥
सुनि चहुआन नरिंद वर। सीत न मुक्कै तोइ॥ छं०॥ ६०॥
हिम वित्यौ आगम शिशिर। चलन चाइ चहुआन॥
सुनि पिय आगम शिशिर कौ। क्यों मुक्कै ग्रिह थान॥ छं०॥ ६१॥
साटक॥ [3]रोमाली वन नीर निझ[4] चरयौ[5] गिरिदंग [6]नारायने॥
पव्वय पीन कुचानि जानि मलया, फुंकार झुंकारए॥
सिसिरे सर्वरि वारुनी च विरहा माइह मुव्वारए॥
मांकंते त्रिगवद्ध मध्य गमने, किं दैव उच्चारए॥ छं०॥ ६२॥
*दूहा॥ अरिय सघन औतन दिसा। चलन कहत चहुआन॥
रतिपति चल होइ पिथ्थ गय। ग्रह हमीर ग्रिह जानि॥
छं०॥ ६३॥
कवित्त॥ आगम फाग अवंत। कंत सुनि मित्त सनेही॥
सीत अंत तप तुच्छ। होइ आनंद सब ग्रेही॥
नर नारी दिन रैनि। मैंन मदमाते डुल्लैं॥
सकुच न हिय छिन एक। बचन मनमानै बुल्लैं॥
सुनौ कंत सुभ चिंत करि। रयनि गवन किम कीजइय॥
कहि नारि पीय विन कामिनी। रिति ससिहर किम जीजइय॥
॥ छं०॥ ६४॥

---

(१) ए. कृ. को.-पुंज। (२) ए. कृ. को. गनि
(३) ए. कृ. को. रोमावालि। (४) ए. कृ. को. निचयो।
(५) ए. कृ. को.-गिरिदंत। (६) ए. कृ. को. नारायते।
* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

हनुफाल ॥ गुर मरुत चामर भेद । लहु वरन चिच चिच इंद ॥
विवहार पय पय बंद । इति हनूमानव छंद ॥ छं० ॥ ६५ ॥
रिति ससिर सरवरि सोर । परि पवन पत्त झकोर ॥
बन चिगुन तुल्ल तमीर । घन अगर गंध मिचीर ॥ छं० ॥ ६६ ॥
भुज्ञ भोज व्यंजन भोर । लव अमर तिष्य कटोर ॥
रस मधुर मिष्टित थौर । रति रसन रमनति जोर ॥ छं० ॥ ६७ ॥
काल कलस छिति छिलीर । बर स्याम गुन अति मोर ॥
परि पेम पेम सजीर । अवलोक लोचन चोर ॥ छं० ॥ ६८ ॥
सुष संत सुक्कति सकौर । .... ॥
रस रमति विध्य अपत्ति । ममों भुवन बनि सुरपत्ति ॥छं०॥६९॥
इति ससिर सुष विलसंत । रिति राइ आय वसंत ॥
षटु रित्तु षट रमनीय । रचि चंद बरनन कीय ॥ छं० ॥ ७० ॥
तरु लता गहवरि फेरि । प्रति कुंज कुंजन हेरि ॥
... . । .... ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ कुंज कुंज प्रति मधुप । पुंज गुंजत बैरनि धुनि ॥
ललित कंठ कोकिल । कलाप कोलाहल सुनि सुनि ॥
राजत वन मंडित । पराग सौरंभ सुगंधिन ॥
बिकसे किंसुक विहि । कदंब आनंद विविध धुनि ॥
परिरंभ लता तरवरह सम । भए समह बर अनग तिथि ॥
विच्छुरन छिनक संपत्ति पति । कंत असंत बसंत रिति ॥छं०॥७२॥

पृथ्वीराज का कविचन्द से पूछना कि वह कौनसी ऋतु है जिसमें स्त्री को पति नहीं भाता।

दूहा ॥ षट रिति बारह मास गय । फिरि आयौ रु बसंत ॥
सो रिति चंद बताउ मुहि । तिया न भावै कंत ॥ छं० ॥ ७३ ॥

(१) ए. कृ. को. सब।

कविचन्द का कहना कि वह ऋतु स्त्री का ऋतु समय (मासिक धर्म्म) है।

जौ नलिनी नीरहि तजै। सेस तजै सुरतंत ॥
जौ सुवास मधुकर तजै। तौ तिय तजै सु कंत ॥ छं० ॥ ७४ ॥
रोस भरै उर कामिनी। होइ मलिन सिर अंग ॥
उहि रिति पिया न भावई। सुनि चुहान चतुरंग ॥ छं० ॥ ७५ ॥

रानियों के रोकने पर एक साल सुख सहवास कर पृथ्वीराज का पुनः बसंत के आरंभ में कन्नौज को जाने की तैयारी करना।

चौपाई ॥ षट्ट सु [1]वरनीं विध षट मासं। रष्षे बर चहुआन विलासं ॥
ज्यों भवरी भवरं कुसुमंगा। त्यों प्रथिराज कियौ सुष अंगा ॥
छं० ॥ ७६ ॥

दूहा ॥ वर वसंत अग्गें जिपति। सेन सजी बहु भार ॥
दिसि कनवज वर चढ़न कों। चितवति संभरिवार ॥ छं० ॥ ७७ ॥
कै जानै कविचंदई। कै प्रयाम प्रथिराज ॥
सित सामंत सु संमुहै। पंगराय ग्रह काज ॥ छं० ॥ ७८ ॥

गुरुराम का कूच के लिये सुदिन सोधना।

मतौ मंडि संभरि [1]न्नपति। चलन चिंत [2]षहु अज्ज ॥
दिन अप्यौ गुरराज मिलि। चिंत चलन कनवज्ज ॥ छं० ॥ ७९ ॥

राजा का रविवार को अरिष्ट महूर्त में चलने का निश्चय करना।

कवित्त ॥ चैत तीज रविवार। सुद्द संचज्यौ सूर जब ॥
एकादस ससि होइ। छंडि दस थान मान तब ॥
वर मंगल न्रप राशि। पंच अक्रूर मेळ वर ॥
दुष्ट भाव चहुआन। राशि अष्टम ढिल्ली धर ॥

(१) ए. कृ. को.-वरुनी। (१) मो.-नृपहु। (२) मो.-वर।

भर रासि राइ षोटौ न्रपति। देषि पुच्छि चहुआन चलि॥
भावी विगत्ति मति उरह उर। जु कछु कह्यौ कविचंद षुलि॥
छं० ॥ ८० ॥

पृथ्वीराज का कैमास के स्थान पर जैतराव को राजमंत्री नियत करना।

दूहा॥ नन मानी चहुआन न्रप। भावी चिंति प्रमान॥
सलष बोलि मंतह न्रपति। मत कैमासह थान॥ छं० ॥ ८१ ॥

कवित्त॥ मंचिय थपि पामार। मंति कैमास थान वर॥
ता मंची पन अप्पि। सूर सामंत मंझ भर॥
मंच दिट्ठ दिढ़ वाच। काछ दिट्ठौ दिढ़ सोभै॥
लोह दिट्ठ जुध काल। सामध्रम्मह दिढ़ सोभै॥
पुरुषह सु दिट्ठ काया प्रचंड। दिढ़ दुरग्ग भंजन सुहर॥
गुरराज राम इम उच्चरै। सो मंची न्रप करन धर॥ छं० ॥ ८२ ॥

राज्य मंत्री के लक्षण।

सो मंची न्रप करिय। पुव्व बंसह सु वीय सुधि॥
दूत भेद अनुसार। मोह रस बसिन ईछ सुधि॥
न्याय ध्रंम अनुसार। न्याय नंदन परगासै॥
रोगजीत नन होइ। तान चिय लछि अभ्यासै॥
परधान ध्यान जानै सकल। अध्रम द्रव्य नन संग्रहै॥
पम्मार सलष मंची न्रपति। बल गोरी मुष संग्रहै॥ छं० ॥ ८३ ॥

राजा का जैतराव से पूछना कि भेष बदल कर चलें या योंही।

सो मंची पुच्छौ न्रपति। चलन चाइ चहुआन॥
दिसि कनवज धर दिष्षियै। पंग जोग परमान॥ छं० ॥ ८४ ॥

छग्गल पान नरिंद वर। अदभुत चरित विराज॥
चंद भेष चहुआन कौ। षेट सुपत्तौ साज॥ छं० ॥ ८५ ॥

जैतराव का कहना कि छद्मवेष में तेजस्वी कहीं नहीं छिपता इससे समयोचित आडंबर करना उचित है।

चौपाई ॥ राजन चंद वदन ढंकि किन्न । छिपै न छिप कर सूर सघन्न ॥
छिप्पत कबहुँ न मोमभ्भर तिन । रंकति न छिपै वित परघन घिन॥
छं० ॥ ८६ ॥

सुभग मन मधि विदुष सु कव्वी । देषि सुजान न छिपै गुनव्वी ॥
गैपति मैपति समद न छिप्पै । न [1]छिप्पै न रज रजपूत सुदिप्पै ॥
छं० ॥ ८७ ॥

कवित्त ॥ जो आडंबर तजिय । राज सोभै न राज गति ॥
आडंबर बिन भट्ट । कव्वि पुनगार मेट यति ॥
आडंबर बिन नट्ट । गोरि गावै नह रुकहि ॥
आडंबर विन वेस । रूप रत्तौ न सोय कहि ॥
जन एक सुभर वंदन विदुष । हरुअत आडंबरह विन ॥
पर धर नरिंद बंदन मतौ । करि आडंबर बीर तन ॥ छं० ॥ ८८ ॥

पुनः जैतराव का कहना कि मुझसे पूछिए तो मैं यही कहूंगा कि सब सेना समेत चल कर यज्ञ उथल पथल कर दिया जावे।

दूहा ॥ मत पुच्छै चहुआन मुहि । सज्जि सवै चतुरंग ॥
अजै विजै जानै नहीं । जग्य विनट्टै पंग ॥ छं० ॥ ८९ ॥
तुच्छह सथ्थ नरिंद सुनि । जो जानै पहुपंग ॥
बंधि देइ करतार अरि । घोर लग्ग निय संग ॥ छं० ॥ ९० ॥
अरि भंजै भंजौ सु पुनि । सम वरि समर सु पंग ॥
जौ पुच्छै चहुआन बर । [2]तौ सज्जौ चतुरंग ॥ छं० ॥ ९१ ॥

गोयन्द राय का कहना कि ऐसा करना उचित नहीं क्योंकि शहाबुद्दीन भी घात में रहता है।

मतौ गरुअ गोयंद कहि । वर ढिल्ली सुर पान ॥

---

(१) ए. कृ. को.-नन छिपै रजपूत मरकति वह दिप्पै। (२) ए. कृ. को.-बर।

हथ्थ वीर विग्गहह चषि। धर लग्गौ सुरतान ॥ छं० ॥ ९२ ॥
जिम लग्गो चाखेट चगि। ढिल्ली वै सुरतान ॥
तिम वुझाय वुझि चग्गिया। जिम 'घट्ट' जम पानि ॥ छं० ॥ ९३ ॥
चित्त चलन चहुआंन कौ। जिन चप्पी मति नन्ह ॥
सब भृत मझझनटारि लष। न्टप ढुंढिय धन लिन्ह ॥ छं० ॥ ९४ ॥

अन्त में सब सेना सहित रघुवंश राय को दिल्ली की गढ़ रक्षा पर छोड़कर शेष सौ सामंतो सहित चलना निश्चय हुआ।

सौ समंत छ सूर भय। ते इक एकह देह ॥
जोगिनपुर रघुवंश सौ। सो रष्यौ तल सेह ॥ छं० ॥ ९५ ॥
तत्त मत्त चालन कियौ। महल विसरजन कीन ॥
सत्त घरी घरियार वजि। वर प्रस्थान सुदीन ॥ छं० ॥ ९६ ॥
एक वरष प्रस्थान ते। किय प्रस्थान सुपत्त ॥
ग्यारह से कनवज्ज कौ। चैत तीज रविरत्त ॥ छं० ॥ ९७ ॥

रात्रि को राजा का शयनागार में जाकर सोना और एक अद्भुत स्वप्न देखना।

कवित्त ॥ विपन महल चहुआन। राज प्रस्थान सुपत्तौ ॥
निसा निद्र उत्तरिय। सघन उत्तर्यौ सु रत्तौ ॥
बीज तेज सूभ्झंत। तमत उठ्ठौ व्रत भारी ॥
निसा पत्ति सुर आय। बोल वर वर उच्चारी ॥
चरि चित्त चित्त चहुआन करि। बान विषम गुन बंधयौ ॥
वल श्रवन दिष्ट संभरि धनी। सुर चिंतह लष संधयौ ॥
छं० ॥ ९८ ॥

प्रथमं स्वर चहुआन। बान संध्यौ गुन संगह ॥
विय अलुझ सुर बोलि। चित्त मुक्कौ तिन संगह ॥

(१) मो.-हद्दे।

तीय बचन अपि जीह । जीव सथ्यह लुक छुट्टिय ॥
कर धारहु मन राज । कह्यौ छंदे अंग जुट्टिय ॥
मिस पतन भई जोगय विपन । हंकाऱ्यौ दुजराज बर ॥
परिवार प्रात मझ्झै सुबर । रत्त मार बर उग्गि धर ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कविचन्द का उस स्वप्न का फल बतलाना

सु गुन विह्न कविचंद । अग्र भय छंद विचारिय ॥
[1]सामि हथ्थं जस चढ़न । सुभ्रत आतुर रन पारिय ॥
कलह केलि आगंम । सामि परिगह आहुट्टियं ॥
बल सगपनं किय दान । हीन हीनह अप छुट्टिय ॥
कट्टई चंद कवि मुष्य तत । आरुष राज न मानइय ॥
सो भ्रत्त गति न्त्रिमान सति । नन मिट्टै जुग जानइय ॥
छं० ॥ १०० ॥

दूहा ॥ नहिं बरज्यो कविचंद न्त्रप । कहि सुनाय सब सथ्थ ॥
ज्यों विधिना बर न्त्रिमयौ । [2]जम कग्गद चढ़ि हथ्थ ॥छं०॥१०१॥

११५१ चैतमास की ३ को पृथ्वीराज का कन्नौज को कूच करना

ग्यारह सै एकानवै । चैत तीज रविवार ॥
कनवज देषन कारनें । चल्यौ सु संभरिवार ॥ छं० ॥ १०२ ॥

पृथ्वीराज का सौ सामंत और ग्यारह सौ चुनिंदा सवारों को साथ में लेकर चलना।

कवित्त । ग्यारह से असवार । लष्ष लोले मधि लिषै ।
इसे सूर सामंत । एक अरि दल बल भष्षै ॥
[3]तनु तुरंग बर वज्र । बज्र ठेलै बज्रानम ॥
बर भारथ सम सूर । देव दानव मानव नन ॥
नर जीव नाम भंजन भरिय । रूद्र भेस दरसन्न न्त्रपति ॥
मेटयौ सु षह भर सम्भई । दिपति दीप दिवलोक पति ॥छं०॥१०३॥

(१) ए. कृ. को.-स्वामि। (२) मो०. सं। (३) ए० कृ० को०-तनु तन गव्वर बज्र ।

चल्यौ सु संभरिवार। सथ्थ सामंत सूर भर॥
हनिग राज कयमास। अवनि आकंप राज बर॥
सर बर संभरिवार। साहि बंध्यौ गज्जनवै॥
हय गय नर भर बीय। सिद्धि छंड्यौ पुनि है वै॥
सामंत सूर सथ्थह न्रपति। दैव वत्त कारन सुगति॥
कनवज्ज राज जग्गह कलन। चल्यौ राज संभरि सुभति॥
छं० ॥ १०४॥

कनवज्जह जयचंद। चल्यौ दिल्लीपति पिष्षन॥
चंद बरद्दिय तथ्थ। सथ्थ सामंत सूर घन॥
चाहुआन कूरंभ। गौर गाजी बड़गुज्जर॥
जादव रा रघुवंस। पार पुंडीरति पष्षर॥
इत्तने सहित भूपति छक्यौ। उड़ी रेन छीनौ नभौ॥
[१]इक लष्ष लष्ष बर लेषिए। चले सथ्थ रजपूत सौ॥छं०॥ १०५॥

दूहा॥ करि सुनंद संभरि सु पहु। चढ़िक्रम्यौ [२]लय मग्ग॥
हर हर सुर उच्चार मुष। उर आराधन लग्ग॥ छं० ॥ १०६॥

साथी सामंतों का ओज वर्णन।

कवित्त॥ एक सत्त वल सूर। एक वल सहस पानि बर॥
एक अयुत साधंत। [४]दुरद रद दहन तत्त कर॥
एक लष्ष आरुद्ध। जुद्ध जम जेम भयंकर॥
एक कोटि अंगवन। धरत हर उर सु ध्यान बर॥
रवि तन समान तन उज्जले। सत षट अग्ग सु बीर तन॥
तिन सथ्थ सज्जि संभरि स पहु। तिथ्थ क्रम न विच्चारअन॥
छं० ॥ १०७॥

सामंतों की इष्ट आराधना॥

एक ईस आराधि। एक उमया आरोहन॥
[५]एक दुमनि चित जपत। एक गजवदन प्रमोहन॥

(१) मो० करन (२) ए. कृ. को.-एकेक लष्ष वर लिषीए।
(३) ए. कृ. को.-मय। (४) ए. कृ. को.-डर। (५) मो.-एकदिन मन।

एक सट्ठि चव रचित । एक पंचास उभय रत ॥
एक हनू हिय ध्यान । एक भैरव घोरत[1] मत ॥
इक जपत अंत अंतक मनह । एक पुरंदर रत्त उर ॥
इक उर विदार विहर मिरग । धरत ध्यान संकाल मुर ॥
छं० ॥ १०८ ॥

राजा के साथ जानेवाले सामंतों के नाम और पद वर्णन ।

भुजंगी ॥ गुरुं अंत मत्तं [2]पयं पाय पायं । असी मत्त सब्बै गयंनं सठायं ॥
लहू षोडसं[3]गोचवं अट्ठ सायं । चवै चंद छंदं भुजंगंप्रियायं ॥
छं० ॥ १०९ ॥

चल्यौ जंगलीराव कनवज्ज पथ्थं । चले सूर सामंत सथ्थं [4]समथ्थं ॥
चल्यौ सथ्थ सामंत कन्हं समथ्थं ॥ जिनै बंदियं सूर संग्राम हथ्थं ॥
छं० ॥ ११० ॥

विरद्दं नरंनाह उग्गाह सोहं । कुल्लं चाहूआनं चषं पट्ट रोहं ॥
गुरू राव गोयंद बंदै सु इंदं । सुतं मंडलीकं सबै सेनचंदं ॥
छं० ॥ १११ ॥

धरै धूंम सामित्त सा रायलंगा । सुतं राव संयम्म रन में अभंगा ॥
सदा सेवसों चित्त हनमंत बीरं । रमै रोस रंगं तवै आय भीरं ॥
छं० ॥ ११२ ॥

चल्यौ स्वामि मन्नाह सा देवराजं । सुतं बग्गरीराव सामंत[5]जाजं ॥
सदा इष्ट आभिष्ट स्वांमित्त चित्तं । वियं वीर चित्तं सु आनै न हित्तं ॥
छं० ॥ ११३ ॥

रनंधीर पावार सथ्थं सलष्षं । चल्यौ जैत[6]सिंघं सु कंकं अलष्षं ॥
भरं आमजहों सु षीची प्रसंगं । करं कच्छवाहं सु पज्जून संगं ॥
छं० ॥ ११४ ॥

बलीभद्र कूरंभ पाल्हंन सथ्थं । करंबाह कथ्थं सु कंकं अकथ्थं ॥
नरं निड्ढुरं धज्ज कमधज्जराजं । वडंगुज्जरं राम सो सामि काजं ॥
छं० ॥ ११५ ॥

(१) मो.- मन । (२) ए. कृ. को-पाद्य । (३) ए. गोचर ।
(४) कृ. को.-सनथ्थं । (५) मो.-राजं । (६) मो.-संगं ।

सदा ईस सेवं सुरं अत्तताई। चले चहु हम्मीर गंभीर भाई॥
वरसिंघ दाहिम्म अंघार भीमं। बरं तास चंपै न को जोर सीमं॥
छं० ॥ ११६ ॥

सज्यौ वाह पग्गार उत्तिग्ग मध्यं। चल्यौ चंद पुंडीर संग्राम सध्यं॥
वर चाहुआनं बरस्सिंघ बीरं। हरस्सिंघ संगं सु संग्राम धीरं॥
छं० ॥ ११७ ॥

सज्यौ राव चालुक्क सारंग संगं। सनं विभ्भराजं सु बंधं अभंगं॥
सथं जागरं सूर सागौर गोरं। बरं बाररंसिंह सा सूर[1]घोरं॥
छं० ॥ ११८ ॥

चली बाररं रेम रावत्त रामं। दलं दाहिमा रूव संग्राम धामं॥
निरब्बान बीरं सु नारेन नीरं। समं सूर चंदेल भौंहा सधीरं॥
छं० ॥ ११९ ॥

बडगुज्जरं कंक राजं कनक्कं। सहं सूर सामंत बंधैति श्चंकं॥
चज्यौ माल चंदेल भट्टी सु भानं। समं सामलं सूर कमधज्जरामं॥
छं० ॥ १२० ॥

बरं सिंघ बीरं सु मोहिल्ल बंधं। त्वपं राय बंधं बरंनं सुमिद्धं॥
दलं देवरा देवराजं सु सोहं। सहा मंडलीराव सौहं अरोहं॥
छं० ॥ १२१ ॥

धनू धावरं धीर पांवार मध्यं। चल्यौ तोमरं पाहरा[1]बारि वथ्यं॥
सज्यौ आवली अल्ह चाल्लुक्क भारौ। बलं बग्गरी वाय षेता षंगारौ॥
छं० ॥ १२२ ॥

चली राय बीरं सु सारंग गाजी। परीहार राना दलं रूव राजी॥
बरं बीर जादौं भरं भोजराजं। समं सांपुला सौह सामल्ल साजं॥
छं० ॥ १२३ ॥

कमंधज्ज बीकंम साद्ल्ल मोरी। अरी ठंठरी टाक मारंन[2]ओरी॥
जयंसिंघ चंदेल वारू कंठेरौ। भरं भीम जादौं अरी गो उजेरौ॥
छं० ॥ १२४ ॥

(१) ए. कृ. को.-घोरं।
(२) मो.-सथ्यं।

(१) ए. कृ. को.-वधि।
(२) ए. कृ. को.-मोरी।

सुतं नाहरं परिहारं महनं । समं पीप संग्राम साहं गहनं ॥
वरं बारडं मंडनं देवराजं । रनं अचलं पाय अचलेस साजं ॥
छं० ॥ १२५ ॥

चल्यौ कन्नराराव चालुक्क बंभं । सुतं भीम संगं सदा देव मंभं ॥
कमधज्ज आरज्ज आइं कुमारं । भरं भीम चालुक्क बीरंवरारं ॥
छं० ॥ १२६ ॥

मनै लष्षनं लष्ष बघ्घेल एकं । सुतं पूरनं [1]सूर बंदे सुतेकं ॥
परीहार तारन तेजल्ल डोडं । अचल्लेस भट्टी अरीसाल सोढं ॥
छं० ॥ १२७ ॥

बड़ं गुज्जरं चंद्रसेनं सुधीरं । सुतं कठ्ठियं सिंघ संग्राम बीरं ॥
विजैराज बघ्घेल गोहिल्ल चाचं । लषंनं पवारं नही क्रूर राचं ॥
छं० ॥ १२८ ॥

भरं रंघरी भ्रम्म सामंत पुडीरं । भिरै सूर भग्गै नही सारभीरं ॥
कमध्धज्ज जैसिंघ पुंज पहारं । भरं भारथंराय भारथ्थ भारं ॥
छं० ॥ १२९ ॥

सुतं आगरं केहरी मल्हनासं । बँधंनौरवं कट्ट संग्राम बासं ॥
चल्यौ टांक चाटा सु रावत्त राजं । हरी देवतीराइ जादों सु जाजं ॥
छं० ॥ १३० ॥

वली राइ कच्छं [2]ओहट्टी गँभीरं । हुअं हाहुलीराव सथ्थं हमीरं ॥
पहू पुहकरंराव कन्हं सुराजं । दलं दाहिमा जंगली राय साजं
छं० ॥ १३१ ॥

मुषं पंच पंचाइनं चाहुआनं । सुअं पारिहारं रनंबीर रानं ॥
रसं सूर सामंत सथ्थं ससष्षं । बरं लष्षियं एक एकं मुलष्षं ॥
छं० ॥ १३२ ॥

हनूफाल ॥ इक सेवक छिंगन कंन्ह तनौ । निरष्षे कविचंद पुरष्ष घनौ ॥
कह अग्गर सुभ्भट सत्त जुतं । कनवज्ज चल्यौ नृप सोमसुतं ॥
छं० ॥ १३३ ॥

(१) ए. कृ. को.-पूर (२) को.-एहट्टी ।

पृथ्वीराज का जमुना किनारे पड़ाव डालना।

कवित्त ॥ तट कालिंदी तीर। कियौ मुक्काम दिलेसुर॥
अवर सूर सामंत। सब्ब उत्तरे आय तुर॥
समै निसा निज सिवरि। बोल सामंत सूर सब॥
मधूसाह परधान। राज उच्चैर सूर तब॥
तीरथ बन अंतर धरिय। अंतर बेध सुगंग धर॥
आवासि मंत कारन सुनहु। चलौ सुभट्ट समंग भर॥छं०॥१३४॥

दूहा॥ तट कालिंद्री तहँ विमल। करि मुकाम न्रप राज॥
सथ्थ सयन सामंत भर। सूर जु आये साज॥ छं० ॥ १३५ ॥

कवित्त॥ अप्प जाति विन सब्ब। चले सामंत सथ्थ तब॥
पहु निकट्ट कनवज्ज। ताहि प्रछन्न गवन कब॥
मधूसाह गुरराम। रहे दिल्ली रह कज्जं॥
गुर बीठल समदेव। अनुज रामह सथ सज्जं॥
अह अट्ट राज आवागमन। सजौ सेन सथ्थें सुविधि॥
कज दान द्रव्य गंगह सजौ। जिम सिभझै तीरथ्थ सिधि॥
छं० ॥ १३६ ॥

जमुना के किनारे एक दिन रात विश्राम करके सब सामंतों को घोड़े आदि बांटकर और गढ़रक्षा का उचित प्रवन्ध करके दूसरे दिन पृथ्वीराज का कूच करना।

दूहा॥ [1]किय आयस संभरि स पहु। सुनौ सगुर बर साह॥
सत क्रम्मेलक सथ्थ घन। सजौ सक्र मन राह॥ छं० ॥ १३७॥
एकादस सर एक न्रप। सौ सामंत छ सूर॥
दिसि कनवज दिल्ली न्रपति। चैतह वज्जि [2]स तूर॥ छं०॥ १३८॥

कवित्त॥ पारिहार रनबीर। राजा अग्गें आभासिय॥
प्रछन्नह कनवज्ज। तिथ्थ संक्रमन सु भासिय॥

(१) मो.-कार (२) मो..सतूर।

साज सब्ब बर [1]तास। भरौ वासन द्रव रज्जिय॥
अवर सब्ब परिहार। काज भोजन सथ सज्जिय॥
साहनी सहि जगमाल तहँ। देहु सबन सामंत हय॥
सारङ्ग सित्त तेजक्क हय। सजे सब्ब परकार तय॥ छं०॥ १३९॥

दूहा॥ बोलि साहनी सोच मन। दल लष्षन अस लज्ज॥
सामंतन कारन विलहन। समपि समर जस कज्ज॥ छं०॥ १४०॥
प्रथम संबोधे सथ्थ सह। सुत दुज रष्षे साह॥
जाम सेष रजनी चल्यौ। सिलह सु सज्जी ताह॥ छं०॥ १४१॥

पृथ्वीराज का नाओं पर यमुना पार करना।

इन प्रपंच भुअपति चल्यौ। अरु कविचंद अनूप॥
जमुना [2]नावनि उत्तरिय। निकट महल्ल अनुरूप॥ छं०॥ १४२॥

पृथ्वीराज के नांव पर पैर देते ही अशुभ दर्शन होना।

कवित्त॥ चढ़त राज प्रथिराज। सगुन भय भीत उपन्नौ॥
स्याम अंग तन छिद्र। कलस संमुह संपन्नौ॥
एक अंग तिय सकल। एक आभिस भेस बर॥
एक अंग शृंगार। एक अंगह सुंदर [1]नर॥
दिष्षौ सु नयन राजन रमनि। पुच्छि वत्त धारह धनिय॥
शृंगार बीर दुअ संचरहि। अब्बूवै अप्पन भनिय॥ छं०॥ १४३॥

नांव से उतरने पर एक स्त्री का मिलना।

दूहा॥ तोन बंधि भुअपति उभय। अरु कविचंद अनूप॥
जमुन उतरि नावह निकट। मिलिय महिल इन रूप॥ छं०॥ १४४॥

उक्त स्त्री के स्वरूप का वर्णन।

कवित्त॥ पानि नाल दालिमी। हास मुष नैन रोस निज॥
उरसि माल आ झूल। कमल कनयर सिरसी रज॥

(१) ए. कृ. को.-ताह। (२) मो.-नावसु।
(१) ए. कृ. को.-बर।

वाम हेम आभंन। लोह दच्छिन दिसि मंडिय ॥
अद्ध केस सलबंध। अद्ध [1]मुकलित तिहि छंडिय ॥
विपरीत पीत अंबर पहरि। पिष्षि राज अचरिज्ज करि ॥
किन महिली किन घर न सुबर। किन सु राज अरधंग धरि ॥
छं० ॥ १४५ ॥

हनूफाल ॥ मिलि महिल मगुन सरूप। द्रग अप्प निरषत भूप ॥
दछि दोर नालि सु लीन। कर वाम समकर भीन ॥ छं० ॥ १४६ ॥
अधकेस मुकुलित संधि। [2]अध कुंत लंकल बंधि ॥
अवतंस इक श्रव लोन। दिसि कंक आसिय वोन ॥ छं० ॥ १४७ ॥
द्रिग वाम अंजन दीन। दछि नेंन नागवि कीन ॥
सल वाल भाल सुपंत्ति। परसात कंकि [3]षत्ति ॥ छं० ॥ १४८ ॥
मुष हास नेंन विरोस। [4]नासाग्र उग्रन जोस ॥
कर रतन दच्छिन राज। पहु पानि वल्लिय बाजि ॥ छं० ॥ १४९ ॥
मुकतावली अध सेत। अध लाल माल मवेत ॥
दुति बरन भूषन रूप। आलंक कलसा नूप ॥ छं० ॥ १५० ॥
अधसेत आसुरि स्याम। रत पीत अंबर काम ॥
मुर गुनिय जा तिल तंत। सिर कमल कल हय यंत ॥ छं० ॥ १५१ ॥
तंडीव तरल तरंग। आलंक तंड सुरंग ॥
अध मत्त गवन अनूप। अध चंचलं मद जप ॥ छं० ॥ १५२ ॥
पद जेहरी धरि हेम। क्रम क्रम्यौ उरजत नेम ॥
सच साष वाम सु पुल्लि। पद दच्छिनी क्रत गुल्लि ॥ छं० ॥ १५३ ॥
को महिल को वर गेह। पुछि राज अचरिज एह ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ १५४ ॥

राजा का कवि से उक्त महिला के विषय में पूछना।

दूहा ॥ इहि बिधि नारि पयान मिलि। मुष कल रत्त फुनिंद ॥
उद्दिम आदर चलिय भूप। तव नइ बुभिभय चंद ॥ छं० ॥ १५५ ॥

---

(२) मो.-मुक्कित बर। (१) ए. कृ. को.-धर।
(२) ए. कृ. को.-पत्ति। (३) ए. कृ. को.-नासाग्र उग्र उग्गन जै ।

*कहै चंद नृप ईस सुनि। दरस देवि दिय तोहि ॥
अग्गि भंजि अरि गंजिकै। दुलह संजोगिय होइ ॥ छं० ॥ १५६ ॥

राजा का कविचंद से सब प्रकार के सगुन असगुनों का फल वर्णन करने को कहना।

बहुरि सगुन राजन्न हुअ। फल जंपै कविचंद ॥
उत्तिम मद्धिम विवह परि। कहि समझावत [1]छंद ॥ छं० ॥१५७॥
पद्धरी ॥ चहुआन चवै सुनि चंद भट्ट। संक्रमन [2]मग्ग उहछंग थट्ट ॥
तुम लहौ अर्थ विद्या सु सार। जंपौ सु सगुन सब्बै प्रचार ॥
छं० ॥ १५८ ॥

कविचंद का नाना प्रकार के सगुन असगुनों का वर्णन करना

कविचंद कहै सुन दिल्लिराज। विधि कहौं सगुन सब्बें सु साज ॥
दष्षिनहि वादि वामंग वादि। सम थान देवि उत्तिम उमादि ॥
छं० ॥ १५९ ॥
अति बृद्धि रिद्धि [3]अप्पै सु लोय। जस कुसल सुफल पंथी सजोइ ॥
सुर दून तीन दाहिनौ देय। वज्जंत गमन पथिकं परेय ॥
छं० ॥ १६० ॥
मंडलह स्वर तरि संभ सद्दि। मुक्कंत सीम पंथिक परद्धि ॥
वायंब हुंत दष्षिन प्रवेस। ताराय ताम जंपे सु तेस ॥
छं० ॥ १६१ ॥
एकीक कुसल दुअ कुसल काज। [4]तीसरी होत फल रिद्धि राज ॥
दाहिनौ हुंत दिसि वाम आय। पंथी गवंन बरजंत ताइ ॥
छं० ॥ १६२ ॥
दूसरी घात बंधनह हत्त। तीसरी गवन [5]सूचंत मत्त ॥
ताराय उंच फल उंच [6]देस। मद्धिम्म अधम अद्दी सु [7]तेस ॥
छं० ॥ १६३ ॥

---

*यह दोहा मो. प्रति में नहीं है। (१) ए. कृ. को.-चंद।
(२) ए. कृ. को.-लग्ग। (३) ए. कृ. को.-अप्पै। (४) ए. कृ.-तीसरी।
(५) मो.-सयूंत। (६) ए. कृ को.- देह। (७) ए. तेयं। को. मो. नेस।

दष्षिनी सगुन सुर दष्षि चारि। बांईय वाय प्रसरंत रारि॥
कारज्ज सिद्धि सूचंत ताम। विपरीत सुफल विपरीत काम॥
छं० ॥ १६४ ॥

सुर एक एक कंटक अरोहि। अंगार तूर भसमं वरोहि॥
सूकें सु कट्ठ गोवर सु हंडि। आहट्ठि सद्दि गुनयंग छंडि॥
छं० ॥ १६५ ॥

उत्तरै तार सद्दै सु सद्द। पूरन्न चित्त कारिज्ज मंद॥
आवंत होय जो ग्रेह नाम। वांईय सद्दि सिद्धंत काम॥
छं० ॥ १६६ ॥

केदार कूप नै तट्टवाय। परहरै सिद्ध वंछै सु जाय॥
तीतरह षरह नाहर जंबुक। सारस्स चिल्लह चाचिग अलूक
छं० ॥ १६७ ॥

कपि कंठनील सुक सद्धि नाम। दिस संति सुष्ष पूरंत वाम॥
पंचाइन दिस दाहिन प्रचार। सादंत अर्थ दष्षित सचार॥
छं० ॥ १६८ ॥

सूचंत सुभय दारुन्न सत्थ। पति सथ्थ निद्धि निंदं अतित्थ॥
चै पंच सत्त एकं उभार। पहु काल म्रग्ग दाहिन सुचार॥
छं० ॥ १६९ ॥

भोजनं पच्छ वाईय माल। पूरंत अर्थ अर्थीव ढाल॥
एकलौ असित म्रग जम्म रूप। बूडंत किरनि अंतकह जूप॥
छं० ॥ १७० ॥

निक्काम सगुन जो होइ सिद्धि। प्रावेस सोय विपरीत रिद्धि॥
सद्दै जो सिवा सद्दह कराल। वाईंय दिसा सुभ भेव ढाल॥
छं० ॥ १७१ ॥

चाचिग्ग निकुल अज भारद्वाज। चामर सु छत्त वीणा सवाज॥
भृंगार बार विरही कनक। दुर्वास[1] दद्धि सुरसुर[2] धनंक॥
॥छं०॥१७२ ॥

(१) ए. कृ. को.-दुर्वास। (२) मो.-सुरि।

दृप्यन कलाल वेसाह गज्ज ।[1]सारन्न सिद्धि अष्षै सुरज्ज ॥
मूषक करम्भ गोधह भुअंग । ... . छं० ॥ १७३॥
अंगार कच्छ भसमंग पास । गुड़ लवण तक्र गोबर दृगास ॥
[2]प्रवरज्ज अंध मूकंत केस । गरदम्भ रूढ़ तजि अंदेस ॥
॥छं०॥१७४॥
प्रनयाम पंच छह करहि जाम । या दुष्ट सगुन छंडै सु राम ॥
सागुन्न पुरिष सह वाम नाम । त्रिय नांम सुम्भ दच्छिनह ताम ॥
॥ छं० ॥ १७५ ॥

दूहा ॥ वनबिलाव घूघू घरह । परत परेव पंडूक ॥
एक थान दष्षिन दिसह । कहिय न श्रवन समूक ॥ छं० १७६ ॥
रासभ उभय कुलाल करि । सिर वंधन निस भारि ॥
वाम दिसा संमुह मिलिय । अवसि होइ प्रभु रारि ॥छं०॥१७७॥
अतिलक बंभन स्याम असु । जोगी हीन विभूति ॥
संमुह राज परष्षियै । गमन वरज्जै नित्त ॥ छं० १७८ ॥
सिर पंछी दच्छिन रवै । वामी उवहि सियाल ॥
मृतक रथी समुंह मुषह । कीजै गवन न्रिपाल ॥छं०॥१७९॥
कलस केलि उज्जल वसन दीपक पावक मच्छ ॥
सुनिय राज बरदाय भनि । एह सगुन अति अच्छ ॥छं०॥१८०॥
राज सगुन संमूह हुअ । धुअ तन [3]सिंघ दहारि ॥
मृग [4]दच्छिन छिन छिन षुरहि । चलहित संभरिवार
॥ छं० ॥ १८१ ॥
सुनत सीस [5]सारस सबद । उदय सुबद्दल भान ॥
परनि भाजि प्रतिहारसौ । करहित काज प्रमान ॥ छं० ॥ १८२ ॥
कल कलार सद्यो समुह । हसि न्रप वुझ्झयो चंद ॥
इक रवि मंडल भेदि है । इक करिहै आनंद ॥ छं० ॥ १८३ ॥

(१) ए. कृ. को.-साहसन । (२) ए. धवरज्ज ।
(३) मो. "सिंघह" । (४) मो. दष्षिन षिन षिन ।
(५) ए. कृ. को.- सारद ।

कवि का कहना कि आप सफल मनोरथ होंगे परंतु साथही हानि भी भारी होगी।

एक करहि ग्रह मंद वह। इक छिन [1]भिन्न सरीर॥
इक भारथ्थ सु जीतिहै। जे वज्रंग सु बीर॥ छं० ॥ १८४॥

यह सुन कर पृथ्वीराज का कैमास की मृत्यु पर पश्चाताप करके दुचित्त होना।

सुबर बीर सोमेस सुअ। गुन अवगुन मन धारि॥
दुष अति दाहिम्मा दहन। मरन सु मंगल रारि॥ छं० ॥ १८५॥

सामंतों का कहना कि चाहे जो हो गंगा तीर पर मरना हमारे लिये शुभ है।

सम सामंतन राज कहि। पहु परमारथ मत्ति॥
समर तिथ्थ गंगा उदक। उभय अनूपम गत्ति॥ छं० ॥ १८६॥

वसंत ऋतु के कुसमित वन का आनंद लेते हुए सामंतों सहित राजा का आगे बढ़ना।

रति माधव मोरे सु तरु। पुहप पत्त बन बेलि॥
राज कवी करतह चले। सम सामंतन केलि॥ छं० ॥ १८७॥

राजा के चलने पर सम्मुख सजे बजे दूलह का दर्शन होना।

कवित्त ॥ चलत मग्ग चहुआंन। जांम पिगीय पहु निकरि॥
सजि दुल्लह मनमुष्य। सुमन सेहरौ सीस धरि॥
सजे पिट्ठ वामंग। रंग निज नेह प्रकम्मं॥
पिष्षि राज प्रथिराज। मन्नि सा सगुन सु [2]मम्मं॥
उदयंत दिवाकर चौय मिलि। सुभट अंत किय जुद्ध जुरि॥
जय जंपि सथ्थ साहा गवन। बज्जं बज्जनि [3]सिंधु सुर॥ छं० ॥ १८८॥

(१) ए. कृ. को.-भीन। (२) को.-भ्रंमे। (३) मो.-सिंधुसुरन।

आगे चलकर और भी शकुन होना और राजा का मृग को वाण से मारना ।

बाग षंचि दिसि स । जाम उभया षिन उत्तरि ॥
दिसि दाहिनि सजि द्रुग्ग । बास विक्ती तर (१)उप्परि ॥
दिसि बाईं बर सद्दि । भसम उप्पर आरुन्नौ ॥
ताम तंमि उत्तरौ । दुष्षि राजन सरसन्नौ ॥
एकल्ल मृग्ग सन्हौ मिल्यौ । हयो राज संधेव सर ॥
उत्तरौ ताम देवी दुहर । देषि सर्व दुम्मन्न भर ॥ छं० ॥ १८८ ॥

और भी आगे चलने पर देवी के दर्शन होना ।

चल्यौराज प्रथिराज । उभय षिन तथ्य विलंबे ॥
मिलि संमुह जुग्गिनिय । दरस दीये न्रप अंबे ॥
कर षप्पर तिरसूल । सवद उच्चरि जय जंपे ॥
मधि षप्पर (२)धरि हेम । प्रनमि राजंग पयंपे ॥
माकन्ति सज्जि हय हंकि सब । अवर वारि आरोहि चिय ॥
ग्रह जाइ अप्प अपगुन किय । मिलिय राज सा संमुहिय ॥
छं० ॥ १९० ॥

इसी प्रकार शुभ सूचक सगुनों से राजा का बत्तीस कोस पर्य्यंत निकल जाना ।

दूहा ॥ इन सग्गुन दिल्लिय न्रपति । संपत्तौ भूसाम ॥
कोस तीस दुअ अग्गरौ । कियौ मुकाम सु ताम ॥ छं० ॥ १९१ ॥

एक रात्रि विश्राम करके पृथ्वीराज का आगे चलना ।

सदि राज रनबीर तहँ । किय भोजन सु उताम ॥
सब आहारे अन्न रस । चल्या जाम निसि जाम ॥ छं० ॥ १९२ ॥
अरिल्ल ॥ किय भोजन सबसथ्थ ब्रह्मासन ग्रास दिय ।
तिथ्थि चवथ्थिय सीम जाम इक नींद लिय ॥

(१) ए. कृ. को.- उत्तरि ।　　　　(२) मो.-पर ।

फुनि चढ़ि चल्यौ राज न बुझयौ कोइ भत्त।
नट्ट सु बुझझै राज समझ्झि न अष्षि व्रत्त ॥ छं० ॥ १९३ ॥

उक्त पड़ाव से राजा का चलना और भांति भांति के भयानक अपशगुन होना।

भुजंगी ॥ चल्यौ राज प्रथिराज कनवज्ज राजं। लिए सहस एकं सतं एक साजं॥
रवीवार वारं तिथी ताइ रूपं। सवं इन्द्र जोगं छठं राह रूपं ॥
छं० ॥ १९४ ॥

दुरं वार आकास वाअंक लज्जी। दुहूं पष्प नीचं सवं दाव नज्जी॥
मिली नारि पंचं सिरं कुंभ धारी। मुरी मध्य विद्धी उभै रूपकारी॥
छं० ॥ १९५ ॥

न्रपं जोग तीरं जु जै जै करंती। दई दच्छिनं वाम पंषी फिरंती॥
मिल्यौ रूपराअं करै सद्द वामं। गरज्जंत मेघं अकालं सु तामं॥
छं० ॥ १९६ ॥

सुवं अग्गि झालं मृतं काम उट्ठी। वन्नैजा करीरं मुषं मंस छुट्टी॥
लियं मंस गिद्धी उषं हंनि मग्गी। बुलै सारसं वाम कुरलंत डग्गी॥
छं० ॥ १९७ ॥

एक ग्राम में नट का भगल (अंग छिन्न दृश्य) खेल करते हुए मिलना।

कवित्त ॥ चलत मग्ग चहुआन। निकट इक गाम समंतर ॥
नट षेलत नाटक्क। भगल मंड्यौ भ्रम तंतर ॥
सत्त संगु उप्परै। नट्ट सुत्तौ जय जंपत ॥
कट्टंत सीस कट्टं पानि। धरनि धर पर्यौ सु कंपत ॥
इह चरित पिष्षि सामंत सब। अप्प चित्त विभ्रम लहै ॥
पिष्पंत परसपर मुष [1]सकल। नको बुझ्झ राजन कहै ॥छं०॥१९८॥

(१) ए. कृ. को.- सयक।

जैतराव का कन्ह से कहना कि राजा को रोको यह अशगुन भयानक है। कन्ह का कहना कि मैं पहिले कह चुका हूं।

इक कहै कोइ तिथ्थ। कवन थानक को देवह ॥
जिहि असगुन चल्लियै। कोइ न जानै यह भेवह ॥
कहिय जैत सम कन्ह। तुमहिं रष्षौ कहि राजन ॥
कहै कन्ह नन लहौ। प्रथम बरज्यौ बहु आजन ॥
पज्जून कहै बुझझहु [1]सकल। इह अवस्य कनवज क्रमै ॥
जानैं सुभट्ट कारज सयल। मति सु कोइ चिंता भ्रमै ॥छं०॥१९९॥

कन्ह का कहना कि कहने सुनने से होनी नहीं टरती।

कहै कन्ह नरनाह। सुनहु कूरंभराव धुअ ॥
जो भविस्य [2]न्निमान। सोइ मिट्टै न भूर [3]धुअ ॥
धरम सुअन [4]क्रत द्रूत। सोई बरज्यौ नहिं मानिय ॥
जनमेजै कहि जग्य। सु हित निष्षेध न जानिय ॥
सौमित्र बरज्जित राज रघु। कनक म्रग्ग संधेव सर ॥
दसकंध [5]निषेधिय मंत्रियन। सीय न अप्पिय काल वर ॥छं०॥२००॥
किय जद्दव त्रिय रूप। श्राप दुर्वास सुधारिय ॥
काल विनस निर्घोष। विप्र वाहै नन हारिय ॥
इहि राजा प्रथिराज। हन्यौ कैमास अप्प कर ॥
भरि वेरी चामंड। किये दुस्मन सब भर ॥
इह गमन भट्ट बुझझै न्रपति। करै कहा सुझझै न मन ॥
उप्पजी कोइ क्रत्या अतुल। सोइ प्रस्सचिय राज म तन ॥ छं० ॥२०१॥
*बार सोम पंचमी। जाम एकह निसि बित्ती ॥
कें दुर्बल वर पट्ट। तहां उतरी न्रप रत्तो ॥

* यह २०२ और २०३ दोनों छन्द मो.-और ए. प्रतियों में तो हैं ही नहीं। कृ. प्रति में लिख कर काट दिए गए हैं।

(१) ए. कृ. को- सयल　(२) मो.-निरमान।　(३) मो. कृ. ए.-भुअ।
(४) ए. कृ. को.-अम।　(५) ए. कृ. को. निषेवन।

करि स्तुति सब सथ्थ। अश्व तजि नीदह ग्रासं॥
घटी पंच निसि शेष। सु पहु चल्यौ चढ़ि तासं॥
पत्तौ सु जाय संकरपुरह। दिवस अंत बरथान नय॥
आहारि अन्न आसन्न मय। सब बुल्लि सामन्त तय॥ छं०॥ २०२॥

पृथ्वीराज का सब सामंतों को समझाना।

इह जंपी प्रथिराज। करिव अस्तुति सामंतं॥
धरि छग्गर कविचंद। महल दिष्षन मन संतं॥
अब जानौ युध समय। तुमै सब काम सुधारौ॥
मो चिंता मन मांहि। होय तुमतें निसतारौ॥
संभलिव सकल सामन्त मत। भयौ वीर आभास तन॥
चिंतिय सु इष्ट अप्पान अप। आश्रम्मं सब्बा सुमन॥ छं०॥ २०३॥

पंचमी सोमवार को पहर रात्रि गए पड़ाव पड़ना।

दूहा। जानि सगुन चहुआन नें। मन भावी सो गत्ति॥
मो न मिटै पर ब्रह्म सौं। ब्रह्म चीत भैभित्त॥ छं०॥ २०४॥

सामंतों का कहना कि सब ने हटका पर आप न माने।

[1]सह समझि नारंजुलै। सो इच्छिनि मोकल्लि॥
गुरू सज्जन सैसव[2] सु बंध। बरजंते न्रप चल्लि॥ छं०॥ २०५॥

सामंतों का कहना कि हमें तो सदा मंगल है परंतु आप हमारे स्वामी हो इस लिये आपका शुभ विचार कर कहते हैं।

रवि मंडल भेदै स [3]फुटि। प्रथम चित्त [4]फुनि होइ॥
[5]तन जंपै भट जोह करि। न्रपहि अमंगल [6]जोइ॥ छं०॥ २०६॥

---

(१) ए. कृ. को.- सम। (२) ए. कृ. को.- सैसव्व।
(३) मो.- फुनि। (४) मो.- पुनि।
(५) मो.- मन। (६) ए. कृ. को.- होइ।

प्रातःकाल पुनः चाहुआन का कूच करना। स्वामी की नित्य सेवा और उनका साहस वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ राज चहुआन सूर। त्रिमलिय किति रवि प्रात नूर॥
इक एक बीर दइ दहति सूर[1]। देवत्त वाइ दुज्जन करूर॥
छं० ॥ २०७ ॥

तिन सथ्थ पंच भर पंच जित्त। सज्जोति सेन सिरदार इत्त॥
इक इक संग हुअ दुम्मन दाइ। अनु दार पच्छ बाराह राइ॥
छं० ॥ २०८ ॥

सजि चली संग देविय प्रचंड। उनमत्त[2] रूप कर सजे दंड॥
सजि चल्यौ संग भैरूं उभंत। सेवक सहाय अरि करत अंत॥
छं० ॥ २०९ ॥

सजि चले इय पंचास बीर। कौतक्क कहल मन हरषि धीर॥
जुग्गिनिय सट्ठि चव चल्लि संग। किलिकिलत काल सम रमन जंग॥
छं० ॥ २१० ॥

भहराति भीत भूतन अमाति। घहराति घोरि सुर प्रेत पांति॥
अनि अन्नि इष्ट सबदेव साधि। चल्ल सुमंच जंचनि अराधि॥
॥ छं० ॥ २११ ॥

अकलंक कंक असंक चित्त। रच्चे सु स्वामि सव सेव हित॥
माया न मग्ग जिन चित्त जाइ। पोइनिय पत्त जल ज्यौं जनाइ॥
॥ छं० ॥ २१२ ॥

ऐसे जु सित्त सामंत सूर। उनमत्त अंग जनु नदिय पूर॥
हलहलिय ढाल मालह सजूर। वस्संत जानि हल्लत षजूर॥
॥ छं० ॥ २१३ ॥

निरषंत नयन तिय तेज ताप। चढ़ि चल्यौ राज चहुआन आप॥
सामंत सूर[3] सूरह्नि नरंभ। दिष्षियै लाज तिन मुष्ष अंभ॥
॥ छं० ॥ २१४ ॥

(१) ए.- सूर। (२) ए. कृ. को.- उनमत्ते। (३) ए. कृ. को.- सूरद।

सामंत किरनि प्रथिराज सूर। अरि तिमिर तेज कट्टन करूर॥
पूहवी न बीर इन समह कोइ। कवि कहै बरनि जौ आन होइ॥
॥ छं० ॥ २१५ ॥

रहि पंड समय भूभार पथ्य। तिहि काज भयौ अवतार [1]तथ्य॥
भय अभय चिंति हृद मुषहि जोति। उग्गंत हंस छवि जानि होत॥
॥ छं० ॥ २१६ ॥

इस पड़ाव से पांच योजन चलने पर पृथ्वीराज का कन्नौज की हद मे पहुंचना।

जोजनह पंच गय चाहुआन। पर पुरह जानि उग्गयौ सुभान॥
॥ छं० ॥ २१७ ॥

दूहा॥ पर पुहमी पत्ते सु पहु। उग्ग भान पयान॥
दल वद्दल सद्दल दिसह। पूरन [2]छयत गयान। छं० ॥ २१८ ॥

एक दिन का पड़ाव करके दूसरे दिन पुनः प्रातः काल से पृथ्वीराज का कूच करना।

उदय हंस सज्जे सगुन। बज्जे अनहद सद्द॥
दिष्षत दरसन परस तप। पुज्जे दस दिस जद्द॥ छं० ॥ २१९ ॥

प्रभात समय वर्णन।

कवित्त॥ [3]चढ़ि चतुरंग चहुआन। राइ संभरिय सयंभर॥
सकल सूर सामंत। मंत भंजन समथ्थ वर॥
पर अहंन सम समय। होत सकुन कुल मोरं॥
वज्जि पंचजन देव। सेव अंबर [4]मग ओरं॥
जल पात जात मिल्लि विच्छुरत। रोर अलिन सल्लिन सुषद॥
[5]लंपट कपाट विट चिय तजत। तम चर चर कीनी मुषद॥
छं० ॥ २२० ॥

(१) मो - पिथ्थ। (२) ए. कृ. को.-सयत। (३) ए. कृ. को. चढि चतुरंग चतुरंग।
(४) ए. कृ. को. मन। (५) मो.-लंपट किपाट विट चिय तजन। चम चर चर कीनी मुखद।

पद्धरी ॥ तब सज्जि सुदल विहल विसाल । पूरंन [1]गेन मूरंन [2]भाल ॥
[3]डंबरिय धरनि आरोह गेंन । दिसि विदिसि पवनपरसंत[4] ऐन ॥
॥ छं० ॥ २२१ ॥

सामंत सूर हैवर अरोहि । आक्रत्त [5]क्रत्त मन्नि अगम सोह ॥
ढलवीय पीय ढलकंत ढाल । दधि झाल पलव वैरष विमाल ॥
॥ छं० ॥ २२२ ॥

हय हींसधरा षुर विहर बाह । तारच्छ सु तन अंतर उछाह ॥
ऐसे सुबीर रिन [6]विषम धार । अरि अंब[7]अचन अग्गथि करार ॥
॥ छं० ॥ २२३ ॥

चहुआंनभान अरि तिमिर तार । मानंतसूरकरिकर प्रचार ॥
दरसंत परसपर सुभट नेन । सोभंत भंति तन धरिग्ग मेन ॥
छं० ॥ २२४ ॥

विह[8]सत विहाय मध्यान थान । सतपच फुल्लि मिलि भ्रमर मान॥
छूटंत गंधि [9]मिलि मंद वात । मिलि चलै भ्रमर प्रसन्न सुधात ॥
॥ छं० ॥ २२५ ॥

परजंक प्रीय नह तजत प्रौढ़ । नव पंज रंज तन्न मनत मौढ़॥
सद्दंत चक्र साहीत वैन। अनुभान मत्त क्रम छंडि सेन॥
॥ छं० ॥२२६ ॥

दिसि विदिसि नयन परमान करंत। रसना रसान हरि वर धरंत॥
संफटि तमाघ [10]तिमरनि तरार । अंजनह नगर उठि पवन धार॥
छं०॥ २२७ ॥

संभरिय राय संभरि सु [11]माम । अवलोक देव बंदन सु राम ॥
। .... .. छं० ॥ २२८ ॥

(१) ए. कृ. को.-गौंन । (२) । ए.-मुंत । (३) मो.- टम्मरि ।
(४) मो. पमरंत । (५) ए. कृ. को.-क्रम्म । (६) मो.-निरमले ।
(७) ए. कृ. को.-मो. अचपन । परंतु अक्षर बढ़ता है । (८) ए कृ को. जागि ।
(९) मो.-नल । (१०) ए. कृ को.-नमूनि । (११) मो.-राम, को. कृ.-समान ।

कवित्त ॥ है सजि संभरि राय। चढ़िव चौहान प्रनं मन ॥
क्रमत मग्ग पिंगलह। मान उद्यान विधंनन ॥
नैंन दरसि दिसि विदिसि। निंद सभगिय पल अंगन ॥
अवलोकित दिन लोक। लोकनर वर है दंगन ॥
दिष्षियै वदन दूलह हगनि। सदन रंग [1]दुलही क्रमत ॥
वंदेवि पाय निंदे अगुन। फल सुभाव अंबर प्रमत ॥
छं० ॥ २२९ ॥

वन प्रान्त में एक देवी का दर्शन करके राजा का चकितचित होना।

दूहा ॥ बन सु थान इक देवि मिलि। संग स्वान गन माल ॥
जट बिभूति कर कंबयनि। लषि अचिज्ज भूपाल ॥ छं० ॥ २३० ॥

देव का स्वरूप वर्णन।

हनूफाल ॥ जट विकट सिर जट जूट। अव मषिय मुद्र विजूट ॥
चरचर्य चरचित अंग। द्रग दिपै लोल सुरंग ॥ छं० ॥ २३१ ॥
गर गुंज गुंथित बंध। बनि सेत सेत सुकंध ॥
सजि पानि तानि कराल। मँग रंग स्वानह माल ॥ छं० ॥ २३२ ॥
रव हक गज्जत गन। लघ, दिघ चुट्टत बैंन ॥
छिय रत्त स्याम स थान। कटि नील पीत उरान ॥ छं० ॥ २३३ ॥
भुज गेंन [2]रंग रसाल। कंबु ग्रीव [3]पीत सु आल ॥
अव सेत भ्रूव स भूर। लिल्लाट केसरि नूर ॥ छं० ॥ २३४ ॥
तन रंग नान प्रकार। चर चरन रंग सु चार ॥
नष नील घन परवान। मुष मुदित दिष्षि न्रपान ॥ छं० ॥ २३५ ॥
कविचंद दीन असीस। हसि जंपि नंमिय सीस ॥
दिषि दंत नील सुरंग। रसना सुरंग दुरंग ॥ छं० ॥ २३६ ॥
सित असित तन के भाव। सुद देव भूतनि राव ॥

(१) मो.-दुल्ही। (२) ए. कृ. को.-रैंन। (३) ए. कृ. को.-पीतल।

सज्जा का पूछना कि तू कौन है और कहां जाती है।

किन थान सों गम कीन। किन ठौर पर मनदीन ॥ छं० ॥ २३७ ॥

उसका उत्तर देना कि कन्नौज का युद्ध देखने जाती हूं।

सतिजुग्ग मो पित जुद्ध। रन त्रिपुर षंड विरुद्ध ॥
त्रता सु रघुकुल राम। हनि लंक रावन ताम ॥ छं० ॥ २३८ ॥
द्वापुर सु अर्जुनराय। [1]घटवंश घयौ घाय ॥
कलिजुग्ग कनवज राज। चहुआन कुल [2]प्रथिराज ॥ छं० ॥ २३९ ॥
अच्छी सु कमधज बंस। जुन्हाइ उद्र प्रसंस ॥
दिय सुमति ताहि दुमीस। कलिप्रिया नाम सरीस ॥
छं० ॥ २४० ॥
पित पत्ति कल संघार। सम पानग्रहन सु बार ॥
सो चरित दिष्षन काज। सिव हार कंठ समाज ॥ छं० ॥ २४१ ॥
यह जंपि गवन सु कीन। न्रिप चंद हसि रसभीन ॥
.... । .... छं० ॥ २४२ ॥

पृथ्वीराज का चंद से अपने सपने का हाल कहना

तिषट तीय माया सरिय। द्रिग लग्गिय तिहि काल ॥
सजि संवेग सु सुंदरिय। रचि शृंगार रसाल ॥ छं० ॥ २४३ ॥

पूर्व की ओर उजेला होना, एक सुंदरी स्त्री का दर्शन होना।

हनूफाल ॥ पहु ओर प्रगटि [3]प्रहास। छिन प्राचि ओर उजास ॥
तिहि समय न्रप द्रग लग्गि। तिन मध्य सुपन सुषग्गि ॥
छं० ॥ २४४ ॥

उक्त सुन्दरी का स्वरूप वर्णन।

हिय नेम सेन विहास। नवरंग नारि इहास ॥
तिहि समय सुभम चंद। मुष अग्ग न्रप बर संद ॥ छं० ॥ २४५ ॥

(१) ए. कृ. को.- घन। (२) ए. कृ. को.-पुगराज।
(३) ए. कृ. को.-प्रकाम।

कच कुसुमकवरि सुरंग। जनु ग्रसिय [1]इंद उरंग॥
नग मुत्ति सुमन सुभाल। हर रुद्र कालि कपाल॥ छं०॥२४६॥
मधि भाग केसरि [2]आट। हर इंद तिलक लिलाट॥
श्रुत मंडि कुंडल लोल। रथ भान भंग अलोल॥ छं०॥२४७॥
[3]भुअ बंक धनु सुरराइ। कर अंचि [4]चाय सुचाइ॥
द्रिग दिपत चंचल चार। अलि जुगल कुमुद विहार॥छं०॥२४८॥
नव नासिका सुकनंद। रति बिंब बढ्ढिय अनंद॥
तिन अग्र मुकति सु नंद। रस सुक्र ससि नष कंद॥ छं०॥२४९॥
कल काम आल कपाल। तहं अलक झलकत लोल॥
[5]दुरि रदन दारिम बीज। रव काल कोकिल मी ज॥छं०॥२५०॥
बनि चिबुक स्याम सु व्यंद। बसि कुमुदनी अलिइंद॥
कलग्रीव रेष सुभेष। हरि कंज अंगुल [6]नेष॥ छं०॥२५१॥
करकुमुद अमुद अनूप। जटि रतन रूप सनूप॥
कुच मद्धि हार विराज। हरद्दार गंग जु राज॥ छं०॥ २५२॥
कटि छीन छवि म्रगराज। पचि भंग पीत समाज॥
रचि और कंचन थंभ। लजि दुरिग कुल कल रंभ॥छं०॥२५३॥
बनि पिंड नारंगि रंग। जनु कनक दंड सुरंग॥
नष चरन बरन अनूप। रवि चंद अंबुज जूप॥ छं०॥२५४॥
कलहंस गमन विसाल। बरनी सु चंदति काल॥

राजा का उससे पूछना कि तू कौन है और कहां जाती है।

[7]को नाम को तुम मात। को बंध को पित जात॥ छं०॥२५५॥
जाती सु कोपति थान। किहि आत कून पयान॥
मो देवि पुर जुगिनाथ। मो प्रकृति भिन्न अकाथ॥ छं०॥२५६॥

---

(१) ए. कृ.-इन्द्र। (२) ए. कृ. को.-आड़।
(३) मो.- भव बंक धनुष सु राह। (४) कृ. ए. वाय।
(५) ए. कृ. को. रद कनक। (६) ए. कृ.- भेष, को. नेक।
(७) मो. को. को नाम तम तात को बंध को पित मात॥

उस सुन्दरी का उत्तर देना ।

गाथा ॥ पयं पीय गत नयं । घट्ट कट्टंति ह्रदयं ॥
भरता पित कुल बद्धं । स्रापं सुमंतयो मुनी ॥ छं० ॥ २५७ ॥
कलह प्रिया मो नामं । मंजु घाषापि रंभया सोरं ॥
समरस्य अग्य समये । प्रछन्नं कथितं मया ॥ छं० ॥ २५८ ॥

कवि का कहना कि यह भविष्य होनहार का आदर्श दर्शन है।

दूहा॥ पल प्रगट्टि कवि चंद सों । कह्यौ कौन इह भाव ॥
कह्यौ जु इह ह्वै है अवसि । सुन डंकिनिपुर राव ॥ छं० ॥ २५९ ॥

भविष्य वर्णन ।

कवित्त ॥ कहर कंक कल कलिय । भार फनिमन कर भज्जिय ॥
सजिय सेन चहुआन । किन्न कारन अरि कज्जिय ॥
अप्प अप्प सजि इष्ट । चलै जैचंद सभानन ॥
वर अप्पन चोसट्ठि । करह मो कर दैवानन ॥
रुधि गहन पच दारुन दिवहि । चंद भट्ट आमिष्य दिय ॥
सुर करिय कित्ति भय भीत भर । करन रूप्त आगम कहिय ॥
छं० ॥ २६० ॥

चिहुर बंध बंधियहि । काल षद्वियहि कुलाहल ॥
।　　..　　॥
अधर पाइ धर धरनि । कंठ रुधि पियै सु नद्विय ॥
मनो पुज्ज प्रति पाउ । पच पचन उरि लद्विय ॥
संजोग व्याह [1]विध जोग सुनि । चलत राह उद्यान मग ॥
रन राग रंग पचन भरन । दुर्गति रूप दानव सु द्रग ॥छं०॥२६१ ॥

देवी का पृथ्वीराज को एक बाण देकर आप अलोप होजाना।

एन बान असुरान । भिरन महिषासुर भग्गिय ॥
एन बान राषिसन । राम रावन्न उछग्गिय ॥

(१) ए. कृ. को जुध ।

एन बान कौरव ममथ्थ। पथ्थ भर करन पछारिय ॥
एन बान संकर सुभग्ग। त्रिपुरारि सु पारिय ॥
इन बान पराक्रम बहु करिय। सजिय हथ्थ चहुआन वर ॥
इन बान मारि पंगुर पिसुन। करन कंक चल्लै कहर ॥ छं० ॥ २६२ ॥

पृथ्वीराज को शिवजी के दर्शन होना और शिवजी का राजा की पीठ पर हाथ देकर आशीर्वाद देना।

चलत मग्ग चहुआन। भान सम देषि भयंकर ॥
गिर तरु लग्गिय गेन। चलन षंडन तरु षंषर ॥
बैल गैल जट जूट। पिठ्ठ तठ काम विराजै ॥
गंग उदक उल्लरै। सार चंमर सिर राजै ॥
जब चष्ष पिष्ष चौहान भट। तब उत्तरि सब भरनि भर ॥
पेषंत पाइ दुज्जन दुमह। धर्यौ पिठ्ठ सवि अप्प कर ॥ छं० ॥ २६३ ॥
उदक गंग विभ्भूत। अंग सारंग सुरंगह ॥
बरन अनंत मन हरत। निरषि गिरजा मन रंजह ॥
करी चर्म गरलह विक्रंम। रष्षिस उर दाहन ॥
द्रिग्ग नयन ज्वाला बयन्न। कंद्रप्प न मानह ॥
तरु तरुन तार त्रिय बर बसहु। रिसह सबु चहुआन रषि ॥
भरि भूत धूत दिष्षिय पियह। लिय अग्या सिर नाइ सिष ॥
छं० ॥ २६४ ॥

पुनः पृथ्वीराज का पयान वर्णन।

दूहा ॥ चले राइ पहु फट्टतें। सत सामंत सुराह ॥
मनों पथ्थ भारथ करन। दल कौरव धरि दाह ॥ छं० ॥ २६५ ॥

कन्ह को एक ब्राह्मण के दर्शन होना। उसका कन्ह को असीस देकर अन्तर्ध्यान होना।

कवित्त ॥ दुज 'उड्डो दल नाह। प्रबल तन जोति प्रगासिय ॥
मुष विड्डी भर कन्ह। मानि अप्पन मन भासिय ॥

(१) ए. कृ. को.-उभ्भौ।

द्रग पट्टिय छुटि पट्ट । लग्यौ उद्योत उरानह ॥
भान रूप भज नाह । दिक्ष नाराजी [1]दानह ॥
लगि पाय धाय कर पिठ्ठ दिय । मम संके जुद्धह निपुन ॥
फिरि तथ्य विप्र नह [2]पिष्षयौ । तुम हम मंडल रवि मिलन ॥
छं० ॥ २६६ ॥

हनुमान जी के दर्शन होना ।

चलिय अग्ग चहुआन । एक जोजन ता अग्गिय ॥
घटा रूप घन सज्जि । निजरि ता ताहि न लग्गिय ॥
जीह बीज विकराल । धजा घन बद्दल रंगिय ॥
हथ्थ गदा सोभंत । भूत प्रेतह ता संगिय ॥
सामंत राज पिष्षिय सलष । हनूमान चंदह कहिय ॥
बाजंत नद्द विधि विधि वसुह । चह सुबज्जि चंबक दहिय ॥
छं० ॥ २६७ ॥

कविचन्द का हनुमान जी से प्रार्थना करना ।

दूहा ॥ चंद गयौ अग्गें सुबर । तीतन रूप अथाह ॥
हम मानुष्षी मति अधम । करहु रूप कल नाह ॥ छं० ॥ २६८ ॥

लंगरीराव का सहस्राबाहु का दर्शन और आशीर्वाद देना ।

कवित्त ॥ सहस हथ्थ सोहन्न । धूम्र ब्रन्नह मुष मग्गह ॥
अंषि तेज अगि जानि । पानि पलचर [3]ता संगह ॥
धनुष धजा फररंत । हथ्थ डंकिनि फिक्कारै ॥
जै जै मुष उचरंत । सिंह वह वर बक्कारै ॥
लंगोट बंध काया प्रचंड । लोहालंगर समुष करि ॥
धारंत हथ्थ मथ्थें धरिय । तासु पंष मथ्थें सुहरि ॥ छं० ॥ २६९ ॥

गोयन्दराय का इन्द्र के दर्शन होना ।

जोजन तीन अलद्धि । राय गोयंद सु भारिय ॥
आप इष्ट तन सिद्धि । इन्द्र इंद्रासन धारिय ॥

(१) ए. कृ. को.-दोनह । (२) ए. कृ. को.-दिष्षई । (३) ए. कृ. को.-ता रंगह ।

एक कोस आकंप। भद्र जाती उज्जल तन॥
सहस दंत मित हथ्थ। मनो राका जोतिंबन॥
विंमान देव बहु जटित मय। चमर छत्र अच्छरि चलिग॥
गोयंदराव सिर हथ्थ दिय। कहिय तुम्भ हम ग्रह मिलिग॥
॥ छं० २७०॥

एक बावली के पास सब का विश्राम लेना। कवि को देवी का दर्शन देना।

विबर एक वट मंझ। तास मझ्झह कंदल ग्रह॥
भान तज [1]भल्लकंत। आय सेना उत्तरि [2]सह॥
चंद गयो वलि अग्ग। देवि पूजा घन विद्धिय॥
वध्ध रूप आरोहि। आय उम्भी हर सिद्धिय॥
मम करहि चंद अंदेस मन। लेय राज संजोगि ग्रहि॥
चौसठ्ठि सुभर भेटें सुहरि। जय जय करि अपछरि वरहि॥
छं०॥ २७१॥

दूहा॥ चयत दिवस चय जामिनिय। चयत जाम फल उन्न॥
जाजन ढुक्कत संचरिग। प्रथीराज संपन्न॥ छं०॥ २७२॥

समस्त सैनिकों का निद्रागस्त होना और पांच घड़ी रात से चल कर शंकरपुर पहुंचना।

कवित्त॥ बार सोम पंचमी। जाम एकह निसि वित्तिय॥
के दुब्बल वर पट्ट। तहां उत्तरि पहु रत्तिय॥
कारि अस्तुति सब सथ्थ। अस्व तजि नींद सु ग्रासं॥
घटी पंच निसि सेष। सु पहु चढ़ि चल्यौ तासं॥
पत्तो सु जाइ संकरपुरह। दिवस अंन वर थान नय॥
आहारि अन्न आसन्न मय। सब बोले सामंत तय॥ छं०॥ २७३॥

(१) को.- झल्लंत। (२) ए. कृ. को. तहां।

राजा का सामंतों से कहना कि मैं कन्नौज को जाता हूं बाजी तुम्हारे हाथ है।

इह जंपिय प्रथिराज। करिव अस्तुति सामंतं ॥
धरि छग्गर कविचंद। महल [1]पिष्षन मन संतं ॥
जब आनौ सुध समै। तुमै सब काम सुधारौ ॥
मो चिंता मन मांहि। होइ[2] तुमतें निसतारौ ॥
संभलत सब्ब सामंत मत। भयौ बीर आभासि तन ॥
चिंतिय सु इष्ट अप्पान अप। आश्रम्मं सव्वां सुमन ॥
छं० ॥ २७४ ॥

दूहा ॥ चयति जांम बासुर बिसरि। घटिग हंस तन रात ॥
जु कुछ चष्ष इच्छा हुती। सोइ दिष्षौ परभात ॥ छं० ॥ २७५ ॥

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। [3]श्रमित सामंत सुरेसं ॥
मो चिंत्यौ तुम कंध। सुनौ कारन क्रत एसं ॥
चिंतिया दिन बाईस। कोस चोवीस चवथ्थौ ॥
षट चौसह पंचमी। तीस अठ षष्टि सपथ्थौ ॥
जोजन्न उभय कनवज्ज कहि। इन थानक कमधज्ज अगि ॥
देषनह पंग अभिलास अति। क्रत्य सब्ब तुम कंध लगि ॥छं०॥२७६॥

पृथ्वीराज प्रति जैतराव के बचन कि छद्मवेष में आप छिप नहीं सकते।

कवविक्ता ॥ बद्दल चंद किरन्न ; छिपै नन सूर छांह घन ॥
भूपति छिपै न भोग। रंक नन छिपत[1]बमन तन ॥
नाह नेह नह छिपन। छिपै नन पुहप बास तर ॥
कुलट * कुटंब न छिपै। छिपै नन दान अधर धर ॥
छिप्पै न सुभर जुझ्झह समै। चतुर पुरष कवितह कह्या ॥
पंमार कहै प्रथिराज सुनि। तू न छिपै छग्गर गह्या ॥छं०॥२७७॥

---

(१) ए. कृ. को.-दिष्षन। (२) ए. लम।
(३) ए. कृ. को.-सब्ब। * कुढ़ंग

सामंतों का कन्नौज आकर जयचन्द का दरबार देखने की अभिलाषा में उत्सुक होना।

दूहा ॥ करि अस्तुति सामंत न्रप। जंपि विगति रति बत्त ॥
उतकंठा दिष्षन नयन। कमधज्ज राज दरत्त ॥ छं० ॥ २७८ ॥

मुख्य सामंतों के नाम और उनका राजासे कहना कि कुछ परवाह नहीं आप निर्भय होकर चलिए।

पद्धरी ॥ सुनि तहां सभा र राज बेंन। उभ्भरे [1]रोम लग्गे सु गेंन ॥
अप्पानि अप्प [2]दैवत्त चिंत। संमान सुचित चिंते सुचिंत ॥
छं० ॥ २७९ ॥

मंड्यौ सुराज दीवान राज। जानै कि देव देवन समाज ॥
बैठे सु कंन्ह गोयंदराज। पज्जून सलष निड्डूर समाज ॥
छं० ॥ २८० ॥

पुंडीर चंद तूंवर पहार। जामानिजद्द आजान बार ॥
पंमार सिंह लष्षन बघेल। चहुआन अत्तताई अमेल ॥
छं० ॥ २८१ ॥

बलिभद्रराइ षीची प्रसंग। गुज्जरह कनकरामह अभंग ॥
अनि अन्नि सूर सामंतरेस। बैठ स राज आवरि असेस ॥
छं० ॥ २८२ ॥

हक्कारि चंद बरदाइ ताम। उथ्थाम मान बर जथ्थ ठाम ॥
इह जंपि राज भर सुमत संम। दिष्यौ सपंग [3]दीवान तंम ॥
छं० ॥ २८३ ॥

क्रत काल कव्य लय पान वीर। अवलोकि पंग भर सुभर तीर ॥
सब महिल वरित अन अन्नि रंच। कंधेव तंम सोभानि संच ॥
छं० ॥ २८४ ॥

दूहा ॥ [4]विहसि सुभर विकसे सुमन। न्रप न करहु अंदेस ॥
धनि धनि मुष जंपिरू विनय। दिष्षहु महल नरेस ॥ छं० ॥ २८५ ॥

---

(१) मो.-रोस। (२) मो.-दैवान।
(३) ए. कृ.-पंग। (४) ए. विहिरि।

तुच्छ निद्रा लेकर आधीरात्रि से पृथ्वीराज का पुनः कूच करना

मानि मंत सामंत । राज सुष सेन विचारिय ॥
भूम सेज सुष सयन । गंग मंडल वर धारिय ॥
घटिय पंच जुग अग्ग । तलप अलपह आनंदति ॥
फुनि चढ़ि चल्यौ राज । पुरह संकर सानंदति ॥
सुनियै निसान ईसान घन । जनु दरिया पाहार गुरि ॥
निस अद्ध घरिय ऊपर चतुर । पंग सु उत्तरि गंजि धर ॥
छं० ॥ २८६ ॥

दूहा ॥ चढ़त राज चहुआन निस । घोर मपंग निसान ॥
जान कि मेघ असाढ़ सम । उठिय घोर दरसान ॥छं०॥२८७॥
चलत मग्ग संभरि सपहु । सुर बज्जे सहनाइ ॥
रस दारुन भय संचरिग । घोर गंभीर विभाइ ॥ छं० ॥ २८८ ॥

कवित्त ॥ [1]घटिय च्यार चप्परह । अद्ध जामनिय जरत तम ॥
चढ़िग राज संभरि नरेस । सामंत सकल सम ॥
देवगुरू सत्तमी । अश्विनि अभि जोग प्रमानह ॥
चलत मग्ग अहुआन । [2]गंग मंडल वर थानह ॥
अग्गह सुभट्ट मारग सुमग । कहत कथा जाह्नविय ॥
कलमल्ल बिछाह तन होत जल । जाल बाल चूरन [3]कविय ॥
छं० ॥ २८९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि कन्नौज निकट आया अब तुम भी वेष बदल डालो ।

बचनिका ॥ राजा सामंतन सौं बोल्यौ । हूं पंगुरे कौ दिवान देषन चल्यौ॥
प्रगट रूप सरूप [4]दुराओ ॥ और सरूप करि साथ आओ ॥
ऐसो कहत सामंतन मानी । सो निसा जुग एक बराबरि जानी ॥

---

(१) मो.-घरिय ।   (२) मो.-गगन मंडल वर भानह ।
(३) ए. कृ. को. करिय ।   (४) ए. कृ. को.-दुरावौ आवौ ।

सामंतों की तैयारियां और वह प्रभात वर्णन।

पद्धरी ॥ चंपौ सुभोमि कनवज्ज आइ। दसगुनौ सूर बर चढ़त भाइ ॥
उच्चर्यौ भट्ट कविचंद सथ्थ। दीसई राज रवि सम समथ्थ ॥
छं० ॥ २९० ॥

जिम जिम सु निकट कनवज्ज आय। डरपहि न सूर तिम तिम हढ़ाय ॥
आपंम चंद जंपौ सुराय। बल बंधि पीय संगम दिढ़ाय ॥
छं० ॥ २९१ ॥

उत्तरिय चित्त चिंता नरेस। वेतरहि सूर सुरलोक देस ॥
इक कहत लेंहि बल इंद्र राज। अस जियन मरन प्रथिराज काज॥
छं० ॥ २९२ ॥

कर करहिं सूर अस्नान दान। बर भरत सूरसुनि क्रन निसान ॥
सरवरिय साल बंछहित भांन। मुध बाल जेम इच्छत बिहान ॥
छं० ॥ २९३ ॥

गुरु दयत उदित ग्रित मुदित इत्त। झल्लमलिग तार तरु हलिग पत्त॥
दीपियत इंद किरनीन मंद। उद्दिमह हीन जिम न्रपति चंद ॥
छं० ॥ २९४ ॥

धरहरिग [1]चित्ति सुर [2]मुद्द मुंद। उप्पज्जौ जुद्ध आवद्ध दुंद ॥
पहु फटिग घटिग सर्वरि सरीर। झलकंत कलस दिषि गमन नीर ॥
छं० ॥ २९५ ॥

बिरहीन रैंनि छुट्टि [3]मित मान। नष्षंत तोरि भूषन प्रमान ॥
असुवंत अंसु उस्सास आइ। बिरहीन कंत चंदहु बुलाइ ॥
छं० ॥ २९६ ॥

पह फट्टि घट्टि भूषननि बाल। दिसि रत्त दरसि दरसी कसाल ॥
[4]न्रिप भ्रंमि गंग सब पुब्ब देस। आरन्न अरिन उत्तरि नरेस ॥
छं० ॥ २९७ ॥

---

* ए. कृ. को.-वल वांध पिय संग दिन दिढाय। आपम चद जानी समाय।

(१) ए. कृ. को.-वित्त।
(२) ए. कृ. को. मद्द।
(३) ए कृ. को. नमाति।
(४) को.-नृप भूमिग जानि यह पुव्व देस।

न्रप भ्रमिग जानि इह पुब्ब देस । अरि नयर [1]नीर उत्तर कहेस ॥
हर सिद्ध दिद्ध कनवज्ज राव । तिन बंध्यौ अंग धर भ्रंम चाव ॥
छं० ॥ २९८ ॥

दूहा ॥ यह फट्टिय घट्टिय तिमिर । तमचुग्गिय कर भान ॥
पहमिय पाय [2]प्रहारनह । उदोहोत असमान ॥ छं० ॥ २९९ ॥
रत्तंबर दीसै सुरबि । किरन परष्षिय सेत ॥
कलस पंग नहिं होय यह । बिय रबि बंध्यो नेत ॥छं०॥३००॥

सब का राह भूलना परंतु फिर उचित दिशा बांध कर चलना ।

रबि तंमह संमुह [3]उग्यौ । इह है मग्ग समुज्झि ॥
भूल्लि भट्ट पुब्बह [4]चल्लिय । कहि उत्तर कनवज्ज ॥ छं० ॥ ३०१ ॥
कंचन फूल्लिय अर्क बन । रतनह किरनि [5]प्रसार ॥
सु । कलस जयचंद घर । संभरि संभरिवार ॥ छं० ॥ ३०२ ॥

पास पहुचने पर पंगराज के महलों का देख पड़ना ।

कवित्त ॥ एह कलस कवि चंद । दंद मंड्यौ मुष रष्षिय ॥
जग उप्पर जगमगत । [6]भूल्लि कैलासह छष्षिय ॥
जगत पत्ति जग धज्ज । षग्ग कमधज्ज बांहवर ॥
दान षग्ग अनभंग । धजा बिय दान बंधि पर ॥
आभंग अवंग कनवज्ज पति । सुष नरिंद [7]दुनि इंद बर ॥
पाइये बंस छत्तीस तहां । नवै रस्स षट भाष गुर ॥छं०॥३०३॥

कन्नौज पुरी की सजावट और सुखमा का वर्णन ।

दूहा ॥ गंगा तट साधन सकल । करहि जु भंति अनेक ॥
नट [8]नाटिक संभरि धनी । बर विष्यात छबि केक ॥छं०॥३०४॥

---

(१) मो.-जानि । (२) ए. कृ. को. प्रहारनल, पहार नर ।
(३) ए. कृ. को.-उचौ । (४) ए. कृ. को. चल्यौ ।
(५) ए. कृ. को.-प्रचार । (६) ए. कृ. को.-ईस कैलास भुल्लि छवि ।
(७) ए. कृ. को.-दुति । (८) ए. कृ. को.-नागर ।

भुजंगी ॥ कहूं संभरे नाथ बट्टै गयंदा। मनं पिष्षिवे रूप ऐराप इंदा ॥
कहूं फेरिचिंत भूप अच्छे तुरंगा। मनों प्रब्बतं बाय बड़े कुरंगा ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

कहूं मल भूदंड ते [1]रोस साधैं। तिके मुष्टिकं और चानूर बाधैं ॥
कहूं पिष्षि पाइक बानैत बाधैं। नवें इंद्र [2]आइस के बज्र साधैं॥
छं० ॥ ३०६ ॥

कहीं विप्र उट्ठंत ते प्रात चल्ले। कहूं देवता सेवते स्वर्ग भुल्ले ॥
कहूं जग्य आपन्न ते राज काजैं। कहूं देवात देव [3]न्नित्यान साजैं॥
छं० ॥ ३०७ ॥

कहूं तापसी तप्प ते ध्यान लागै। तिनं दिष्षियै रूप संसार भागै॥
कहूं षोड़सा राय अप्पंत दानं। कहूं हेम सम्मान प्रथ्थी समानं ॥
छं० ॥ ३०८ ॥

कहूं बोलही भट्ट छंदं प्रमानं। कहूं [4]औघटं बीर संगीत गानं ॥
कहूं दिष्षि सिद्धं लगी तारि भारी। मनों नैर प्रातं कपाटं उघारी॥
छं० ॥ ३०९ ॥

कहूं बाल गावैं विचित्रं सुग्यानं। रहै चित्त मोहन्न डुल्लै न [5]पानं॥
इतं चरित पेषंत ते गंग तीरे। स्वयं देषतें पाप नट्ठे सरीरे ॥
छं० ॥ ३१० ॥

पृथ्वीराज का कवि से गंगा जी का माहात्म पूछना।

दूहा ॥ कह महंत दरसंन तिन। कह महंत तिन न्हाम ॥
कह महंत सुमिरंत तिन। कहि कविचंद गियान ॥छं०॥३११॥

कवि का गंगा जी का महत्व वर्णन करना।

गाथा ॥ जो फल नीरह नयनं। जो फल गुनी गाइयं गेयं ॥
सोइ फल न्हात सरीरं। सोइ फल पीयंत अंजुलं नीरं ॥
छं० ॥ ३१२ ॥

(१) सों। (२ ए. कृ. को.-आसेह।
(३) ए. कृ. को.-देवान। (४) मो.-औपटं।
(५) ए. कृ. को.-प्रानं। *छन्द ३१२ मा.-प्रीते में नहीं है।

जं जय भाव सु बुद्ध । तं तं कहियंपि संदरी कथ्थं ॥
मघिलान बाल अच्छं । सामं घनं सोभियं सारं ॥ छं० ॥ ३१३ ॥

पुनः कवि का कहना कि गंगास्नान कीजिए ।

अरिल्ल ॥ जंतं न्हान महातम आनौं । दरसन तंत महंत बषानौं ॥
सुमिरन पाप हरै हर गंगे । सो प्रभु आज परस्सहु अंगे ॥छं०॥३१४॥

सब सामंतों सहित राजा का गंगा तीर पर उतरना ।

कवित्त ॥ अंबुज सुत उमया विलोकि । वेद पढ़त षलि बीरज ॥
सहस बहत्तरि कुंअर । उपजि भोजंत गंगा रज ॥
आभूषण अंबर सुगंध । कवच आयुध रथ संतर ॥
रविमंडल के पास । रहत चौकी सु निरंतर ॥
चहुवांन चमूं तिन समर जत । सु कविचंद ओपम कथिय ॥
सामंत सूर परिगह सकल । उतरि तट्ट भागीरथिय ॥छं०॥३१५॥

कवि का गंगा के माहात्म्य के संबंध में एक पौराणिक कथा का प्रमाण देना ।

साटक ॥ सोरंभं कमलं तच्यौं न मधुपं, मध्यं रच्यौ संपुटं ॥
सा नैजाय मराज संकर सिरं, चढ़ाइयं अच्छरी ॥
सिंघं तंत म उप्परं घट भर, गंगा जलं धारयं ॥
बारं लग्गि न चंद कव्वि कहियं, संभू भयौ छप्पयं ॥ छं०॥३१६॥
इक्कं मृग पियंत नीर डसियं, काली समं पंनगं ॥
साई व्यालय मृगछालय बही, शृंगी बही सुरसुरी ॥
धारे रूप पसूपती पसु तहां, भागीरथी संगती ॥
* आनंदी दुज बैल लैन क्रमियं, कैलास ईसं दिसं ॥छं०॥३१७॥

राजा का गंगा को नमस्कार करना, गंगा की उत्पत्ति और माहात्म्य वर्णन ।

दूहा ॥ हो सामंत सुमंत कहु । सु हरि चिंति तजि बाज ॥

* "३१६ से ३१७ तक ये छंद मो. प्रति में नहीं है ।

त्रिपथ लोक प्रथिराज सुनि। नमसकार करि राज ॥छं०॥३१८॥

कवित्त ॥ पाप मनंमथ हरन। गंग नव बंध अनी पर ॥
हरि चरनन करि जनम। काम छंडै सु दुष्य बर ॥
तीन लोक भर भवन। तहां प्राक्रंम सु थानन ॥
निगम न हरि उर धरी। ब्रम्म तट काय प्रमानन ॥
वंछहि सु चतुर नर नाग सुर। दुति दरसन परसन [1]विहर ॥
[2]ढिल्लीवनाथ सो गंग दिषि। जस सम उज्जल बसु अपर ॥छं०॥३१९॥

साटक ॥ ब्रह्मा काष्य कमंडले कलिकले, कांताहरे कंकवी ॥
तं तुष्टा त्रयलोक संपद पदं, तंबाय सहसंनवी ॥
अघ काष्टं ज्वलने हुतासन हवी, अध विष्णु आगामिनी ॥
जंजाल जग तार पार करनी, दरसाय आइंनवी ॥ छं० ॥ ३२० ॥

अरिल्ल ॥ ब्रह्म कमंडल तें कल गंगा। दरसन राज भयौ दिवि संगा ॥
तामस राजस धरि उर पारह। [3]सातुक उदक गंग मझझारह ॥
छं० ॥ ३२१ ॥

दूहा ॥ अस्तुति कहि बरदाय बर। पढ़िय कवींद्र विचार ॥
सो गंगा उर जंपई। क्रम उत्तारन पार ॥ छं० ॥ ३२२ ॥

जैचन्द की दासी का जल भरने को आना।

वचनिका ॥ राजा दल पंगुरे की दासी गंगोदक भरन आनि ठाढ़ी भई ॥
चंद कह्यौ राजा इह काम तीरथ मुगति तीरथ हथलेवा मिलत है॥

कवि का दासी पर कटाक्ष करना।

दूहा ॥ जरित रयन घट सुंदरी। पट कूरन तट सेव ॥
मुगति तिथ्थ अरु काम तिथ। मिलहि हथह हथ लेव ॥छं०॥३२३॥

काव्य॥ उभय कनक सिंभं भृंग कंठीव लीला। पुहप पुनर पूजा विप्रवे कामराजं॥
त्रिवलिय गंग धारा मझि घंटीव सवदा। मुगति सुमति भौरे नंग रंगं त्रिवेनी॥
छं० ॥ ३२४ ॥

(१) ए. कृ. को.-विवर। (२) ए.-ढिल्लीच।
(३) ए.-सादुक।

दूहा ॥ रहसि केलि गंगह उदक। सम नरिंद किय केलि ॥
चिरन त्रिभंगी छंद पढ़ि। चंद सु पिंगल मेलि ॥ छं० ॥ ३२५ ॥

गंगाजी की स्तुति।

त्रिभंगी ॥ हरि हरि गंगे तरल तरंगे अघ छित भंगे छित चंगे।
हर सिर परसंगे जटनि बिलंगे विहरति दंगे जल जंगे ॥
गुन गंध्रव छंदे जै जै बंदे छित अघ कंदे सुष चंदे।
मति उच गति मंदे दरसत नंदे पढ़ि वर छंदे गत दंदे ॥
छं० ॥ ३२६ ॥

वपु अपु विलसंदे जम भूत जंदे सुर धुनि नंदे कह गंदे ॥
.... । .... ॥
षिति मति उर मालं सुगति विसालं चिर धुत कालं सद कालं।
हिम रिति प्रतिपालं सुर तट तालं हर छर नालं विधिबालं ॥
छं० ॥ ३२७ ॥

दरसन रस राजं सुमरित साजं जय जुग काजं भय भाजं ॥
अंमर छर करिजं चामर वरिजं वर बहु पाजं सुर साजं ॥
'अंमर तरु मंजरि निय तन अंजरि बर बर रंजरि चष पंजरि ॥
करूना रस मंजरि जनम पुनंगिरि हसि हसि संकरि सासंकरि ॥
छं० ॥ ३२८ ॥

कलिमल हरि मंजन भव भ्रत भंजन जन हित संजन अरि गंजन॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ३२९ ॥

दूहा ॥ हरि जस जिम उज्जल सजल। तरल तरंगति अंग ॥
पाप विडारन अंग तें। भ्रंम तरुन्नि विहंग ॥ छं० ॥ ३३० ॥

राजा का गंगा स्नान करना।

बचनिका ॥ राजा षीरोदक पहिर स्नान कऱ्यौ।
तब चंद बहुरि और अस्तुति करत है ॥

कवि का पुनः गंगा जी की स्तुति करना।

(१) ए.-अमरत।

भुजंगी ॥ तिके दिष्षियै गंग चिहु पास बालं । तहां उप्पमा चंद जंपै विसालं ॥
जरै कामनाथं दया गंग आई । मनों हार धारी रती तत्त छाई ॥
छं० ॥ ३३१ ॥

भरै घट्ट भारं घटं नीरझाई । तहा चंद बंदी सु ओपम्म पाई ॥
ग्रसे चंद कुंभं करं इंद दंदं । मनों विश्व पारीर मेंटै फुनिंदं ॥
छं० ॥ ३३२ ॥

करै बाल अस्नान सोभै प्रकारं । तहां चिंतियं चंद ओपंमभारं ॥
चमकंत लकं सु कप्पोल सोहै । मंनों उद्धितम चंद कै पास राहै ॥
छं० ॥ ३३३ ॥

झलकं कनकं कलसंत नीरं । मनों मज्ज मथ्थै सुपंतीज मीरं ॥
दिष्षै गंग तट्टं कहै कव्वि कथ्थं । किधों [1] सुगति तिथ्थं किधौं काम तिथ्थं॥
छं० ॥ ३३४ ॥

कविचन्द का उस दासी का रूपलावण्य वर्णन करना ।

चंद्रायन ॥ दिष्यौ नगर सुहावो कवियन इह कहै ।
चष चंचल तन सुद्ध जु सिद्धति मन रहै ॥
कंचन कलस झकोरति गंगह जल भरै ।
सु कविचंद वरदाय सु ओपम तहँ करै ॥ छं० ॥ ३३५ ॥

चषतिष्षी वरबाल बाल मति सहस वर ।
आप मनोरथ करैं कवींद्रति मंडिनर ॥
सहज तमारि स फुल्लि अलिन ग्रीवाति मन ।
मधुसहज्ज बरषंत विहंगन सूर नन ॥ छं० ॥ ३३६ ॥

संक्षेप नख सिख वर्णन ।

कवित्त ॥ राह चंद इकलास । पास कोवंड कुरंगा ॥
कीर बिंबफल जुगल । उभय भूतेस अनंगा ॥
मग्गराज गजराज । राज पिष्षिय एकंतं ॥
पुच्छि तांम कविराज । कहा इह अचरिज वत्तं ॥

---

(१) ए. कृ. को. सुगति ।

बरदाइ ज्वाब दीनों बहुरि । निरषि तट गंग दासि तम ॥
आनक प्रताप जयचंद के । बैरभाव छंडिय[1] सु इन ॥ छं० ॥ ३३७ ॥

दासी के जल भरने का भाव वर्णन ।

दूहा ॥ द्रिग चंचल चंचल तरुनि । चितवत चित्त हरंति ॥
कंचन कलस झकोरि कैं । सुंदरि नीर भरंति ॥ छं० ॥ ३३८ ॥

जल भरती हुई दासी का नख सिख वर्णन ।

लघुनराज ॥ भरंति नीर सुंदरी । सु पांनि पत्त अंगुरी ॥
कनक्क बंक जे जुरी । तिलग्गि कट्टि जेहरी ॥ छं० ॥ ३३९ ॥
सुभाव सोभ पिंडुरी । जु मेन चित्तही भरी ॥
सकोल लोल जंघया । सुनील कच्छ रंभया ॥ छं० ॥ ३४० ॥
कटिंत सोभ संसुरी । बनी जु बांन केसरी ॥
अनंग छब्बि छत्तियां । कहंतं चंद बत्तियां[2] ॥ छं० ३४१ ॥
दुरांइ कुच उभभरे । मनो अनंग ही भरे ॥
रुलंत हार सोहए । विचित्त चित्त मोहए ॥ छं० ॥ ३४२ ॥
उठंत हथ्थ अंचले । रुलंत मुत्ति सजले ॥
कपोल लोल उज्जले । लहंत मोल सिंघले ॥ छं० ॥ ३४३ ॥
अरद्ध अद्ध रत्तए । मुक्कील कीर वत्तए ॥
सुहंत दंत आलिमी । कहंत बीय दालिमी ॥ छं० ॥ ३४४ ॥
गहंग कंठ नासिका । बिनाग राग सासिका ॥
जुभाय मुत्ति सोभए । दुभाय गंज लोभए ॥ छं० ३४५ ॥
दुराय कोय लोचने । प्रतष्य काम मोचने ॥
अषड्ड ओट भोंह ए । चलंत भोंह सोहए ॥ छं० ॥ ३४६ ॥
लिलाट राज आड़ ए । सरद्द चंद लाजए ॥
.... ॥ छं० ॥ ३४७ ॥

(१) ए. कृ. को.-मंडिय । (२) ए. कृ. को.-रत्तियां ।

पृथ्वीराज का कहना कि क्या इस दासी को केश हैं ही नहीं।

दूहा ॥ इसि प्रथिराज नरिंद कहि। कवि पुच्छौ अंदेस ॥
पंग दास आचिज्ज इह। बाल बरनि बिन केस ॥ छं० ॥ ३४८ ॥

कवि का दासी के केशों की उपमा वर्णन करना।

छिल्लो सुइ अलि की लता। श्रवन सुनहु चहुआन ॥
जनु भुजंग संमुष चढ़ै। कंच न षंभ प्रमान ॥ छं० ॥ ३४९ ॥

कवि का कहना कि यह सुंदरी नागरी नहीं वरन पनिहारिन है।

[1] रहि रहि चंद म गव्व करि। करहित कवित बिचारि ॥
जे तुम नयर सुंदरि कही। सह दिष्षिय पनिहारि ॥ छं० ॥ ३५० ॥

गाथा ॥ जे जंपी कविराजं। साजं सुष्याय किष्पियं बलयं ॥
तिरए छित्ति समस्तं। जानिउजे भूलयो कव्वी ॥ छं० ३५१ ॥

कन्नौज नगर की गृह महिलाओं की सुकोमलता और मर्य्यादा का वर्णन।

दूहा ॥ जाह्नवी तट दिषि दरस। रूपरासि ते दासि ॥
नगर सु नागर नर घरनि। रहहिं अवास अवास ॥ छं० ॥ ३५२ ॥
ते दरसन दिनयर दुलह। निय मंडप भरतार ॥
सुइ कारन विह निरमई। दुइ कत्तरि करतार ॥ छं० ॥ ३५३ ॥
पाव न धरनि परट्ठियै। उंच थांन जे बाल ॥
कै रवि देषत सलषननि। कै मुष कंत बिसाल ॥ छं० ॥ ३५४ ॥
कुवलय रवि लज्जा रहसि[2]। रहि भगि अंग सरब्ब ॥
सरस बुद्धि हंनन कियौ। दुल्लह तरुन तरुन्न ॥ छं० ॥ ३५५ ॥

उनके पतियों की प्रशंसा।

गाथा ॥ दुल्लह तरुनिनि मुष्षं। घन दीहंति ईस सेवायं ॥

(१) ए. कृ. को.-रहहि चन्द मम गर्व करि। (२) ए. कृ. को.-बिहसि।

जानिज्जै मन[1] अप्पं । [2]प्रीतमयं तप्प अधिकायं ॥ छं० ॥ ३५६ ॥

कन्नौज नगर की महिलाओं का सिख नख श्रृंगार वर्णन ।

दूहा ॥ पुनर मंडि जनमेज जगि । पित अरि कुल दइ अग्गि ॥
भग्गि शेषकुल शेष रहि । रहि चिय पीठनि लग्गि ॥छं०॥३५७॥

भुजंगी ॥ पुनर्जन्म जेते रहे जांनि जग्गे । सु ये सेस सेसा तिके पिट्ट लग्गे॥
मनं मग्ग[3] मोहन्न मोती न थानी । मनों धार आहार कै दूध तांनी॥
छं० ॥ ३५८ ॥

तिलक्कं नगं देषि जगजोति जग्गी । मनों रोहिनी रूप उर इंद लग्गी॥
हुग्रं अव्वरेषं भुअं देषि जग्यौ । मनों कांम चापं करं उड्डि लग्यौ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

[4]प्रगट्टे नयंनं विचिं ऐन दीसं । मनों जोति सारंग निर्वात रीसं ॥
तेज चाटंक ते श्रोन डोलं । मनों अर्क राका उदै अस्त लोलं ॥
छं० ॥ ३६० ॥

कही चंद कव्वी उपम्मा प्रमानं । मनों चंद रथभंग द्वै भान जानं ॥
उरज्जं अंभीरं भई मंझ झोलं[5] । उवं दिव्यदर्शी अरूढील बोलं ॥
छं० ॥ ३६१ ॥

अधर आरत्त तारत्त साईं । मनों चंद बिय विंब अरुने बनाई ॥
कहौं ओपमा दंत मोतीन कंती । मनों बीज माला जुगं सोभ पंती॥
छं० ॥ ३६२ ॥

कपोलं कलागी कली दीव सोहं । अलक्कं अरोहं प्रवाहंत मोहं ॥
सितं स्वाति बुंदं जिते[6] हार भारं । उभै ईस सीसं मनो गंग धारं॥
छं० ॥ ३६३ ॥

करं कोक नहंति कंचू समुभ्भं । मनो तिथ्थराया चिबल्ली अलुझ्झं॥
तिनं ओपमा पांनि आनंन[7] लभ्भं। लाजि कुल केलि दुरि मभ्झ गभ्भं॥
छं० ॥ ३६४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-नन । (२) ए. कृ. को.-प्रीतम पंत अप्प अधिकाय ।
* यह दोहा मो.-प्रति में नहीं है । (३) ए. कृ. को.-मगं । (४) मो.-प्रगुर ।
(५) मो. जोलं । (६) ए. कृ. को. जिसे । (७) ए.-आनंत ।

नितंवं उत्तंगं जुरे बे गयंदं । तिनं मभ्भ रिपुहीन रघ्यौ मयंदं ॥
कटी कांम मापी सुकामी करालं । मनों काम की जौति बद्धी सरालं ॥
छं० ॥ ३६५ ॥

जघं ब्रन्न सोवन्न मोहन्न[1] थंभं । मनों सीत उस्नेव रितु दोषरंभं ॥
मरंगी निरंगी सुपिंडी छछोटी । मनों कनक कुंदौरु कुंकु अलोटी ॥
छं० ॥ ३६६ ॥

किधौं केसरं रंग हेमं भकोरं । किधौं बद्धियं बांम मनमथ्थ जोरं ॥
सदं रोह आरोह मंजीर वादे । मदं छिद्र तेजं परंकार वादे ॥
छं० ॥ ३६७ ॥

पगं एड़िअं डंबरं श्रोन बानी । मनो कच्छ चीनीन में रत्त पांनी ॥
नषं न्त्रिमलं द्रप्पनं भाव दीसं । समीपं सुपीयं कियं मांन रीसं ॥
छं० ॥ ३६८ ॥

रगं अम्मरं[2] रत्त नीलंत पीतं । मनों पावसं धनुक सुरपत्ति कीतं ॥
सुकीवं सुजीवं जियं स्वामि जानं । रवी पंग दरसं अरब्यंद मानं ॥
छं० ॥ ३६९ ॥

दासी का घूंघट उघर जाना और उसका लज्जित होकर भागना।

कुंडलिया ॥ दरस चियन ढिल्ली न्त्रपति । सोवन घट वर हथ्थ ॥
वर घुघट छुटि पट्ट गौ । सटपट परि मनमथ्थ ॥
सटपट परि मनमथ्थ । [3]भेद वच कुच तट श्रेदं ॥
उष्ठ कंप जल द्रगन । लग्गि जंभायत भेदं ॥
सिथल सु गति लजि भगति । गलत पुंडरि तन सरसी ॥
निकट [4]निजल घट तजै । मुहर मुहरं पति दरसी ॥छं०॥३७०॥

दासी के मुखारविंद की शोभा वर्णन।

गाथा ॥ कमोदं वर विगासं । सरसीरुह सरसियं[5] तेजं ॥
चक्रति चक्क एकं । अरकं रकइ पृथ्थ संजोगं ॥ छं० ॥ ३७१ ॥

(१) ए. कृ. को. सोहन्न । (२) मो.-अंतर । (३) ए. कृ. को. भेद तट कुच वच्छेदं ।
(४) मो.-निज्जल । (५) ए. कृ. को.-सरसियं ।

गोरंत काच किलास। चंद मुखी दरसि सरसिय प्रतियं ॥
मवसं प्रांन वेसासी। दोहं मेकं सयं एक ॥ छं० ॥ ३७२ ॥
कुमुदं कुच प्रगासौ। हार वीचं तनं तयं अंबं ॥
अभिवर तरंग ओपं। रोमं राजीव सेवालं ॥ छं० ॥ ३७३ ॥
पावस धनुक सुकंती। अंबर नीलाइ पीतमं वाले ॥
जानिज्जै परमासं। स्यांम घनं मद्धि तड़िताय ॥ छं० ॥ ३७४ ॥

गंगा स्नान और पूजनादि करके राजा का चार कोस पश्चिम को चल कर डेरा डालना।

दूहा ॥ प्रथम स्नान गंगा निरषि। पुर रट्ठौर निवास ॥
फिरि पच्छिम दिसि उत्तरै। जोजन एक सुपास ॥ छं० ॥ ३७५ ॥

चोपाई ॥ जोजन एक गयौ चहुआनं। सोम सुभ्र तिथि षष्टी जांनं ॥
अंतरि पट्ट सुनंत नरिंदं। भर विंटे जनु पारस चंदं ॥
छं० ॥ ३७६ ॥

कवित्त ॥ सो पट्टन तजि न्रपति। चल्यौ कनवज्ज राज बल ॥
जाय संपनौ राव। गंग सुरसर सुरंग जल ॥
करि मिलान परमान। थान आस्रम्म सु उज्जल ॥
दीप जाप मन करै। ध्रंम भंजै सु अध्रम्म दल ॥
चहुआन दान षोड़स करिय। तिहि जय जय सुरलोक हुअ ॥
दिन पतत निसा बंधय सयन। रस षिल्लिय प्रथिराज जिय ॥
छं० ॥ ३७७ ॥

दूसरे दिन एक पहर रात्रि से तैय्यारी होना।

दूहा ॥ निसि नंषी चिंतान भर। भयंग प्रात तम भग्गि ॥
तरुन अरुन प्रगटिय किरनि। वर प्रयान न्रप जग्गि ॥ छं० ॥ ३७८ ॥
निसि चियाम विक्तिय सु जब। उच्छ सुपिन दा प्रान ॥
प्रात तेज उद्दित भयौ। चढ़ि चल्ल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ ३७९ ॥

(१) ए. कृ. को. थानं। (२) ए. कृ. को.-मपन्नौ।

राजा पृथ्वीराज का सुख से जागना और मंत्री का उपस्थित होकर प्रार्थना करना।

कवित्त ॥ जग्गि सु न्रप चहुआन। थान सामंत सूर फिरि ॥
चहूं राज कर जोरि। मंत कीनो सुमंत करि ॥
इहइ दिष्षि कनवज्ज। जहां बसि थान सुरत्तं ॥
दई विधिना न्रिम्मयौ। काल ग्रह आनि सु पत्तं ॥
मुष कालव्याल उंदर परै। ग्रास मुष्ष मंषी जियन ॥
तुम सत्त ग्रही बंधौति षग। मंत अप्प देषौ बयन ॥ छं० ॥ ३८० ॥

व्यूह बद्ध होकर पृथ्वीराज का कूच करना।

राज अग्ग गोयंद। बीर आहुट्ट नरेसर ॥
दाहिम्मौ नरसिंघ। चंदपुंडीर सूर सर ॥
सोलंकी सारंग। राव कूरंभ पजूनं ॥
खोहा लंगरिराव। षग्ग मग्गह दह गूनं ॥
लष्यन बघेल गुज्जर कनक। बारहसिंघ सु अग्ग चलि ॥
विय सेन सब्ब साईं सु पुछि। षग्ग मग्ग जिन बल अकल ॥छं०॥३८१॥
दूहा ॥ इह समग्ग सब सेन चलि। दिसि कनवज्ज नरिंद ॥
प्रथीराज ढिग राजई। मधि कविता [1]वरचंद ॥ छं० ॥ ३८२ ॥

सबका मिलकर कन्ह से पट्टी खोलने को कहना और कन्ह का आखों पर से पट्टी उतारना।

एक दिसा उत्तरि न्रपति। [2]आरन छिनक सपन्न ॥
मतौ करन सांई सु भृत। पुच्छहिं आय सु कन्ह ॥ छं० ॥ ३८३ ॥
कवित्त ॥ सुनि कन्हा चहुआन। ग्रेह कैमास न मंची ॥
तंतसार बिन तुंब। जंच वाजै छिन [3]जंची ॥
चंद दंद उप्पाय। गंज विष [4]अग्गि लगाई ॥
सुभर भम्म रजपूत। पत्ति रष्षे पति पाई ॥

(१) ए. कृ. को. कविचन्द। (२) ए. कृ. को.-अरनि।
(३) मो. मंत्री। (४) ए. कृ. को.-आंग।

दरबार पंग दिवान भर। कल जलह सौ उछलै ॥
पुच्छौ सु इच्छ बल मंत बर। दल भंजै पुज्जै दलै ॥ छं० ॥ ३८४ ॥

सुनि कन्हा चहुआन। कन्ह विध्यौ जु कन्ह जुगि ॥
कन्ह अनी कुव्वर। मेछ मोरन मुट्ठि षगि ॥
सामध्रम्म अगि प्रान। नीति राषन राजंनिय ॥
तिहि कारन तुम्ह अषि। निहि पाटी जुग आनिय ॥
आचिज्ज लोइ कनवज्ज वर। पूछि न दिषि तन तन नयन ॥
प्रथिराज काज तौ सुम्झरौ। छोरि पट्ट सह्रौ सयन ॥छं०॥३८५॥

तत्पश्चात् आगे चलना और प्रभात समय कन्नौज में जा पहुंचना।

दूहा ॥ कूच करिग भावी श्रवन। बर बर चलि सहरत्त ॥
प्रात भयौ कनवज्ज फिरि। सुनि निसान धुनि पत्त ॥छं०॥३८६॥

कन्ह मंत मिरतेज बर। बर पुच्छन हग सब्ब ॥
बर भावी गति चिंतकिय। नयन सु बरजी तब्ब ॥ छं० ॥ ३८७ ॥

देवी के मंदिर की शोभा और देवी की स्तुति।

भुजंगी ॥ [1]जहां दिष्षियै जासु संदेह सेहं। उभं अर्क सा कोटि संपन्न देहं॥
बने मंडपं जासु सोभन्न गेहं। तिनं मुत्तियं छच दीसै न छेहं ॥
छं० ॥ ३८८ ॥

रुधिं सित्त माहीष बहु मध्य रत्ती। तिनं प्रात पूजंत न्रनेम अत्ती॥
भुजं डंड दुंदेस देसं प्रकारं। अमी देवता इंद्र लभ्भै न पारं ॥
छं० ॥ ३८९ ॥

बजै दुंदभी देव देवाल नित्तं। बरं उट्ठि संगीत गानं पवित्तं ॥
बजै मद्द झंझै समं जोग भिद्दं। निरत्तं न पायं तिनं कब्बिचंदं॥
छं० ॥ ३९० ॥

(१) ए. कृ. को.-तहां।

मुष पंड भारथ्थ बिय वैर साजी। मुष देषि चहुआन किलकारि गाजी॥
प्रभा भान तेजं विराजै अकारी। मनों अग्नि ज्वाला जलं में उजारी॥
छं० ॥ ३९१ ॥

[1]नमो तुम्म तातं नमो मात साई। तुम्मं सक्ति रूपं जगत्तं बताई॥
तुम्मं थावरं जंगमं थान थानं। तुम्मं सत्त पाताल सरतं सतानं॥
छं० ॥ ३९२ ।

तुम्मं मारुतं पानियं अग्गि मट्टी। तुम्मं पंचभूतं स्वयं देह थट्टी॥
तुम्मं स्वस्ति चंदं अनंदं अनंदी। भई मोह माया जपै जाप बंदी॥
छं० ॥ ३९३ ॥

तबै बैन आकास मद्धि भयौ ताजं। तुमं होइ जैपत्त प्रथिराज राजं॥
तबं दच्छिनं अंग करि नमसकारं। धुम्मं मध्यता नैर कीजै विचारं॥
छं० ॥ ३९४ ॥

सरस्वती रूप की स्तुति।

साटक ॥ वीना धारन अग्र अग्रति दिवं, देवं तमं भूतलं ॥
तूं वाले जल जी जगंत कलया, जोगिंद माया दुतिं ॥
त्वं सारं संसार पार करनी, तोयं तुम्मं सारसं ॥
दं दीनं दारिद्र दैत्य दलनी, मातं त्वया द्रुग्गया ॥ छं० ॥ ३९५ ॥

कवि का देवी से प्रार्थना करना कि पृथ्वीराज की सहायता करना।

दूहा ॥ [2]कै मातुल कै प्रकृति तू। कै पुरिषत्व प्रमान ॥
तुं सब छचिन मंझ है। तू रष्षै चहुआन ॥ छं० ॥ ३९६ ॥

गाथा ॥ लज्जा रूप सुदेवी। हवी हवीतेज [3]सुगति का गनया ॥
किय कमलं सु जेयं। बंधि पानि उच्चरै बलयं ॥ छं० ॥ ३९७ ॥
तूं धारन संसारं। चंदं चंद किक्तियौ सुनियं ॥
ज्यौं पंडव मंझ प्रगट्टी। अब हुज्जे राज मझ्झाइं ॥छं०॥३९८॥

(१) ए. कृ. को.-नमो तु अतातं।
(२) ए. कृ. को. "कै मातुल परकृति गति"। (३) ए. कृ. को. संगीत।

चौपाई ॥ इच्छा नाम छचि जौ लेई । सार धार दुस्सिन बल कोई ॥
चौ मृगा छल दाषें वीर । जौ गुन होइ [1]जु मध्यसरीर ॥
छं० ॥ ३९९ ॥

कवि का कहना कि नगर को दहनी प्रादिक्षणा देकर चलना चाहिए ।

दूहा ॥ किय विचार न्रप नगर कौ । सह सामंत समेव ॥
चंद बुझ्भि तब मन कियौ । चल्यौ सु [2]दष्यन देव ॥छं०॥४००॥
देत प्रदिष्यन नगर कौं । होत तहां बहु बार ॥
राज देष पच्छै करै । एह सकल विचार ॥ छं० ॥ ४०१ ॥
हर सिद्धी परनाम करि । राषि समंत सु साज ॥
कनवज दिष्यन राज गह । चल्यौ चंद वर राज ॥ छं० ॥ ४०२ ॥

पृथ्वीराज के नगर द्वार पर पहुंचते ही भांति भांति के अशकुन होना ।

भुजंगी ॥ वजै पंग नीसान प्रातं प्रमानं । धरी श्रंक भोमं चली थान थानं ॥
कहै चंद कब्बी उपम्मा सु पत्तं । गजै मेघ मानो नछत्तं सहित्तं ॥
छं० ॥ ४०३ ॥
धुनं संभरी कन्न माभ्रंत भीतं । ग्रहै साध ध्रम्मं सहै साधु नीतं ॥
सधें मग्ग हेतं ग्रहं ध्रम्म जीयं । [3]निहं दोस मंदेह छत्तं [4]पतीयं॥
छं० ॥ ४०४ ॥
सोई भ्रंम कन्हं चितंतं प्रमानं । दिषी लज्जि सब्बं कन्नं जोति मानं॥
धरै सामध्रमं जिनं धूम्र लीनं । जिनं जित्तियं जस्स देहं न कीनं ॥
छं० ॥ ४०५ ॥
सगुनं प्रथीराज दीसै नरिंदं । धुरं पैसते भोम पहु पंग इंदं ॥
बुलै देवि वामं घटं वाल मध्यै । बुलै वायसं वाम चढ़ि श्रस्ति रथ्यै॥
छं० ॥ ४०६ ॥

(१) मो.-सु । (२) ए. कृ. को. दिष्यन ।
(३) ए. कृ. को.-तिहं । (४) ए. कृ. को.-पयाहिं ।

दिषौ राज दिष्टं गलंतौ अ ईसं। लरै वाम मंदी अनंतं सुरीसं॥
दिसा दच्छिनौ सोइ भट्टी सु जागौ। तहां चक्रितं चित्त कविचंद लागौ॥
छं० ॥ ४०७ ॥

कवित्त ॥ असुभ सगुन मंगल न। चित्त चहुआन विचारी॥
मग्ग अग्ग मंजार। वाम दष्षिन निकारी॥
वर उच्छिष्ट पावक्क। विघ्न तिन मझ्झ चमंकै॥
मेघ वृष्टि आकास। मध्य धुमंरिय गहक्कै॥
आरिष्ट भाव कविचंद कहि। तव चिंत्यौ न्रिमान वसि॥
भावी विजत्ति भंजन गढ़न। सुनि चहुआन नरिंद हसि॥
छं० ॥ ४०८ ॥

दूहा ॥ सिंगिनि वंदि विरंम करि। वाग पंग न्रप आइ॥
दिषि आराम सिष ग्रह परसि। रहि सुगंध वरछाइ॥छं०॥४०९॥

कन्नौज नगर का विस्तार और उसके चारों तरफ के बागानों का वर्णन।

भवर टोल झंकार वर। सुमन राइ फल लिद्ध॥
क्रूर दिष्ट मन रह वढौ। ससि तारक छित रिद्ध॥छं०॥ ४१० ॥

पद्धरी ॥ वर मग्ग वग्ग चिहु कोद दिष्षि। विस्तार पंच जोजन्न लष्षि॥
कछ मग्ग भोमि चिहुं मग्ग दिस्सि। नारिंग सुमन दारिम विगस्सि
छं० ॥ ४११ ॥

प्रतिव्यंब अंभ झलकत सरूप। उप्पम तास वरनत अनूप॥
नव विद्ध गत्ति सह जल प्रवेस। सुमकंत झुंड दिष्षौ सुदेस॥
छं० ॥ ४१२ ॥

प्रतिव्यंब झलकि चंपक प्रसून। उप्पंम देषि कविचंद दून॥
दीपक्क माल मनमथ्थ कौन। हरभयति दिष्षि इह लोक दीन॥
छं० ॥ ४१३ ॥

हलहलत लता दमकंत वाय। मनु वध्धौ सपतसुर भंग पाइ॥
चल्लै सुगंध वर सीत वत्त। जानियै सव्व हथ्थीन जित्त॥
छं० ॥ ४१४ ॥

भुजंगी ॥ तहां प्रात प्रातं विंबं श्रंब मौरे। सुरं कंठ कलियंठ रस प्रस्स झोरें ॥
फली फूल वेली तरं चढ़ि सोहै। तिनं श्रोपमा दैन कविचंद मोहै॥
छं० ॥ ४१५ ॥

रवी तेज देषी ससी बाल भागी। मनों तारिका उड्डि तर सब्ब लागी॥
कहों जूहि जंभीर गंभीर वासी। तमी तष्पनी सेव सीसंम सासी ॥
छं० ॥ ४१६ ॥

ग्रसै मोर मकरंद उड़ि बाग मेंही। मनों विरहनी [1]दिग्घ उस्सास लेही॥
कितें एक बीजोर फल [2]भार लुट्टै। [3]मनों जीवनं पीउ पीयूष फुट्टै॥
छं० ॥ ४१७ ॥

कहूं सेवसत्ती फुलै ते प्रकारं। किधों दिष्षियं प्रगट मकरंद तारं ॥
कहूं सोभही यट्ट गुल्लाल फूलं। चषं भोर मकरंद सहफूल भूलं ॥
छं० ॥ ४१८ ॥

वरं बोरसरि फूल फूली सुरंगी। छके भोर झौरं मनं होइ पंगी ॥
कहूं कहल्ली सेसुरंगं जु पंती। किधों [4]मंन मथ्थं कि बीथैं धमंती ॥
छं० ॥ ४१९ ॥

घरी एक चहुश्रान तिन थान राही। असंसार संसार संसार काही॥
तरं पिंड आकास फुलै निनारै। वरन्न वरन्नं अनेकं सवारे ॥
छं० ॥ ४२० ॥

सबैं कव्विराजं उपम्मा न पग्गी। मनों नौ ग्रहं वार रस आय मग्गी॥
कवी जे जुवानं मनं ओप जानै। कवी जेम वत्तं रसं सो बषानै॥
छं० ॥ ४२१ ॥

न लालं न [5]पिंगी षजूरं अमग्गी। नरं उंच त्रिषंत सो सीस पग्गी॥
छं० ॥ ४२२ ॥

पृथ्वीराज का नगर में पैठना।

दूहा ॥ विलम सगुन चल्यौ न्टपति। नेन दरसि सो सथ्थ ॥
वर दीसी हट मैर कौ। मिलन पसारत हथ्थ ॥ छं० ॥ ४२३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-दीरघ, दीर्घ। (२) ए. कृ. को.-प्रात।
(३) ए. कृ. को.-"मनों जीवनं पीय पी पीउ फुट्टै"। (४) मो.-मनमथ्थ।
(५) ए. कृ. को. पीगी।

नगर प्रवेसनि देषि नृप। जूप साल जेठाइ॥
ता इच्छन रस उप्पज्यौ। कहंत चंद वरदाइ॥ छं०॥ ४२४॥

नगर के बाह्यप्रान्त के वासियों का रूपक तदनन्तर नगर का दृश्य वर्णन।

भुजंगी॥ जिते लंगरी रूप दिन के प्रसंगा। तिते दिष्षियै कोटि कोपीन नंगा
जिते जूपकों चोप चोंपें जु आरी। तिते उच्चरैं सो आनंन पारी॥
छं०॥ ४२५॥
जिते साधु संमारि षेलंत लष्षे। तिते दिष्षियै भूप दामंत पष्षे॥
जिते छैल संघाट वेस्यानि रत्ते। तिते द्रव्य के हीन हीनंत गत्ते॥
छं०॥ ४२६॥
जिते दासि कै वास लग्गे सु रूपा। मनों मीन चाहंत बग मध्य कूपा॥
किते नाइका दिष्षि नर नैन डुल्लै। रहैं सुरह लोकं सुरं दिष्षि भुल्लै॥
छं०॥ ४२७॥
बचं उच्चरै बेंन निसि की उज्जग्गी। मनो कोकिला भाष संगीत लग्गी॥
उडै उंच अब्बीर सेज्या समारै। मनों होइ वासंत भूपाल द्वारै॥
छं०॥ ४२८॥
कुसम्मं समं चीर संकीर सोभा। मनो मध्यता काम कद्ली सु ग्रभा॥
रसं राग छत्तीस कैंठं करंती। बरं बीन बाजिच हथ्थें धरंती॥
छं०॥ ४२९॥
तिनें देषि असमान म्रग्गी ठठुक्की। मनो मेनिका न्रत्य तें ताल चुक्की॥
बरन्नंत भार्व लगें जुग्ग सारे। इसे पट्टनं ग्रेह दिष्षे सवारे॥
छं०॥ ४३०॥

दूहा॥ सो पट्टन रट्ठौर पुर। उज्जल पुण्य विपष्य॥
कोट नगर नायक सघन। धज बंधी तिन लष्य॥ छं०॥ ४३१॥

नाराच॥ सु लाष लाष द्रव्य जासु नित्य एक उट्ठवै।
अनेक राइ जासु भाइ आय आय बिट्ठवै॥
सुगंध तार काल मानसा मृदंग सुब्भवै।
सु दछिनं समस्त रूप स्याम काम लुब्भवै॥ छं०॥ ४३२॥

सु छंद चारु धुक्ष देस सेस कंठ गावहीं।
उपंग बीन तासु पानि वालते बजावहीं॥
गमन्नि ते अनंग रंग संग ए परछए।
सु बीर सा अरद्ध अंग पट्टि पाच नछए॥ छं० ॥ ४३३ ॥

सवद्द सुभ्भ उच्चरें सु कित्ति का वषानिए॥
नरिंद इंद इत्त ने सु कोटि इंद जानिए॥ छं० ॥ ४३४ ॥

कन्नौज नगर के पुरजनों का वर्णन।

दूहा॥ अमग हट्ट पट्टन नयर। रत्न मुत्ति मनिहार॥
हाटक पट धन धात सह। तुछ तुछ दिष्षि सवार॥ छं० ॥ ४३५ ॥

मोतीदाम॥ अमग्गति हट्टति पट्टन मंझ। मनों द्रग देवल फूलिय संझ॥
जु नष्षहि मोरि तमोरि सु ठार। उलिंचत कीच कि पीक उगार॥
छं० ॥ ४३६ ॥

मिलै पद पह सु वेदल चंप। सु सीत समीर मनो हिम कंप॥
जु वेलि सेवंतिय गुंथहि जाइ। दियै द्रब दासि सु लेहि ढहाइ॥
छं० ॥ ४३७ ॥

सुबुद्धि बजावत बीन अलाप। अनेक कथा कथ ग्रंथ कलाप॥
बिवेक बजाज सु बेचहि सार। छुरंत नवारुर द्रुमंहि तार॥
छं० ॥ ४३८ ॥

ति देषहि नारि सकुंज पटोर। मनो दुज दष्षन लागहि थोर॥
सु मोति जराइ मढ़े बहु भाइ। जु कढ़हि कोरि कहै सुनि गाइ॥
छं० ॥ ४३९ ॥

सु लेतन सुष्ष रहै अपनाइ। जु सेज सुगंध रहे पलटाइ॥
लहंलह तानक तानति बाम। बनी चिय दीसहि कामभिराम॥
छं० ॥ ४४० ॥

जराव कनक्क जरंज कसंत। मनो भयौ बासुर जामिन अंत॥
कसिक्कसि हेम सु काढ़त तार। उगंत कि हंसह क्रम्म प्रकार॥
छं० ॥ ४४१ ॥

करंकर कंकन अंकह ओव। मनौं दुजहीन सरद्दहि सोव॥
अरे जिव प्रान प्रकारति लाल। मनौं ससि सम्भ्भइ तार विसाल॥
छं० ॥ ४४२ ॥

ललंत अुपंतत राजनु ओप। मनौं घन मद्धि तड़िक्तइ ओप॥
अरेजिव नंग सुरंग सुघाटि। ति सुंदरि सोभ उवावति पाट॥
छं० ॥ ४४३ ॥

दु अंगुलि ओरि निरष्षहि हीर। मनौं फल बिंबहि चं पहि कीरि॥
नषं नष चाहति मुत्तिय अंस। मनौं भष छंडि रह्यौ गहि हंस॥
॥ छं० ॥ ४४४ ॥

दसौं दिसि पूरि हयग्गय भार। सु पुच्छत चंद गयौ दरवार॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ४४५ ॥

कविचन्द का राजा सहित राजद्वार पर पहुंचना॥

दूहा॥ हय गय दल सुंदरि सहर। औ बरनौं बहुबार॥
इह चरित्त कह लगि कहूं। चलि पहुपंग दुआर॥
॥छं० ॥ ४४६ ॥

चलत अग्ग दिष्यौ न्टपति। हरि सिद्धी सु प्रसाद॥
चंद नम्मि अस्तुति करिय। हरिय अघ्घ अपराध॥ छं० ॥ ४४७॥

कौतूहल दिष्षे सकल। अकल अपूरब बट्ट॥
पानधार छर छग्गरह। राजग्रही बर भट्ट॥ छं० ॥ ४४८ ॥

राजद्वार और दरवार का वर्णन।

कवित्त॥ गज घंटन हय पेह। विविध पसुजन समाज हुव॥
घन निसान घुम्मरत। प्रबल परिजन समथ्थ भव॥
विविध बज्ज बज्जत सु। चंद भर भीर उमत्तिय।
इक्क लग्ग आवत सु। इक्क नरपत्ति समथ्थिय॥

(१) ए. कृ. को.-पुंपावहि। (२) ए. कृ. को. जंपहि। (३) ए. कृ. को -गनौं।
(४) ए. कृ. को. छग्गल छलह। (५) मो.-हेष। (६) ए. कृ. को.-रच।

पुंभीय अवनि सुम्भय महल । जनु डुल्लित उभ्भिय करन ॥
दरबार राज कमधज्ज की । अग मंडन मभझह धरनि ॥

छं० ॥ ४४९ ॥

कौतूहल आलम अलाप । दिष्षिय दर चंदह ॥
षंगराइ दरबार । बार आगत जै विंदह ॥
सत जुग्गह बलिराइ । नगर पुर ध्रंम प्रमानं ॥
त्रितिय जुग्ग रघुनाथ । अवधि पट्टन वर थानं ॥
द्वापरह नाग नागर नगर । जुरा जोध तप्पे सुतप ॥
जै चंद दंद दाह दलन । कलि कमधज कनवज्ज नृप ॥

॥ छं० ॥ ४५० ॥

दिष्षि चंद दरबार । छच धरि फिरिहि विनहमद ॥
भ्रमर गुंज घुंजरत ।(१)कत्त क्रमंत दुरद रद ॥
अनुचर अनुसंकारह । मत्त गम्मित कंठीरव ॥
वासुर संझ विहारि । वारि अचवत अभंग भव ॥
दिष्षियै द्रुगम सुग्गम सुघन । सुगम द्रुगम जयचंद ग्रह ॥
सब जंत तंत जिम मर कटकि । समन दमन बस भूरि बह ।

छं० ॥ ४५१ ॥

कन्नौज राज्य की सेना और यहां की गढ़रक्षा का सैनिक प्रबंध वर्णन ।

लष्ष सुभर आवंत । लष्ष दरवार हरज्जै ।
लष्षह गोलंदाज । लष्ष इक नालि भरिज्जै ॥
लष्ष तानि सिलहाम । गिरद रष्षै दरबारह ॥
पाइक लष्ष प्रचंड । संक मानै नह सारह ॥
लष असिय सकल सेवा करै । द्वादस सूरज जोति कल ॥
लष तीन तुरय पष्षर सहित । पवन पाइ ऐराक भल ॥

छं० ॥ ४५२ ॥

(१) ए. कृ. को. मुकत क्रमत दुरहु रद ।

नागाओं की फौज का वर्णन।

गज्जत जलधि प्रमान। संष धुनि बज्जत भारिय ॥
मनक्रम चिय बच रहित। सहित सन्नाह सुधारिय ॥
रिष सरूप जयचंद। सहस संषहधुनि रष्षन ॥
आवध सास प्रलंब। षंभ रुप्यौ अति तिब्बन ॥
मन सित्त एक हथ्थिय फटक। इक हथ्थ झेलत बल ॥
भुज दंड प्रचंड उचाय कर। धरत आनि मदगल कि मल ॥
छं० ॥ ४५३ ॥

नागा लोगों के बल और उनकी बहादुरी का वर्णन।

हथ सित जाध षंभ। बान नंषत सत भारिय ॥
फोरत लोह प्रचंड। मुट्ठि चौसट्ठि प्रचारिय ॥
किनकि संगि नंषंत। धरनि षुंभत तिष्यारिय ॥
कितक बथ्थ भरि षभ। कढ्ढि नंषत उछारिय ॥
इम रमत सहस संषह धुनिय। रिषि सरूप प्राक्रम अतुल ॥
उच्चर्यो राज भट्टह सरस। इह कौतूहल पिषिष भल ॥
॥ छं० ॥ ४५४ ॥

संखधुनी लोगों का स्वरूप और बल वर्णन।

मोरपंष तन वस्त्र। मोर सिर मुकुट विराजत ॥
मोर पंष बल्लभ अनंत। पंषे कर साजत ॥
तप सु तेज षिचौय। चष्ष बघघह भुज सुंडह ॥
पग नेवर झनकार। समर मेरं गिरि मंडह ॥
अवतार रूप दरसंत भल। संष बजावत माधरिय ॥
लष असी मभ्झ पौरुष अतुल। धर कंपत पग्गह धरिय ॥
॥ छं० ॥ ४५५ ॥

---

(१) मो.-इक।

पृथ्वीराज का उन्हें देख कर शंकित होना और कवि का कहना कि इन्हें अत्तताई मारेगा।

दूहा ॥ पिष्षि पराक्रम राज इह। विरत भयौ मन मंझ ॥
चंद वरद्दिय उकति करि। सामंत सूर समंझ ॥
॥ छं० ॥ ४५६ ॥

कहिय चंद राजन्न प्रति। कहा सोचि मन मंडि ॥
अत्तताइय जुध जुरै। अब इन सम्चन षंडि ॥
॥ छं० ॥ ४५७ ॥

भाषनि भाष सु मिलिय दिस। दई सिसिर वनि इंद ॥
नव नव रस अरु सघन सघ। जोध सुपंग नरिंद ॥ छं० ॥ ४५८ ॥

पद्धरी ॥ संचरिय देस भाषा न भाष। राथान राय साषान साष ॥
नौवत्ति वज्जि भर तीन लाष।[1]चक्रित सुनाय हुअ निच विसाष ॥
छं० ॥ ४५९ ॥

सामंतो का कहना कि चलो खुल कर देखें कौन कैसा बली है।

दूहा ॥ निसि नौवति मिल्लि प्रात मिल्लि। हय गय देषिय साज ॥
विचरि सुभर करिवर [2]गहिय। किनहि कहिय प्रथिराज ॥
॥ छं० ॥ ४६० ॥

कवि चंद का मना करना।

कहहि चंद दंद न करहु। रे सामंत कुमार ॥
तीन लष्य निसि दिन रहै। इह जैचंद दुआर ॥
॥ छं० ॥ ४६१ ॥

उसका कहना कि समयोचित कार्य करना बुद्धिमानी है देखो पहिले सब ने ऐसा ही किया है।

(१) ए. कृ. को.-"चक्रित सुनाथ दुम निरषि साष" (२) मो.-गहिउ।

कवित्त ॥ एक ठौर[1] पृथिराज । रास मंगै इल काजै ॥
समौ ताकि गोविंदि । अग जरासिंध सुभाजै ॥
समौ जानि श्रीराम । बैर पति कासिय मुक्किय ॥
समौ ताकि पंडवन । देह जस बल अप लुक्किय ॥
मतिसिद्ध पुरष तक्कै समौ । मनह मनोरथ चिंति मति ॥
कवि कहल केलि लागी विषम । टारी टरै न पुब्बगति ॥
छं० ॥ ४६२ ॥

राजा का कवि की बात स्वीकार करना।

दूहा ॥ मांनि राज रिस रीस मन । चिंति उदै प्रथुदुत्ति ॥
सो आगी श्रो तान जल । सन भौ कंद उपत्ति ॥ छं० ॥ ४६३ ॥

कवि का पूछते पूछते द्वारपालों के अफसर हेजम कुमार रघुवंशी के पास जाना।

मुरिल्ल ॥ पुच्छत चंद गयौ दरवारह । जहां हजम रघुवंस कुमारह ॥
जिहि हरि सिद्धि पास वर पायौ । सु कविचंद दिल्लिय तैं आयौ
छं० ॥ ४६४ ॥

द्वारपालों का वर्णन।

कवित्त ॥ करनि कनक मय दंड । परम उद्दंड चंड बल ॥
दिध्घ देह संदर समथ्थ । अति सुमति सु न्निमल ॥
प्रति नर प्रीति प्रसन्न । परम सपन्न सब्ब अग ॥
अवर भूप पिच्छत नयन । परसाद लग्गि[1]नग ॥
सुकलभ्भ कलपतरु वग्ग जिम । पुन्य पुंज पुज्जिय सुमुष ॥
प्रति हार राज दरवार मद्धि । दिषि वरदाय नमित्त हुष ॥
छं० ॥ ४६५ ॥

प्रतिहार का पूछना कि कौन हो? कहां से आए? कहां जाओगे?

(१) ए. कृ. को.-पग।

मुरिल्ल॥ कहि कंविद हेजम बुल्लिय हसि। कोने जाने बर चलिय कौन दिस॥
को न्रप सेव देव को नाम। किहि दिसि चिंत करयौ परिनाम॥
छं० ॥ ४६६ ॥

कवि का अपना नाम ग्राम बतलाना।

हौ हेजम रघुवंस कुमार। न्रिप चहुआन प्रथी अवतार॥
फिरि ढिल्ली कविआन नरिंद। मो बर नाम कहै कविचंद॥
छं० ॥ ४६७ ॥

हेजम कुमार का कवि पर कटाक्ष करना।

द्वारपालवाक्य।

स्लोक॥ मंगिवांम विवारंतो कविन, संधिवान् किं विग्रहात्॥
जुद्धवान पंग राएन्। ना भूतो न भविष्यति॥ छं० ॥ ४६८ ॥
दूहा॥ बैरी काटन राज बच। डंड भरन परधान॥
सेवा मानन भेदियन। हिंदू [1]मूसलमान॥ छं० ॥ ४६९ ॥

कवि का उत्तर देना

[2]असतिनि बोलहु हेजमन। ग्रेह्न करहु जिम आलि॥
जु कछु समर विन्ने रनह। इहै देषहु तुम कालिह॥ छं० ॥ ४७० ॥

हेजम कुमार का कवि को सादर आसन देना।

आदर करि आसन दियौ। पालक पंग नरिंद॥
छिनक विलंबहु सुहित करि। जब लगि कहौं कंविद॥
॥ छं० ॥ ४७१ ॥

हेजम कुमार का वचन।

पंग दरस अचन मिसह। कै मोकलिग बसीठ॥
कै मिलि षह मंडल न्रपति। राज राज सू दीठ॥ छं० ॥ ४७२ ॥

---

(१) ए. मुसलमान। (२) मो.-असत बोलहु हजमने।

कवि का कहना कि कवि लोग बसीठ पन नहीं करते ।

कुंडलिया ॥ सुनि हेजम रघुवंस वर । भट्ट बसीठ न हुंति ॥
पति घट्टत्त छिनकइ मरै । जस मंगन नन षंति ॥
जस मंगन नन षंति । कौन प्रथिराज दान बरि ॥
का दिष्षन राज सू । कहा नलराइ जुधिष्ठिर ॥
मंडली मोहि जाचन नियम । दरिद्द करिय चहुआन चुनि ॥
पंगुरौ न्त्रपति देषन मनह । रघुबंसी हेजम्म सुनि ॥ छं० ॥ ४७३ ॥

कवित्त ॥ तू मंगन कविचंद । सथ्थ मंगन नन होइय ॥
तौ देषत तिय थान । इंद्र भुल्लिय [1]द्रग जोइय ॥
एह कपट कवि हस्यौ । नयन दिष्षियै निनारै ॥
न्त्रपम होइ दरबार । भूत भय छंद विचारै ॥
दरबार कह्नि बिरम्यौ न्त्रपति । [2]भर संमुह रष्यौ न दर ॥
तुम राज नीत जानहु सकल । हुकम बिना रष्यौ न भर ॥
॥ छं० ॥ ४७४ ॥

दूहा ॥ तहां बिरम कीनौं सु कवि । सष सामंत बहोरि ॥
चंद फेरि दष्षिन दिसा । भर उभ्भै बरजोर ॥ छं० ॥ ४७५ ॥

हेजम कुमार का उसे बिठा कर जैचन्द के पास जाकर उसकी इत्तला करना ।

न्त्रप कवि हेजम मझ्झि दर । रष्षि गयौ न्त्रप पास ॥
भट्ट संपतौ राज पै । वंने चंद विलास ॥ छं० ॥ ४७६ ॥

आदर करि हेजम [3]कविहि । गयौ जहां न्त्रपति नरिंद ॥
दिल्लियपति चहुआन कौ । कह असीस कविचंद ॥
॥ छं० ॥ ४७७ ॥

सुनत हेत हेजम उठिग । दिषत चंद बरदाइ ॥
न्त्रप आगे गुदरन गयौ । जहां पंग न्त्रप आहि ॥ छं० ॥ ४७८ ॥

(१) ए. कृ. को.-जुग । (२) ए. कृ. को.-तर । (३) ए. कृ. को.-सुकवि ।

हेजम गय पहु पंग पैं । स्वामि आय कविचंद ॥
मत जंपी बुल्ल्यौ सुभट । सुनि सुनि सोभ नरिंद ॥
॥ छं० ॥ ४७९ ॥

जो करिजै चिंतक सुतौ । जानत होइ अजान ॥
हरुअत्तन गरुअत करै । सोई न्रपति सयान ॥ छं० ॥ ४८० ॥

हेजम कुमार का जैचन्द को बाकायदे प्रणाम करके कवि के आने का समाचार कहना ।

वस्तबंध रूपक ॥ तब सु हेजम तब सुहेजम। जुगम कर जोरि ॥
.... । .... ॥
सीस नयौ [1]दसवार तिहि । सेत छत्रपति मद सुदिट्ठौ ॥
सकल बंध सध्यह नयन । चकित चित बुल्लै गरिट्ठौ ॥
तब सु कियौ परनाम तिहि । बर करी राय [2]प्रतिहार ॥
जिहि प्रसन्न सरसति कहै । सुकविचंद दरबार ॥ छं० ॥ ४८१ ॥

दूहा ॥ सीस नायि बुल्लो वयन । औसर पंग रजेस ॥
कवि जौ जुग्गिनि पुर कहै । संपत्तौ द्वारेस ॥ छं० ॥ ४८२ ॥

कवि की तारीफ ।

कवि सरस बानी सरस । कित्ती रूप प्रमान ॥
चंद [4]बत्त हर विदुष जन । गोपंथिती समान ॥ छं० ॥ ४८३ ॥
गुन आगंम समंद जौ । उक्त तिल हरि तरंग ॥
जषति कवित रज्जाद ज्यौं । रतन वच्च प्रषरंग ॥ छं० ॥ ४८४ ॥
संमिय अगुनि प्रगास ज्यौं । गत्ति जुगत्ति विचार ॥
सुष्प नरेस निधान धन । [5]जनु अर्जुन भटवार ॥ छं० ॥ ४८५ ॥
गुन बिद्यौ नष्षै धनौ । तोन प्रकारय कित्ति ॥
सरसेसर उतकंठ कर । ग्रब्बह तत कवि दित्त ॥ छं० ॥ ४८६ ॥

(१) कृ. को.-दरवार, दसार　(२) ए. कृ. को नट ।　(३) मो.-प्रहार ।
(४) मो.-बल्लहे ।　(५) ए. कृ. को. अनु

आडंबर वर भट्ट बहु। भर वर सथ्थ कविंद ॥
तब रक्खौ दरबार में। संग रष्षि कविचंद ॥ छं० ॥ ४८७ ॥

राजा जैचन्द का दसोंधी को कवि की परीक्षा करने की आज्ञा देना।

बयन सुन्यौ रघुवंस कौ। भय सुभ सुभहि नरिंद ॥
तिन दसोंधिय सों कह्यौ। बोलि परष्षहु चंद ॥ छं० ॥ ४८८ ॥
कवियन तन चाह्यौ न्त्रपति। जो मुष तकौ न जान ॥
जौ लाइक लष्यौ लषन। तौ लाओ इन थान ॥ छं० ॥ ४८९ ॥

* दसोंधी का कवि से मिलकर प्रसन्न होना।

चौपाई ॥ आयस भौगु तियम तन चाह्यौ। तिन परनाम कियौ सिर नायौ ॥
कैधौं डिंभ कवी परवानी। सरसें वर उच्चारहु बानी ॥
छं० ॥ ४९० ॥
ते चवि आइ चंद पहि ठट्ठै। मिलतें हेत प्रीति रस बट्ठै ॥
हुअ आनंद चंद पहि आए। ज्यौं सक्कर पय भूषें पाए ॥
॥ छं० ॥ ४९१ ॥

कवि और डिंबियों का भेद।

भुजंगी ॥ किते दंडिया डंबरी भेष धारी। सु कब्बी कुकब्बी प्रकारं विचारी ॥
सुने भट्ट मेंजं ह च्यार प्रकारी। किधौं ब्रह्म मुनि ब्रत वर ब्रह्म विचारी ॥
किधौं ठग्ग कै ठोठ कै हनगारी। .... ॥ छं० ॥ ४९२ ॥
कहै राइ पंगं सुनौ कव्वि सव्वी। परष्यौ सु पतं कुपतं गुनव्वी ॥
छं० ॥ ४९३ ॥
किते भट्ट जाने दुरे ते कबिंदं। तिनं पास आडंबरं नथ्थ इंदं।
कला ग्यान अग न्यान विग्यान जानं। अरथ्थं सुरथ्थं कुरथ्थं प्रमानं ॥
छं० ॥ ४९४ ॥

* दसोंधी एक जाति होती है जो कि आज कल जसोंधी भी कहलाती है, दरबार के नाजि या कड़खे कहने वाले जोगबर अबतक इस वंश में होते हैं।

कठोरं कुबोलं पंढते तिरष्षं। अदिष्टं अदानं प्रमानौ निरष्षं॥
जिते बाल बानौ कवीचंद आनं। तिते पंग दिष्टं अदानं प्रमानं॥
छं०॥ ४६५॥

अहित्तं सुहित्तं सु वित्तं विचारौ। रसं नौ छ भाषा स साषा उधारौ॥
परंमान ग्यानौ विग्यनौ विरूरं। लषौ वुद्धि विद्या तौ आनौ हजूरं॥
छं०॥ ४६६॥

दसोंधियों का कवि के पास आना और कविचन्द का कवित्त पढ़ना।

चौपाई॥ ति कवि आय कवि पहि संपत्ते। गुरु व्याकंन कहै मन मत्ते॥
बकि प्रवाह गंगा सरसत्ती। सुर नर श्रवन मंडि रहै बत्ती॥
छं०॥ ४६७॥

मुष [1]परसंत परसपर रत्ते। मुन उच्चार कन्यौ सरसत्ते॥
गुन उच्चार चार मन कीनौ। जनु भुष्षै पय सक्कर दीनौ॥
छं०॥ ४६८॥

सब रूपक कहि कहि कवि जित्ते। नव रस भास सु पुच्छहि तत्ते॥
गजपति गरूअ ग्रेह गुन गंजहु। श्रीधर बरनि पंग मन रंजहु॥
छं०॥ ४६६॥

श्रीवर श्रीकर श्रीपति सुंदर। सुमिरन कियौ तथ्य कविचंदर॥
बीठल विमल बयन बसुधा बन। द्रुपद पुत्ति चिरु चीर बढ़ावन॥
छं०॥ ५००॥

ग्राह गहत गंधर्व गयंदह। रष्षहु मान सुभान नरिंदह॥
तुम्ह चिंतत सच्चु सब मित्तिय। विष दातव्य विषा लह्यौ चिय॥
छं०॥ ५०१॥

जब अर्जुन कोवंड धरिय कर। तब [2]संघरिय सकल योहिन भर॥
जब अर्जुन मन मोह उपायौ। तब भारथ मुष मभ्भ दिषायौ॥
छं०॥ ५०२॥

(१) ए. कृ. को.-परसंत। (२) ए. संधिय।

है हरता करता अविनासी। प्रकृति पुरुष भारथ श्री दासी॥
सा भारति मुष मझ्झ प्रसन्नौ। नव न बरस साटक भाष छ भन्नी॥
छं० ॥ ५०३ ॥

साटक॥ अंबोरुह मानंद लोइ लरिसौ, दारिम्म लो बीयलो॥
[1]लोयन्न चल चाल, चाल,य वरं, बिंबाइ कीयौ गहौ॥
के सीरी कै साइ बैनिय रसौ, चीकोमि कौ मागवी॥
इंदो मध्य सु इंद मानवि [2]हितो, ए रस्स भासा छठौ॥
छं० ॥ ५०४ ॥

दसोंधी का प्रसन्न होकर कवि को स्वर्ण आसन देना।

चौपाई॥ कवि पिष्यत कवि को मन रत्तौ। न्याय नयर कवंज संपत्तौ॥
कवि एकह अंगी क्रित कीनौ। हेम सिंघासन आसन दीनौ॥
छं० ॥ ५०५ ॥

दसोंधी का कवि की कुशल और उसके दिल्ली से आने का कारण पूछना।

दूहा॥ क्यौ मुक्यौ प्रथिराज बर। क्यों ढिल्ली पुर छेह॥
जंपि कहौ कविचंद तत। तुम कुसलत्तन ग्रेह॥छं०॥५०६॥

कवि का उत्तर देना कि भिन्न भिन्न राज्य दरबारों में विचरना कवियों का काम ही है।

गाथा॥ दीसै विविह चरियं। जानिज्जै सज्जन दुज्जनं॥
[3]अप्पानं चक लिज्जै। हिंडिज्जै तेन पुहवीए॥छं०॥५०७॥

दूहा॥ जिन मानो चहुआन भौ। सुलाइ जालई भट्ट॥
देषि ग्रब्ब सुरपति गरै। पंग दरसि सो थट्ट॥छं०॥५०८॥
जगत समुद्दयकार जल। षग्ग सीस चहुआन॥
इह अचिज्ज बर भट्ट सुनि। तुछ निठुर संमान॥छं०॥५०९॥

(१) ए.-को-लोदन्न, लोहने। (२) मो. हनौ। (३) ए.-अप्पाजं तनक लिउजै।

दसोंधी का कहना कि यदि तुम बरदाई हो तो यहीं से राजा के दरबार का हाल कहो।

चौपाई ॥ गजपति गरुअ ग्रेह मन रंजइ, । किन गुन पंग राय मन गंजइ,॥
जो सरसै बर है तुम रंचौ । [1]तौ अदिष्ट बरनौ कवि संचौ ॥
छं० ॥ ५१० ॥

मुरिल्ल ॥ तब सो देषै जान [2]प्रवीनं । भट्ट नयन सोहै रसलीनं ॥
दान षग्ग सरबंगै सूरौ । अनीवानि [3]अब्बंगै पूरौ ॥छं०॥५११॥

दूहा ॥ दीन वचन लहु करि कहौ । कविन करौ मन मंद ॥
जै सरसै बर कछु हुए । तौ बरनौ जयचंद ॥ छं० ॥ ५१२ ॥

अरिल्ल ॥ अहौ चंद बरदाइ कहावइ, । कनवज्जइ न्रप देषन आवइ, ॥
जौ सरसति [4]आनौ बर चाव । तौ अदिष्ट बरनौ नृप भाव ॥
छं० ॥ ५१३ ॥

कवि का कहना कि अच्छा सुनों मैं सब हाल आशु छन्द प्रबंध में कहता हूं।

दूहा ॥ जौ बरनौं जैचंद कौ । तौ सरसें बर मोहि ॥
छंद प्रबंध कवित्त जति । कहि समझाउं तोहि ॥ छं० ॥ ५१४ ॥

दसोंधी का कहना कि यदि आप अदिष्ट प्रबन्ध कहते हैं तो यह कठिन बात है।

कहहि पंग बुधिजन कवित । सुनह चंद बरदाइ ॥
दिठि दिष्यौ बरनै सकल । अदिठ न बरन्यौ जाइ ॥ छं० ॥ ५१५ ॥

कविचन्द का जैचन्द के दरबार का वर्णन करना।

पद्धरी ॥ सभ साज पंग बैठौ नरिंद । गुनगहर सकल साजै सु इंद ॥
सिंघासन आसन सुध साज । मानिक्क जटित बहु, मोल धाज ॥
छं० ॥ ५१६ ॥

---

(१) मो.-तो अदिष्ट बरनहु नृप संचौ । (२) ए. प्रवीनं ।
(३) मो.-सरबंगै । (४) ए. कृ. को.-आनू ।

वासन्न सेत मधि पीति सोहि। अनंत ताम कविराज मोहि ॥
मंड्यौ किरीट बरहव सीस। उत्तंग मेर हर सिषर दीस ॥
छं० ॥ ५१७ ॥

बैठो सु भूप मुष दिसि कुबेर। रजि रुद्र थान रचि जानि मेर ॥
दाहिनै बाम भर भर बयट्ठ। सूरत्त दत्त गुन सकल दिठ्ठ ॥
छं० ॥ ५१८ ॥

सिर सेत छत्र मंड्यौ सु भूप। बहु देस रिद्धि बहु तास रूप ॥
सनमुष्ष बैठि बर विप्र भट्ट। इह चव सु विद्य कलताम घट्टि ॥
छं० ॥ ५१९ ॥

तिन पच्छ बैठि गायन सु गेव। किन्नरह कंठ रस सकल भेव ॥
हिमदंड छत्र किय सेत पान। ठट्टौ सु पिट्ठ विस भूप जानि ॥
छं० ॥ ५२० ॥

दुहु पिट्ठ साजि बर चँवर ढार। रजि रूप आनि अश्वनि कुमार ॥
ठट्ठौ सु पत्नधर दच्छि थान। प्रतिबिंब रूप दुअ इंद जानि ॥
छं० ॥ ५२१ ॥

बैठे सु पिट्ठवर पासवान। बनि रूप रेह जित राज जान ॥
रत्तो सु कीर मुष अग्र जान। भुज्जंत पक्क फल करक पान ॥
छं० ॥ ५२२ ॥

थरि करह बाज ठट्ठौ समुष्ष। देयंत ताम तामो सुरुष्ष ॥
इहि विद्धि बयट्ठौ पंगराज। आसनह जीति जोगिंद साज ॥
छं० ॥ ५२३ ॥

जैचन्द का वर्णन।

साटक ॥ आ सीसं चमरायते सित छतं, षं षिन्न इंदोलिता ॥
बाला अर्क समान तेज तपनं, कोटी तयं मौलिता ॥
सस्त्रे सस्त्र समस्त षिचि दछियं, सिंधु प्रयाते षलं ॥
कंठे हार रुलंति आनक समं, प्रथिराज हालाहलं ॥
छं० ॥ ५२४ ॥

दरबार में प्रस्तुत एक सुग्गे का वर्णन ।

दूहा ॥ नील चंच अरु रत्त तन । कर करकटी भषंत ॥
　　जोइ जोइ अष्षै राज मुष । सोइ सोइ कीर कहंत ॥छं०॥ ५२५ ॥

कवित्त ॥ नील चंच तन अरुन । पानि आरोहि राज सुक ॥
　　रुचि संपार परंम । चरन पिंगल सुभंत जुक ॥
　　कंठ मुकत गुन रतन । जटित ओपत आभूषन ॥
　　[1]रूर वारु कर नषनि । दृष्टि भष्षित तन पूषन ॥
　　जिम जिम उचार अष्षत न्नपति । तिम तिम कीर करंत सुर ॥
　　भूलंत सुनत क्रत बेद बर । रस रसाल बानी सु फुर ॥
　　　　　　　　　　छं० ॥ ५२६ ॥

दूहा ॥ सहस छच बज्जन बहल । बहुल बंस विधि नंद ॥
　　एक सहस संषहधुनी । महल जानि जयचंद ॥ छं० ॥ ५२७ ॥

दसोंधी का कहना कि सब सरदारों के नाम गाम कहो ।

दूहा ॥ तब तिन कवियन उच्चरिय । अहो चंद बरदाइ ॥
　　[2]पृथुक पृथुक नर नाम सभ । बरनिरु हमहि सुनाइ ॥
　　　　　　　　　　छं० ॥ ५२८ ॥

कवि चन्द का सब दरबारियों का नाम गाम और उनकी बैठक वर्णन करना ।

पद्धरी ॥ राजिय सुसभा राजै सपंग । बिहु बांह पंति रंगह सुरंग ॥
　　सोभत सुरेस सुर समय सार । हनि हतअसुर दरबार भार ॥
　　　　　　　　　　छं० ॥ ५२९ ॥

　　दष्षिनिय अंग रयसल कमंध । तिन अंग बीरचंदह सुबंध ॥
　　अहवह भांन जुगरान बीर । कासह नरिंद रविबंस धीर ॥
　　　　　　　　　　छं० ॥ ५३० ॥

(१) ए.-रूर चारु कर नषनि, कृ.-रुचिरु रनि षनि, मो. उरट वारु कर नषनि ।
(२) ए. कृ. को.-"पृथुक नाम नर नाम सब" ।

बरसिंघ राव बडघल सूर। [1]कठिया राय केहरि करूर॥
परताप बीर तेजंप नाथ। रा राम रैन राहप्प पाथ॥
छं० ॥ ५३१ ॥

केलिया बंध कट्ठी सु आस। करनाट भर काहप्प तास॥
सारंग भट्ट सुग्रीव भाव। मोरी मुवंद परमार राव॥
छं० ॥ ५३२ ॥

बीरंमराव नर पाल बीर। नरसिंघ कन्ह सम भुज गंभीर॥
महदेव समह हरंसिघ बंक। मेहान इंद सद सार कंक॥
छं० ॥ ५३३ ॥

पूरन्नराव चालुक्क देव। गोयंदराव परमार भेव॥
हम्मीर धीर परताप तत्त। परबत पहार पाहार सत्त॥
छं० ॥ ५३४ ॥

सचसाल अवधि पाटन नरिंद। साषुला हीर भुज फर कविंद॥
हव्वू लंगूर रनबीर बाह। जसवंत उट्ठ द्रुग सबर माह॥
छं० ॥ ५३५ ॥

बर बीरभद्र बघघेल मेर। नृप क्रष्णराय सद्दन अरेर॥
श्री मकुँदराइ बीराधिधार। जै सिंघ सूर [2]आकार भार॥
छं० ॥ ५३६ ॥

भुज बाम बंक सेनी सधीर। आघात पात वज्जंग बीर॥
रठवरह सूर रावत्त राज। रनबीर धीर आवद्ध श्राज॥
छं० ॥ ५३७ ॥

न्रप चंद्रसेन पांवार राव। न्रप भीमदेव आजान दाव॥
नरसिंघ सूर चालुक्क वीर। बर रुद्रसिंघ कंठी सधीर॥
छं० ॥ ५३८ ॥

श्री रामसेन राजेस राज। सांषुला देव दासह समाज॥
रा रामचंद्र रानिंग राव। हम्मीर सेन चतुरंग चाव॥
छं० ॥ ५३९ ॥

(१) ए. कृ. को.-कठिसा। (२) कृ. को.-आकार, ए.-साकार।

अट्टह सुदेव सारंग सूर । बीरंम सवन घाती समूर ॥
जैसिंघ कमध आजानि पांनि । पंमार भीम रण सिंघ थान ॥
छं० ॥ ५४० ॥

अरजुन्नदेव निमकुल नरेस । आसोक राइ साहन सुरेस ॥
चंदेल बीरभद्दह सबीर । सहदेव बंक भुज धज गँभीर ॥
छं० ॥ ५४१ ॥

केहरी ब्रह्म चालुक्क बीर । हरिचंद तेज चहुआन नीर ॥
हरसिंघ राइ रजि पास बान । निसुरत्ति बीर ममरेजषान ॥
छं० ॥ ५४२ ॥

हुतमीस मीर बहबल मसंद । [1]आरासषान पीरोज बंद ॥
कंमोदषान जहान भार । जुग बलिय अमिय अल्लिय करार ॥
छं० ॥ ५४३ ॥

महमुंद षान केलिय गंभीर । अबदुल्ल रोम राहिम्म मीर ॥
सल्लेम साहि [2]हुसमिल्ल षान । [3]आरोज साहि असवद्द पान ॥
छं० ॥ ५४४ ॥

ढारंत चंवर जुग पच्छ भूप । हरि बीर रास सम वय सरूप ॥
ठट्ठौ सु दषिन कर मंचि राव । यट्टे मुकुंद पहु वाम थाव ॥
छं० ॥ ५४५ ॥

शिव राग होत हरि गुन [4]मिलंत । उर सुनत सत्त पत्तह [5]पिलंत ॥
श्रीकंठ सु गुर कवि कमल भट्ट । जुग ओर समुष कमधज्ज पट्ट ॥
छं० ॥ ५४६ ॥

जुग पुरुष आय बिनतिय समान । पट्ठए नाथ तिरहुत्त थाम ॥

दसोंधी का दरबार में जाकर कवि की शिफारिस करना ।

कवि गमत बहुर फिरि पंग तीर । सुनि गुन गंभीर कमधज्ज बीर ॥
छं० ॥ ५४७ ॥

---

(१) ए.-आरात । (२) ए. कृ. का.-हुमभीर । (३) मो.-आरज्ज ।
(४) कृ. ए.-सिलंत । (५) मो.-लिषंत ।

कवि कमल विमल गुन अहरेस। अष्पियै अंषि निज बर नरेस॥
छं० ॥ ५४८ ॥

दूहा ॥ * मंगल बुध गुरु सुक्र सवि। सकल सूर उड़दिट्ठ ॥
आत पत्र धुअ जिम तपै। सुभि जयचंद बयट्ठ ॥छं० ॥ ५४९॥

नव रस सुनि हिठ अदिठरस। भाषा जंपि न्नपाल ॥
सहह पत्त कुपत्त लिषि। गुन दरसी चयकाल ॥ छं० ॥ ५५० ॥

कवि का एक कलश लिए हुई स्त्री को देख कर उसकी छवि वर्णन करना।

जान्यौ बर बरदाइयन। बर संचौ कविचंद ॥
कंद्रप कितो कि और बर। लेत पीठ जैचंद ॥ छं० ॥ ५५१ ॥

चौपाई ॥ दस दिस कवि संमुहौ उहाई। घट धरि बाल [1]कुरित्तन आई॥
धरत सुधरि छाईं मुष [2]छाइया तिहि कविराज सु ओपम [2]पाइय॥
छं० ॥५५२॥

दूहा ॥ बर उपजै विपरीति गति। रहत सहायक इंद ॥
तत्त विरम्मि निवेस किय। [3]चित्तहि तत्तहि चंद ॥छं०॥५५३॥

कवित्त ॥ तहाँ सुदिष्षि कविचंद। चंद दह दह संजुत परि ॥
पूरानन आनंद। जुद्ध मकरंद सुद्ध जुरि ॥
मृगा मीन गुन गनै। गुनह लज्जीत छिपाकर ॥
तहाँ अपुब उप्पनौ। हीर चक्रवाक प्रभाकर ॥
सज्जीव मदन बेली विहसि। बरकमोद सामोद घटि॥
संजोग भोग सम जोग गति। रति प्रमान मनमथ अनटि ॥
छं० ॥ ५५४ ॥

---

*यह दोहा मो. प्रति में इस छन्द पद्धरी के पहिले और दोहा छन्द ५१७ के बाद है।

(१) ए. कृ. को.-कुरित्तिन। (२) ए. कृ. को.-छाई पाई।

(३) ए. कृ. चित्तरि ततरि चंद।

कवि की विद्वत्ता का वर्णन।

दूहा ॥ भाषा षट नव रस पढ़त। बर पुच्छै कविराज ॥
संप्रति पंग नरिंद कै। बर दरबार बिराज ॥ छं० ॥ ५५५ ॥
भाष परिछा भाष छह। दस रस दुम्भर भाग ॥
वित्त कवित्त जु छंद लौं। षग सम पिंगल नाग ॥छं०५५६ ॥

कवित्त ॥ भेद भाव गुन कला। सुनत आचिज कविंद घन ॥
नृपति बरन अनदिट्ठ। सभा सद विवह बचन घन ॥
छंद कवित पारस प्रचार। मुरधार नंदि सुर ॥
रस रसाल बानी [1]पुनंत। गय भज्जि उरह जुर ॥
दीरघ दरस्स कविचंद बर। सुनि नरिंद कनवज्ज पति ॥
[2]अनि गुनिय कला गुन सष्षवै। सरसें बर धरि सरस मति ॥
छं० ॥ ५५७ ॥

कविचन्द का दरबार में बुलाया जाना।

दूहा ॥ प्रभु बोलिय कवि मझ्झ ग्रह। दरसि पंग असथान ॥
मनुं भान चरन नव ग्रस परसि। नक बैठो सुरयान ॥
छं० ॥ ५५८ ॥

राजा जैचन्द का ओज साज वर्णन।

कवित्त ॥ जिम सरद ससि ब्यंब। तिम सु [3]मछि छच विरज्जिय ॥
जिम सु भ्रम्म पव्वय। पविच [4]छीरनिधि जिम छज्जिय ॥
जग मंडिन जिम मुत्ति। कित्ति तानिय वितान तिम ॥
जिन सु सत्त [5]मय पुंज। सेत सुरतरु फुल्लिय तिम ॥
सित सहस पच विगसिय जिमसु। दुरद मत्त अलि सुम्मयौ ॥
अति तुंग सुधा रस राजग्रह। पिषत कव्वि द्रग भुल्लयौ ॥
छं० ॥ ५५९ ॥

---

(१) ए. कृ. को. सुनत। (२) ए. कृ.-अति।
(३) ए. कृ. को.-माछै। (४) ए. कृ. को.-छीर निधि। (५) मो.-गय

हेजम का अलकाब बोलना और कविचन्द का आशीर्वाद देना

दूहा ॥ हकान्यौ हेजम्म कवि । निकट बोलि नृप ईस ॥
सरसें बर संभारि करि । कवि दीनी आसीस ॥ छं० ॥ ५६० ॥

कवि का आशीर्वाद देना ।

कवित्त ॥ जिम ग्रह पिति ग्रहपंति । जिम सु उडपति तारायन ॥
मधि नाइक जिम लाल । जिम सु सुरपत नाराइन ॥
जिम विषयन संग मयन । सकल गुण संग सील जिम ॥
बरन मध्य जिम उगति । चित्त इन्द्रिय आलह तिम ॥
अनि अनि नरेस भर भीर सर । दारिम न्हप मंदिर मरिय ॥
दिख पंग पानि उम्भित करिय । सुकविचन्द आसिष्प दिय ॥
छं० ॥५६१॥

बचनिका ॥ साहि भार साहि बिभ्भार । बलिय साहि कंध कुद्दार ॥
सबर साहि मान मरदान । निबर साहि मान भूमि बरदान ॥
अदतार राइ अंकुस्स सीस । दातार राइ सरसोभ दीस ॥
सुजति राइ बाहन बरीस । विजैपाल सूय कनवज्ज ईस ॥

जैचंद की दराबरी बैटक वर्णन ।

कवित्त ॥ मंगल बुध गुरू सोम । सुक्र सनि सोभ पास तप ॥
इत तप [1]धुतम नरिंद । पंग सोडीज मंडि जप ॥
सकल सूर बर सुभट । सुबर मंडिलो बिराजै ॥
द्रुग्ग देषि कविचंद । [2]सुभत सुरराज सुभाजै ॥
क्रंम बेन सम उच्चन्यौ । विरह तुंग द्रिगपाल तप ॥
क्रम अट्ठ अट्ठ पिटें सु बर । मध्य बीर मंडलिय अप ॥ छं० ॥५६२॥

जैचन्द की सभा की सजावट का वर्णन ।

भुजंगी॥ सभा सोभियं बीर विजपाल नंदं। मनों मंडियं थान बिय इंद दंदं ॥
बरं थान थानं दुलीचै बिराजै । तिनं देषि रंगं धनंपति लाजै ॥
छं० ॥ ५६३ ॥

(१) ए. कृ. को.-धुतम । (२) ए. कृ. को.-सुदित सुरनाथ सु भाजै ।

गुंथे रत्त पट्टं सुई डोरि हेमं। मनो भूमि रविक्रांन मिल चलहि नेमं॥
जरे रत्त नीलं नगं पट्ट साही। मनो आवरे बंधु धर नील माही॥
छं० ॥५६४॥

ढरैं चोर सेतं झपै मोज ताही। तिनंकी उपम्मा कवीचंद भाही॥
मनं आरुही भान लगि खग्गि आजं। डरं जान उग्गै रमै रथ्थ साजं॥
छं० ५६५॥

उठै छत्र पंगं उपम्मा समग्गं। मनो नीग्रहं माम तजि सीस लग्गं॥
कवीचंद राइं बरदाय बीरं। कला काम कल कोटि दिष्षी सरीरं॥
छं० ५६६॥

राजा जैचन्द को प्रसन्न देख कर सब दरबारियों का कवि की तारीफ करना।

दूहा॥ पंग पयंप्यौ कवि कमल। अमर सु आदर कीन॥
पुब नरेस परसंन दिट्ठि। सब जंपयौ प्रवीन॥ छं०॥ ५६७॥
चंद अग्ग प्रथिराज बर। हन्नौ फुनि फुनि एष॥
जिम जिम न्रप पुच्छै बिरह। तिम तिम बढ़ै बिसेष॥छं०॥५६८॥

पुनः जैचन्द का बल प्रताप और पराक्रम वर्णन

कवित्त॥ कोरि ओर दल प्रबल। अचल चल सुथिर थरथ्थर॥
नाग सु फनि फन सकुचि। कच्छ पुप्परिय परप्पर॥
चढ़त भान छावंत रेन। [1]गयनेव दसं दिस॥
दीपक ज्यौ बसि बात। आत पचं [2]आधारिस॥
कमधज्जराइ बिजपाल सुअ। तो बर भूपति हय किसौ॥
बरदाइ चंद हेदेवि बर। जिसौ होइ अष्षै तिसौ॥ छं०॥५६९॥

इस समय की पूर्व कथा का संक्षेप उपसंहार।

प्रथम परसि संदेह। भयौ आनंद सबै जन॥
अरु गंगा जल न्हाय। पाप परहर्‍यौ ततच्छन॥

(१) ए. कृ. को. गयनेन दसंद्दिसय। (२) ए. कृ. को.-आधारिय।

गयौ चदं दीवान। अनी बानी सु फुरंतौ॥
सुफल हथ्थ सुष विरद। राय भिंथ्यौ सु तुरंतौ॥
श्रुत सुनिय विरद पुछ्छिय तुरत। संष पयंपहु भट्ट सुनि॥
जिम जिम अषार ढिल्लिय न्त्रपति। तिम तिम जंपहि पुनह पुन॥
छं० ॥ ५७० ॥

भुजंगी॥ जहां आसनैं सूर ठट्टै सनाहं। जिनै जीति छितिराइ किय एक राहं॥
धरा भम्म दिगपाल धर धरनि षंडं। धरै छत्र सिर सोभ दुति कनक [1]डंडं॥
छं० ॥ ५७१ ॥

जिनै साजतें सिंधु गाहैं सु षंगा। उनै तिमिर तजि तेज भाजै कुरंगा॥
जिनें हेम परवत्त सें सव्व ढाहे। [2]जिनें एक दिन अट्ठ सुरतान साहे॥
छं० ॥ ५७२ ॥

असं जंपियं [3]सच्च सो चंद चंडं। जिनै थप्पियं जाय तिरहूत पिंडं॥
जिनै [4]दष्षिनी देस अप्पै विषारै। जिनैं उतऱ्यौ सेतबंधं पहारै॥
छं० ॥ ५७३ ॥

जिनैं करन डाहाल दुअ बान बेध्यौ। जिनैं सिद्ध चालुक्क कय बार षेध्यौ॥
तिनं दिन्न जुद्धं भिरै भूमि रुंडं। बरं तोरि तिल्लंग गोआल कंडं॥
छं० ॥ ५७४ ॥

जिनै छिंडियौ बंधि इक गुंड जीरा। ग्रहे लिइ वैरागरें सब हीरा॥
जिने गज्जने सूर साहाब साही। तिने मोकल्यौ सेव निसूरत्ति भाहीं॥
छं० ॥ ५७५ ॥

बरं भुल्लि भष्षी षनं जोब रोरै। तहां रोस कै सोस दरिया हिलोरै॥
जिनैं बंधि षुरसान किय मीर बंदा। इसौ [5]रट्ठवर राय विजपाल नंदा
छं० ॥ ५७६ ॥

जहां बंस छत्तीस आवैं हकारे। परं एक चहुआन षुमान टारै॥
छं० ॥ ५७७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-ढंड। [२] मो.-जिते। [३] ए.. कृ. को.-सच्च।
[४] ए. कृ. को.-दछिन। [५] मो.-रिटवर।

पृथ्वीराज का नाम सुनतेही जैचन्द का जल उठना।

दूहा ॥ सुनत न्रपति रिपु कौ बयन। तन मन नयन सु रत्त ॥
दिय दरिद्र मंगन घरहु। को मेटै विधिपत्त ॥ छं० ॥ ५७८ ॥
रतन बुंद बरषै न्रपति। हय गय हेम सु हद्द ॥
लग्गि न बुंद सु मग्ग तन। सिर पर छत्र दरिद्द ॥ छं० ॥ ५७९ ॥

पुनः जैचन्द की उक्ति कि हे*बरद्द दुबला क्यों है ?।

मुह दरिद्र अरु तुच्छ तन। जंगलराव सु हद्द ॥
बन उजार पसु तन चरन। क्यों दूबरौ बरद्द ॥ छं० ॥ ५८० ॥

कवि का उत्तर देना कि पृथ्वीराज के शत्रुओं ने सब घास उजार दी इसी से ऐसा हूं।

कवित्त ॥ चढ़ि तुरंग चहुआन। आन फेरीत परद्धर ॥
तास जुद्ध मंडयौ। जास जानयौ सबर बर ॥
केइक तकि गहि पात। केइ गहि डार मूर तरु ॥
केइत दंत तुछ चिन्न। गए दस दिसनि भाजि [१]डर ॥
भुअ लोकत दिन अचिरिज भयौ। मान सबर बर मरदिया ॥
प्रथिराज षलन षद्धौ जु षर। सु यों दुब्बरौ बरद्दिया ॥
छं० ॥ ५८१ ॥

पुनः जैचन्द का कहना कि और सब पशु तो और और कारणों से दुबले होते हैं पर बैल को केवल जुतने का दुःख होता है। फिर तूं क्यों दुबला है।

हंस न्याय दुब्बरौ। मुत्ति लब्भै न चुनंतह ॥
सिंघ न्याय दुब्बरौ। करी चंपै न कंठ कह ॥

---

(१) ए. कृ. को. कर।

* "बरद्द" शब्द के दो अर्थ होते है एक बरदाई दूसरा बैल। अब भी बैसवाड़े में बैल को बरधा, बरध या बधिया इत्यादि कहते हैं।

मग्ग न्हाय दुब्बरौ। नाद बंधियै सु बंधन ॥
छैल छक्क दुब्बरौ। चिया दुब्बरौ मीत मन ॥
आसाढ़ गाढ़ बंधन धुरा। एकहि गहि इ हरद्दिया ॥
जंगर जुरारि उज्जर धर न। क्यों दुब्बरौ बरद्दिया ॥ छं० ॥ ५८२ ॥
पुरै न लग्गौ आरि। भारि लद्दौ न पिट्ठ पर ॥
गज्जवार गंमार। गहौ गट्ठौ न नथ्थ कर ॥
भम्यौ न कूप भावरी। कबंहुक सब सेन रत्तौ ॥
पंच धार ललकारि। रथ्थ सथ्था नह जुत्तौ ॥
आसाढ़ मास बरषा समै। कंध न कहौं हरद्दिया ॥
कमधज्ज राव इम उच्चरै। सु क्यौं दुब्बरौ बरद्दिया ॥ छं० ॥५८३॥

पुनः कवि का उपरोक्त युक्ति पर प्रत्युत्तर देना।

फुनि जंपै कविचंद। सुनौ जैचंद राज बर ॥
पुरै आर किम सहै। भार किम सहै पिठ्ठपर ॥
नथ्थ हथ्थ किम सहै। कूप भांवरि किम मंडै ॥
है गै सुर बर सुधर। स्वामि रथ भारथ तंडै ॥
बरषा समान चहुआन कै। अरि उर बरह हरद्दिया ॥
प्रथिराज षलनि षड्डौ सु षर। सुइम दुब्बरौ बरद्दिया ॥ छं० ॥५८४

प्रथम नगर नागौर। बंधि साहाब चरिग तिन ॥
सोभंत भर भीम। सीम सोधीत सकल बन ॥
मेवाती मुगल महीप। सब्ब पचजु षड्डा ॥
ठड्डा कर ढिल्लिया। सरस संमूर न लड्डा ॥
सामंत नाथ हथ्थां सु कहि। लरिकैं मान मरद्दिया ॥
प्रथिराज षलन षड्डौ सु षर। यौं दुब्बरौ बरद्दिया ॥ छं०॥५८५ ॥

कवि के वचन सुन कर जैचंद का अत्यंत कुपित होना।

सुनत पंग कबि बयन। नयन अरुत बदन रत्त वर ॥
भुवन बंक रद अधर। चंपि उर उससि मास झर ॥
कोप कलंमलि तेज। सुनत विक्रम अरि क्रम्मह ॥
सगुन विचार कमंध। दिष्षि दिस चंद सु पिम्मह ॥

आदर सुभट्ट राजिंद किय । अंग ए डाइ बिसतारि कर ॥
मन मिलत मोहि संभरि धनिय । कहौ बत्त मुष विरद बर ॥
छं० ॥ ५८६ ॥

कवि का कहना कि धन्य है महाराज आप को।आपने मुझे वरद पद दिया। वरद की महिमा संसार में जाहिर है ।

जिहि बरद चढ़ि कै । गंग सिर धरिय गवरि हर ॥
सहस मुष्ष संपेषि । हार किन्नौ भुजंग गर ॥
तिहि भुजंग फन और । झोलि रष्यौ वसुमत्तिय ॥
वसुमत्ती उप्पर । मेरगिरि सिंधु सपत्तिय ॥
ब्रह्मंड मंड मंडिय सकल । धवल कंध कत्ता पुरस ॥
गरुअत्त बिरद पहुपंग दिय । क्रपा करिय भट्टह सरिस ॥
छं० ॥ ५८७ ॥

जैचन्द का कहना कि मुझे पृथ्वीराज किस तरह मिले सो बतलाओ ।

दूहा ॥ आदर किय न्रप तास कौं । कह्यौ चंद कवि आउ ॥
[1]मिले मोहि ढिल्लिय धनी । सु वत कहिग स मझाउ ॥ छं० ॥५८८॥

राजा जैचन्द का कहना कि पृथ्वीराज और हम सगे हैं और तुम जानते हो कि सब राजा मेरी सेवा करते हैं ।

उनि मातुल मुहि तात कहिं । नित नित प्रेम वढंत ॥
जिम जिम सेव स अहरिय । तिम तिम दान चढंत ॥ छं० ॥ ५८९॥
सोमेसं पानिग्रहनं । अब ढिल्ली पुर कौन ॥
हम गुरजन सब बस करि । बहु धन मंग सु लीन ॥ छं० ॥ ५९० ॥
कै कामान सह्यो सु दह । सुन्यौ न विजय नरिंद ॥
सब सेवहि पहु हमहि न्रप । सो तुम सुनि कविचंद ॥छं०॥५९१॥

[१] मो.-मिले न मुहि ।

कविचन्द का कहना कि हां जानता हूं जब आप दक्षिण देश को दिग्विजय करने गए थे तब पृथ्वीराज ने आपके राज्य की रक्षा की थी।

पद्धरी ॥ अवसर पसाउ सुनि पंगराव। तुम तात मात द्रिगविजय चाव ॥
तुम दिवस लग्गि दच्छिनह देस। तब लग्ग मेछ [1]इथ्यह प्रवेस ॥
छं० ॥ ५९२ ॥

सामंत नाथ तपि तोन बंधि। संहर्यौ साहि सब सेन संधि ॥
दामिन्न रूप छत्ती कुलाह। सामंत सूर दुहु विधि दुबाह ॥
छं० ॥ ५९३ ॥

अन पुच्छि करै ग्रिह राज काज। कुल छच पंड चहुआन लाज ॥
[2]सिंगिनि समथ्थ सर सबद बेध। जिम करहु राव उन मिलन षेध॥
छं० ॥ ५९४ ॥

हिंदवान जेन लग्गीय धाय। उहि छिच कौन द्रिग विजै राइ ॥
मानिकराव दुअ बंस सुद्ध। रघुवंसराव जिमनि विन दुद्ध ॥
छं० ॥ ५९५ ॥

मुक्कयौ तोहि दिष्षनि बरीति। राज सु जेम मंद्यौ प्रवीति ॥
.... । ... . ॥ छं० ॥ ५९६ ॥

जेचन्द का कहना कि यह कबकी बात है आह यह उलहना तो आज मुझे बहुत खटका।

कवित्त ॥ कहै पंग सुनि चंद। येह वितक किम वित्तौ ॥
किम गोरी सुरतान। भार भर थंभर जित्तौ ॥
कौंन समै इह बत्त। घत्त षेली किम गोरी ॥
यादिन ही मुहि परम। परी बत्ता सब भोरी ॥
कहि कहि सु चंद मम ढील करि। राज पयंपत पुनह पुन ॥
[3]तब कही चंद वचनह विवर। एह कथ्थ संमुख सुनि ॥ छ० ॥५९७॥

(१) ए. कृ. को.-हथ्थह। (२) मो.-संगानि। (३) ए. कृ. को. तब कहा चंद बरदाइ ने।

कवि का उक्त घटना का सविस्तर वर्णन करना।

संवत तीस त्रिश्रार। विजय मंड्यौ सुपंग पह॥
जीति देस सब अवनि। लीन करमध्य हिंदुसह॥
दिसि दच्छिन संपत्त। कोपि गोरी सहाब तब॥
रचिय बुद्धि बर अप्प। बोलि उमराव मीर सब॥
तत्तार षान षुरसान षां। षां रुस्तम [1]तालन गनिय॥
जेहान मीर मारूफ षां। बोलि मंत मंत्रह मनिय॥ छं० ॥ ५९८॥

शहाबुद्दीन का कन्नौज पर चढ़ाई करने का मंत्र करना।

गुझ्झ महल साहाब। दीन सुरतान सपत्तौ॥
मंडि मंत एकंत। बोलि उमरावन तत्तौ॥
[2]दुह काफर बरजोर। जीति अवनीय अप्प किय॥
तेज अनंत मति अनंत। सेन सज्जै भर बंकिय॥
आए सु साज कंगुर करषि। करन सेव को देन कर॥
बर जोर हिंदु सो दीन पहु। घटै न रंचि सु बुद्ध [4]नर॥
छं० ॥ ५९९॥

मंत्रियों का कहना कि दल पंगुरा बड़ा जबरदस्त है।

कहिय षान तत्तार। साहि साहाब दीन सुनि॥
विषम जोर बर हिंद। जीति पहुपंग अप्प फुनि॥
मिले सेन सुरतान। [3]मलिक अनेक द्रव्य भर॥
द्रव्य पानि पथ्थार। संकरि सब वस्य अप्प पर॥
गहि कोट सज्जि गज्जन सुबर। आतम चरित [4]अनेक करि॥
आवंत पग साधर सयन। [5]लरि मनमध्य पियान अरि॥
छं० ॥ ६००॥

(१) ए. कृ. को.-तालन यह नाम महोबे के चंदेल राजा परिमाल के दरबारी एक मुसलमान सरदार का भी है।

(२) ए. कृ. को. बर।　　(३) ए. कृ. को. मिलक।

(४) ए. कृ. को.-अनंत।　　(५) ए. कृ. को. जोरि मनमथ पिय थान लरि।